इटली की लोक कथाऐं–4

अनुवाद सुषमा गुप्ता

2022

Series Title : Desh Videsh Ki Lok Kathayen
Book Titke : Italy Ki Lok Kathayen-4 (Folktales of Italy-4)
Cover Page picture: A Canalway in Venice, Italy
Punlished Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: http://sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Map of Italy

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

देश विदेश की लोक कथाऐं

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **550** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

इटली की लोक कथाऐं–4

इटली देश यूरोप महाद्वीप के दक्षिण पश्चिम की तरफ भूमध्य सागर के उत्तरी तट पर स्थित है। पुराने समय में यह एक बहुत ही शक्तिशाली राज्य था। रोमन साम्राज्य अपने समय का एक बहुत ही मशहूर राज्य रहा है। उसकी सभ्यता भी बहुत पुरानी है – करीब **3000** साल पुरानी। इसका रोम शहर **753** बी सी में बसाया हुआ बताया जाता है पर यह इटली की राजधानी **1871** में बना था। इटली में कुछ शहर बहुत मशहूर हैं – रोम, पिसा, फ्लौरैन्स, वेनिस आदि। यहाँ की टाइबर नदी बहुत मशहूर है। यूरोप में लोग केवल लन्दन, पेरिस और रोम शहर ही घूमने जाते हैं।

रोम में रोम का कोलोज़ियम और वैटिकन सिटी में वहाँ का अजायबघर सबसे ज़्यादा देखे जाते हैं। पिसा में पिसा की झुकती हुई मीनार संसार के आदमी द्वारा बनाये गये आठ आश्चर्यों में से एक है। इटली का वेनिस शहर नहरों में बसा हुआ एक शहर[1] है। इस शहर में अधिकतर लोग इधर से उधर केवल नावों से ही आते जाते हैं। यहाँ कोई कार नहीं है कोई सड़क पर चलने वाला यातायात का साधन नहीं है, केवल नावें हैं और नहरें हैं। शायद तुम्हें मालूम नहीं होगा कि असल में वेनिस शहर कोई शहर नहीं है बल्कि **118** द्वीपों को पुलों से जोड़ कर बनाया गया जमीन का एक टुकड़ा है इसलिये ये नहरें भी नहरें नहीं हैं बल्कि समुद्र का पानी है और वह समुद्र का पानी नहर में बहता जैसा लगता है।

इटली का रोम कैसे बसा? कहते हैं कि रोम को बसाने वाला वहाँ का पहला राजा रोमुलस था। रोमुलस और रेमस दो जुड़वाँ भाई थे जो एक मादा भेड़िया का दूध पी कर बड़े हुए थे। दोनों ने मिल कर एक शहर बसाने का विचार किया पर बाद में एक बहस में रोमुलस ने रेमस को मार दिया और उसने खुद राजा बन कर **7** अप्रैल **753** बीसी को रोम की स्थापना की। इटली के रोम शहर में संसार का मशहूर सबसे बड़ा कोलोज़ियम[2] है जहाँ **5000** लोग बैठ सकते हैं। पुराने समय में यहाँ लोगों को सजाऐं दी जाती थीं।

इटली के अन्दर वैटीकन सिटी है जो ईसाई धर्म के कैथोलिक लोगों का घर है पर यह एक अपना अलग ही देश है। वहाँ इसके अपने सिक्के और नोट हैं। इसकी अपनी सेना है। पोप इस देश का राजा है। इसका अजायबघर बहुत मशहूर है। यह संसार का सबसे छोटा देश है क्षेत्र में भी और जनसंख्या में भी – **842** आदमी केवल **4** वर्ग मील के क्षेत्र में बसे हुए।

इटली की बहुत सारी लोक कथाऐं हैं। इटली की सबसे पहली लोक कथाऐं **1353** में लिखी गयी थीं दूसरी **1550** में और तीसरी **1634** में लिखी गयी थी।[3] इतालो कैलवीनो[4] का लोक कथाओं का यह संग्रह जिसमें से हमने ये लोक कथाऐं ली हैं इटैलियन भाषा में **1956** में संकलित कर के प्रकाशित किया गया था। इनका सबसे पहला अंग्रेजी अनुवाद **1962** में छापा गया। उसके बाद सिलविया मल्कही[5] ने इनका अंग्रेजी अनुवाद **1975** में प्रकाशित किया। फिर मार्टिन ने इनका अंग्रेजी अनुवाद **1980** में किया। ये लोक कथाएँ हम मार्टिन की पुस्तक से ले कर अपने हिन्दी भाषा भाषियों के लिये यहाँ हिन्दी भाषा में प्रस्तुत कर रहे हैं। आशा है कि ये लोक कथाऐं तुम लोगों को पसन्द आयेंगी।

---

[1] City of Canals

[2] Colosseum

[3] There are three the earliest, main and very famous books from Italy – Decamerone (1353 – first translation by John Payne published in 1886), Nights of Straparola (1550), Pentamerone (1634),

[4] “Italian Folktales” by Italo Calvino, 1965. This book was translated by George Martin. San Diego, Harcourt Brace Jovanovich, Publishers. 1980. 300 p.

[5] Sylvia Mulcahy

इतालो ने इस पुस्तक में **200** लोक कथाऐं संकलित की हैं। हमने उन दो सौ लोक कथाओं में से एक सौ पच्चीस लोक कथाऐं चुनी हैं। फिर भी क्योंकि वे बहुत सारी लोक कथाऐं हैं इसलिये वे सब पढ़ने की आसानी के लिये एक ही पुस्तक में नहीं दी जा रही हैं। ये सब लोक कथाऐं पुस्तक में लिखी हुए कम से ही यहाँ दी गयीं हैं। इस पुस्तक के पहले संकलन यानी "इटली की लोक कथाऐं–1"[6] में इतालो की पुस्तक की **1–23** नम्बर तक की बीस कथाऐं दी गयी थीं। इसके दूसरे भाग में **24–55** नम्बर तक की बीस कथाऐं दी गयी थीं।[7] इटली की लोक कथाओं के तीसरा संकलन – "इटली की लोक कथाऐं–3" में **56–81** नम्बर तक की ग्यारह लोक कथाऐं प्रकाशित की थीं।[8]

इस संकलन में हम उस पुस्तक की अगली कड़ी "इटली की लोक कथाऐं–4" में हम नम्बर **82–130** नम्बर तक की बाईस कथाऐं दे रहे हैं।

हमें आशा ही नहीं बल्कि पूरा विश्वास है कि यह सब संकलन तुम लोगों को बहुत पसन्द आयेगा और मजेदार लगेंगे।

---

[6] "Italy Ki Lok Kathayen-1" – 18 folktales (No 1-21), by Sushma Gupta in Hindi languge

[7] "Italy Ki Lok Kathayen-2" – 18 folktales (No 22-50), by Sushma Gupta in Hindi language

[8] "Italy Ki Lok Kathayen-3" – 12 folktales (No 51-72), by Sushma Gupta in Hindi language

1 उत्तरी हवा की भेंटें[9]

एक बार जैपोन[10] नाम का एक किसान एक प्रायर[11] के खेत पर रहता था और वह खेत एक पहाड़ी के ऊपर था। वहाँ उत्तरी हवा[12] आ कर अक्सर ही उसकी खेती खराब कर जाया करती थी।

एक दिन उसने निश्चय किया कि मैं इस हवा की खोज में जाऊँगा जो मेरा इतना नुकसान करती है। उसने अपनी पत्नी और अपने बच्चों से विदा कहा और पहाड़ों की तरफ चल दिया।

जब वह जिनव्रीनो किले[13] के पास पहुँचा तो उसने उस किले का दरवाजा खटखटाया। उत्तरी हवा की पत्नी ने खिड़की से झाँका और वहीं से पूछा — "दरवाजे पर कौन है?"

किसान जैपोन बोला — "मैं हूँ जैपोन। क्या आपके पति अन्दर हैं?"

पत्नी बोली — "अभी तो वह बाहर गये हैं, समुद्र के किनारे लगे पेड़ों के बीच में बहने के लिये, पर जल्दी ही वापस आ जायेंगे। तुम अन्दर आ कर उनका इन्तजार कर सकते हो।"

---

[9] The North Wind's Gifts. Tale No 83. A folktale from Mugello area, Italy.

[10] Jeppone is the name of the peasant

[11] A title given to a Monastic Superior in a Monastery

[12] Northern Winds are normally are very cold and spoil the harvests.

[13] Ginevrino Castle where North Wind lived.

जैपोन अन्दर चला गया और बैठ कर उत्तरी हवा का इन्तजार करने लगा। करीब एक घंटे बाद उत्तरी हवा लौटा तो जैपोन बोला — "गुड डे उत्तरी हवा।"

"तुम कौन हो?"

"मैं एक किसान हूँ और मेरा नाम जैपोन है।"

"तुम्हें क्या चाहिये?"

किसान बोला — "आप अच्छी तरह जानते हैं कि आप हर साल मेरी उपज खराब कर देते हैं। और केवल आप ही की वजह से मैं और मेरा परिवार भूखा मरता है।"

उत्तरी हवा ने पूछा — "तो फिर अब तुम मुझसे क्या चाहते हो?"

किसान बोला — "मैं आपके दिये हुए अपने उन सब दुखों के बदले में कुछ चाहता हूँ।"

उत्तरी हवा ने उससे पूछा — "बोलो मैं तुमको क्या दूँ?"

किसान बोला — "यह तो मैं आप पर छोड़ता हूँ कि आप मुझे क्या देना चाहते हैं।"

उत्तरी हवा का दिल जैपोन के पास गया और उसने उससे कहा — "लो यह बक्सा लो और जब भी तुमको भूख लगे तो इसको खोलना और जो खाना पीना चाहो वह माँग लेना। वह तुमको मिल जायेगा। पर इस बक्से के बारे में किसी को बताना नहीं नहीं तो तुम इसे खो दोगे और फिर तुम्हारे पास कुछ भी नहीं बचेगा।"

जैपोन ने उत्तरी हवा को धन्यवाद दिया और चल दिया। रास्ते में वह एक जंगल से गुजर रहा था तो उसे कुछ भूख लग आयी। उसने बक्सा खोला और कहा — "मुझे शराब चाहिये। डबल रोटी चाहिये और डबल रोटी के साथ कुछ खाने को चाहिये।"

उसने इतना कहा ही था कि बक्से में से एक बहुत ही स्वादिष्ट डबल रोटी, एक बोतल शराब और एक सूअर के मॉस का टुकड़ा निकल आया। जैपोन ने जंगल के बीच वह स्वादिष्ट खाना खाया और फिर अपनी यात्रा पर चल दिया।

अपने घर पहुॅचने से पहले ही वह अपनी पत्नी और बच्चों से मिला जो अपने घर से चल कर उससे मिलने घर के बाहर चले आये थे। उन्होंने पूछा — "तुम्हारी यात्रा कैसी रही? सब कुछ ठीक रहा न?"

किसान बोला — "हॉ सब कुछ बहुत ही अच्छा रहा।" कह कर वह उन सबको घर के अन्दर ले गया और कहा — "चलो अब तुम सब लोग मेज पर बैठ जाओ अब हम लोग खाना खायेंगे।" सब तुरन्त ही मेज पर बैठ गये।

मेज पर बैठ कर जैपोन ने बक्से को खोला और उससे कहा — "सबके लिये शराब, डबल रोटी और खाने की कई सारी चीज़ें दो।"

तुरन्त ही सबके लिये बहुत ही स्वादिष्ट खाना मेज पर लग गया। सबने बहुत दिनों बाद इतना स्वदिष्ट खाना खाया था सो खूब पेट भर कर खाया।

जब खाना खत्म हो गया तो जैपोन ने अपनी पत्नी से कहा — "इस बात को प्रायर से मत कहना कि मैं यह बक्सा ले कर आया हूँ नहीं तो यह बक्सा उसको भी चाहियेगा और वह मुझसे इसे ले जायेगा।"

पत्नी बोली — "ओह मैं तो उससे यह बात सपने में भी कहने की नहीं सोचूँगी।"

यात्रा के बाद जब जैपौन घर आ गया तो प्रायर ने जैपोन की पत्नी को बुलाया और उससे पूछा — "तुम्हारा पति कहीं बाहर गया था न? वापस आ गया? कैसी रही उसकी यात्रा?"

पत्नी ने कहा — "ठीक रही।"

प्रायर बोला — "मुझे यह सुन कर खुशी हुई। क्या वह कोई ऐसी चीज़ ले कर आया है जो बताने लायक हो?"

इस तरह वह जैपोन की पत्नी से एक सवाल से दूसरा सवाल निकाल निकाल कर पूछता रहा और इससे पहले कि जैपोन की पत्नी यह जानती कि वह क्या उसको क्या कह रही है उसने उसको उस जादुई बक्से के बारे में सब कुछ बता दिया।

यह सुन कर प्रायर ने जैपोन को तुरन्त ही बुला भेजा और बोला — "जैपोन, मेरे अच्छे दोस्त, मैंने सुना है कि तुम्हारे पास एक बहुत ही अच्छा बक्सा है। क्या मैं उसे देख सकता हूँ?"

जैपोन ने एक बार तो सोचा कि वह उस सारी कहानी को झूठ कह दे पर क्योंकि उसकी पत्नी ने इस बात को उससे कहा था इसलिये वह अब यह नहीं कर सकता था सिवाय इसके कि वह प्रायर को वह बक्सा दिखाता और बताता कि वह कैसे काम करता है।

"हॉ हॉ क्यों नहीं।" वह घर आया और अपना बक्सा प्रायर के पास ले जा कर उसे दिखाया। देखते ही प्रायर बोला — "जैपोन, यह बक्सा तो तुम्हें मुझे देना पड़ेगा। इसे तुम मुझे दे दो।"

जैपोन बोला — "अगर यह बक्सा मैं तुमको दे दूॅगा तो फिर मैं क्या करूॅगा। मैं खाना कहॉ से खाऊॅगा। तुमको तो मालूम है कि मेरी सारी उपज खराब हो गयी है और अब मेरे पास खाने के लिये कुछ भी नहीं है।"

प्रायर बोला — "अगर यह बक्सा तुम मुझे दे दो तो मैं तुमको जितना अन्न तुम चाहोगे उतना अन्न दे दूॅगा, जितनी शराब तुम चाहोगे उतनी शराब मैं तुमको दे दूॅगा। इसके अलावा और भी जो कुछ तुम चाहोगे वह सब मैं तुमको दे दूॅगा। पर यह बक्सा तुम मुझे दे दो।"

जैपोन के पास उस बक्से को प्रायर को देने के अलावा और कोई चारा नहीं था सो उसने वह बक्सा प्रायर को दे दिया और बदले में उसको क्या मिला?

प्रायर ने उसको कुछ बोरे अनाज के दिये, और बस। जैपोन फिर से अपनी बुरी हालत में वापस आ गया था और यह सब उसकी पत्नी वजह से हुआ था।

उसने अपनी पत्नी से कहा – "तुम्हारी वजह से मैंने अपना बक्सा खोया। उत्तरी हवा ने मुझसे कहा था कि तुम इसके बारे में किसी से कहना नहीं और मैंने उसका कहा नहीं माना तो अब मैं उसके वापस जाने की हिम्मत भी कैसे कर सकता हूँ।"

पर मरता क्या न करता। उसने हिम्मत बटोरी और एक बार फिर से उत्तरी हवा के किले की तरफ चल दिया। वहाँ पहुँच कर उसने एक बार फिर उत्तरी हवा के किले का दरवाजा खटखटाया।

उत्तरी हवा की पत्नी ने खिड़की से बाहर झाँका और पूछा – "बाहर कौन है?"

"मैं हूँ जैपोन।"

तभी उत्तरी हवा ने बाहर देखा और पूछा – "जैपोन, अरे अभी कुछ दिन पहले ही तो तुम यहाँ आये थे और मुझसे एक बक्सा ले गये थे। अब तुम्हें क्या चाहिये?"

जैपोन बोला — "ओह तो क्या आपको याद है कि मैं आपसे एक बक्सा ले गया था? वह बक्सा मेरे मालिक ने मुझसे ले लिया और फिर वापस नहीं दिया। मैं तो फिर से गरीब और भूखा रह गया।"

उत्तरी हवा बोला — "मैंने तुमसे कहा था न कि इसके बारे में तुम किसी को बताना नहीं इसलिये अब तुम यहाँ से चले जाओ। अब मैं तुमको कुछ और नहीं देने वाला।"

किसान गिड़गिड़ाया — "जनाब केवल आप ही तो मेरे नुकसान को पूरा कर सकते हैं। मुझ पर मेहरबानी कीजिये।"

सो दोबारा उत्तरी हवा का दिल जैपोन के पास गया और उसने एक सोने का बक्सा निकाल कर उसको देते हुए कहा — "इस बक्से को तब तक मत खोलना जब तक तुम भूख से बिल्कुल परेशान न हो जाओ नहीं तो यह तुम्हारी बात नहीं मानेगा।"

जैपोन ने उत्तरी हवा को धन्यवाद दिया और अपने घर की तरफ चल दिया। इस बार वह घाटी की तरफ से आया। जल्दी ही उसे भूख लग आयी। उसने वह सोने का बक्सा खोला और बोला — "मुझे दो।"

तुरन्त ही बक्से में से एक बड़े साइज़ का आदमी[14] निकल पड़ा। उसके हाथ में एक बड़ा सा डंडा था। निकलते ही उसने जैपोन को उस डंडे से पीटना शुरू कर दिया।

---

[14] Translated for the word "Giant"

जितनी जल्दी जैपोन वह बक्सा बन्द कर सका उसने वह बक्सा बन्द कर दिया और फिर अपने घर की तरफ चल दिया। यह मार खा कर उसका सारा शरीर अकड़ रहा था और दर्द कर रहा था। वह काफी घायल भी हो गया था।

पहले की तरह से उसकी पत्नी और बच्चे उसको लेने के लिये घर के बाहर तक आये और उससे पूछा कि उसका सफर कैसा रहा।

उसने कहा — "ठीक रहा। अबकी बार मैं पहले बक्से से भी ज़्यादा अच्छा बक्सा ले कर आया हूँ।"

घर में अन्दर जा कर उसने उन सबको मेज के चारों तरफ बिठाया और वह सोने का बक्सा खोला। इस बार केवल एक नहीं बल्कि दो दो बड़े आदमी डंडा लिये निकले और उसके परिवार को मारने लगे।

उसकी पत्नी और बच्चे तो डंडे की मार खा कर बेचारे चीखने लगे पर वे आदमी रुके ही नहीं जब तक उस किसान ने वह बक्सा बन्द नहीं कर दिया।

फिर वह अपनी पत्नी से बोला — "अब तुम प्रायर के पास जाओ और उसे बताना कि मैं इस बार पहले से भी ज़्यादा अच्छा बक्सा ले कर आया हूँ।"

अगले दिन जैपोन की पत्नी प्रायर के पास गयी तो प्रायर ने अपना हर बार वाला सवाल पूछा — "सो जैपोन अपनी यात्रा से वापस आ गया। इस बार वह क्या ले कर आया है?"

जैपोन की पत्नी बोली — "इस बार तो वह पहले से भी बहुत बढ़िया बक्सा ले कर आया है प्रायर जी। वह ठोस सोने का बना है और जो खाना वह देता है वह तो हम लोग बस सपने में ही सोच सकते हैं। पर जैपोन बोलता है कि कुछ भी हो जाये अबकी बार वह इस बक्से को किसी को नहीं देगा।"

यह सुन कर प्रायर की उस बक्से को लेने की इच्छा बहुत ज़ोर पकड़ गयी और उसने जैपोन को बुला बेजा।

जब जैपोन प्रायर के पास पहुँचा तो प्रायर बड़ी नर्मी से बोला — "जैपोन तुम नहीं जानते कि तुम्हारे आने से मैं कितना खुश हूँ। और वह भी जब जबकि तुम पहले वाले बक्से से भी बढ़िया बक्से के साथ वापस आये हो। इसे कम से कम मुझे दिखाओ तो।"

जैपोन मुस्कुराता हुआ बोला — "मैं ऐसा कर तो सकता हूँ पर फिर तुम उसको भी मुझसे ले लोगे।"

प्रायर उसको कुछ विश्वास दिलाता हुआ बोला — "नहीं नहीं, मैं वायदा करता हूँ कि मैं उसको तुमसे बिल्कुल नहीं लूँगा।"

जैपोन ने उस चमकते हुए सोने के बक्से का एक कोना ही दिखाया। तो अपनी ऑखों पर विश्वास ही नहीं कर सका कि वह

बक्सा इतना सुन्दर हो सकता था। उसका मन उस बक्से को लेने के लिये लालायित हो उठा।

उसने जैपोन से तुरन्त ही कहा — "जैपोन, इसको तुम मुझे दे दो और मैं तुमको तुम्हारा पुराना वाला बक्सा अभी ला कर दे देता हूँ।

तुम इस सोने के बक्से का क्या करोगे। इसको तुम मुझे दे दो और मैं तुमको वह तुम्हारा पुराना वाला बक्सा वापस दे देता हूँ। और इसके बदले में और भी जो कुछ तुम चाहो वह मैं तुमको सब दे दूँगा।"

जैपोन ने कुछ अविश्वास दिखाते हुए उससे पूछा — "क्या तुम ठीक कह रहे हो?"

प्रायर बोला — "हॉ हॉ मैं बिल्कुल ठीक कह रहा हूँ।" कह कर वह उसका पुराना वाला बक्सा अन्दर से निकाल लाया और उसको जैपोन को दे दिया।

जैपोन ने अपना पुराना वाला बक्सा उससे ले लिया और नया सोने का बक्सा उसको देते हुए बोला — "प्रायर, इस बक्से को खोलने से पहले तुम ज़रा सावधान रहना। जब तक तुमको बहुत अच्छी तरह से भूख न हो इस बक्से को मत खोलना।"

प्रायर बोला — "यह बक्सा तो मेरे पास बड़े अच्छे समय से आया है। कल मेरे घर बिशप[15] आ रहे हैं और उनके साथ में और

[15] Bishop is a higher rank man in Church, "Paadaree" has been translated for the word priests.

भी कुछ पादरी आ रहे हैं। मैं उनको दोपहर तक भूखा रखूँगा और फिर बक्सा खोल कर बहुत अच्छा खाना खिलाऊँगा।"

सो जैपोन अपना वह नया बक्सा प्रायर को दे कर अपना पुराना बक्सा उससे वापस ले कर खुशी खुशी अपने घर वापस चला गया।

अगली सुबह अपनी मास[16] कहने के बाद सारे पादरी प्रायर की रसोई के चक्कर लगाने लगे। वे आपस में बोले — "इस प्रायर ने आज हमको सुबह भी नाश्ता नहीं खिलाया और अभी भी इसकी रसोई में आग नही जल रही है।"

पर जो प्रायर को जानते थे वे बोले — "ज़रा इन्तजार करो। खाने के समय यह अपना बक्सा खोलेगा और हमको इतना बढ़िया खाना खिलायेगा जैसा कि तुम लोगों ने कभी सोचा भी नहीं होगा।"

दोपहर को प्रायर और सारे पादरी मेज के चारों तरफ बैठे। मेज के बीच में सोने का बक्सा चमक रहा था। सबकी ऑखें उस बक्से पर ही लगी थीं।

खाने का समय आने पर प्रायर ने अपना वह सोने का बक्सा खोला तो इस बार उसमें खाने की बजाय छह बड़े बड़े आदमी डंडे ले कर बाहर आ गये और उन पादरियों को पीटने लगे।

इससे प्रायर के हाथ से वह बक्सा छूट गया और वह बक्सा खुला का खुला ही नीचे फर्श पर गिर पड़ा और वे छह आदमी वहॉ बैठे सब आदमियों को मारते रहे।

---

[16] Mass is Christians' special worship

इत्तफाक से जैपोन वहीं पास में ही छिपा खड़ा था। उसने वह खुला हुआ बक्सा नीचे पड़ा देख लिया तो उसको उठा कर बन्द कर दिया नहीं तो वे लोग तो वहॉ बैठे सारे लोगों को मार ही डालते। बक्सा बन्द होते ही वे छहों बड़े लोग भी गायब हो गये।

इस तरह बिशप और पादरियों को यह खाना मिला और शाम को वे अपने चर्च का काम भी नहीं कर सके।

जैपोन ने अपने दोनों बक्से अपने पास रख लिये और फिर उनको किसी को नहीं दिया। प्रायर ने भी उसके बाद जैपोन से कुछ नहीं मॉगा। उसके बाद से वे सब आराम की जिन्दगी बिताने लगे।

2 जादूगरनी का सिर[17]

एक बार इटली देश में एक राजा था जिसके कोई बच्चा नहीं था। वह हमेशा भगवान से यही प्रार्थना करता रहता था कि वह उसको कोई बच्चा दे दे पर उसकी सारी प्रार्थनाऐं बेकार जा रही थीं।

एक दिन जब वह रोज की तरह से प्रार्थना करने गया तो उसने एक आवाज सुनी — "क्या तुमको एक लड़का चाहिये जो मर जाये या एक लड़की चाहिये जो भाग जाये।"

यह सुन कर तो वह सोच ही नहीं सका कि वह इस बात का क्या जवाब दे सो वह चुप रह गया। वह घर गया और अपने सारे दरबारियों को बुलाया और उनसे पूछा कि उसको इस बात का क्या जवाब देना चाहिये। उसको क्या माँगना चाहिये।

वे बोले — "अगर लड़के को मरना है तो यह तो वैसा ही है जैसे किसी बच्चे का न होना इसलिये आपको लड़की ही माँगनी चाहिये।

क्योंकि अगर वह भाग भी गयी तो भी वह कम से कम ज़िन्दा तो रहेगी और आप उसे कभी कभी देख तो सकेंगे। और फिर उसको हम ताले में बन्द कर के भी रख सकते हैं ताकि वह कहीं भागे ही नहीं।"

---

[17] The Sorcerer's Head. Tale No 84. A folktale from Italy from its Upper Val d'Arno area.

सो राजा फिर से अपनी प्रार्थना की जगह वापस गया और प्रार्थना की। उसने फिर वही आवाज सुनी — "क्या तुमको एक लड़का चाहिये जो मर जाये या एक लड़की चाहिये जो भाग जाये।"

इस बार उसने जवाब दिया — "मुझे एक लड़की चाहिये जो भाग जाये।"

समय आने पर उसकी पत्नी ने एक सुन्दर बेटी को जन्म दिया। शहर से कई मील दूर एक बागीचा था जिसके बीच एक महल था। उसके भाग जाने के डर से वह अपनी बेटी को वहाँ ले गया और एक आया के साथ उसको वहाँ रख दिया।

राजा और रानी अक्सर उसको मिलने के लिये वहाँ चले जाते थे ताकि वह लड़की शहर के बारे में सोच ही न सके और वहाँ से भाग भी न सके।

जब राजकुमारी सोलह साल की हो गयी तो राजा जिओना[18] का बेटा उधर की तरफ आ निकला। उसने राजकुमारी को देखा तो उसको उससे प्यार हो गया। उसने उसकी आया को रिश्वत में बहुत सारे पैसे दिये और उससे उस महल में घुसने की इजाज़त ले ली।

[18] King Giona

दोनों को एक दूसरे से प्रेम हो गया था सो दोनों ने खुशी खुशी शादी कर ली। दोनों की यह शादी दोनों के माता पिता को बिना पता चले ही हो गयी।

नौ महीने बाद राजकुमारी ने एक सुन्दर से बेटे को जन्म दिया। सो अगली बार जब राजा अपनी बेटी से मिलने आया तो पहले वह उसकी आया से मिला। उसने उससे पूछा कि उसकी बेटी कैसी थी।

आया बोली — "बहुत अच्छी है। क्या आप विश्वास करेंगे कि उसके अभी अभी बेटा हुआ है।"

यह सुन कर तो राजा ने उससे कोई भी रिश्ता रखने से मना कर दिया। इस तरह वह राजकुमारी अपने पति और बेटे के साथ उसी महल में अकेली रहती रही।

पन्द्रह साल का हो जाने के बाद भी उसके बेटे ने अपने नाना को नहीं देखा था तो उसने अपनी मॉ से कहा — "मॉ, मैं अपने नाना से मिलना चाहता हूँ।"

उसकी मॉ ने कहा — "हॉ हॉ बेटा क्यों नहीं। जाओ तुम उनके महल में जाओ और उनसे मिल लो।"

अगले दिन वह सुबह जल्दी उठा और एक घोड़े पर सवार हो कर और काफी सारा पैसा ले कर अपने नाना से मिलने चल दिया। जब वह वहॉ पहुॅचा तो उसके नाना ने उससे कोई प्यार दिखाना तो दूर बल्कि उसकी तरफ देखा भी नहीं और उससे बोला भी नहीं।

इतना खराब स्वागत देख कर वह लड़का तीन चार महीने बाद ही अपने नाना से बोला — "आप मुझसे इतने नाराज क्यों हैं नाना जी कि आप मुझसे बोलते भी नहीं हैं।"

राजा बोला — "जब तक तुम जंगल में रहने वाली जादूगरनी का सिर काट कर नहीं लाओगे तब तक मैं तुमसे नहीं बोलूँगा।"

राजकुमार बोला — "नाना जी, मैं केवल आपके लिये ही वहाँ जाऊँगा और उस जादूगरनी का सिर काट कर लाऊँगा।"

राजा बोला — "यही तो मैं भी चाहता हूँ कि तुम वहाँ जाओ और उस जादूगरनी का सिर काट कर लाओ।"

"ठीक है।"

यह जादूगरनी एक ऐसी जादूगरनी थी कि जो कोई उसको देखता था वह पत्थर का हो जाता था और यह बात वह राजा जानता था कि उसके धेवते[19] के साथ भी यही होने वाला है यानी जैसे ही वह उसकी तरफ देखेगा तो वह पत्थर का हो जायेगा।

इसी लिये उसने उससे यह कहा भी था कि वह उस जादूगरनी का सिर काट कर लाये।

उस लड़के ने एक बहुत ही बढ़िया घोड़ा चुना, काफी सारा पैसा लिया और उस जादूगरनी का सिर लाने चल दिया।

रास्ते में उसको एक बूढ़ा मिला। उसने उस लड़के से पूछा — "मेरे बेटे, तुम कहाँ जा रहे हो?"

---

[19] Translated for the word "Grandson" – daughter's son or "son's son". Here it means daughter's son.

"जादूगरनी के पास, उसका सिर लाने।"

"ओह मेरे भगवान। उसके लिये तो तुमको एक ऐसा घोड़ा चाहिये जो उड़ सके। क्योंकि वहाँ पहुँचने के लिये तुमको एक पहाड़ के ऊपर से जाना पड़ेगा जिस पर बहुत सारे शेर चीते रहते हैं। अगर तुम वहाँ से इस घोड़े पर जाओगे तो वे तुमको और तुम्हारे घोड़े दोनों को खा जायेंगे।"

लड़का बोला — "पर ऐसा घोड़ा मुझे मिलेगा कहाँ से?"

बूढ़ा बोला — "रुको, मैं तुमको एक ऐसा घोड़ा ला कर देता हूँ जो उड़ सकता है।" इतना कह कर वह गायब हो गया और जब वह लौटा तो उसके साथ एक बहुत ही शानदार घोड़ा था।

वह बूढ़ा बोला — "अब तुम मेरी बात सुनो। तुम सीधे सीधे उस जादूगरनी को नहीं देख सकते क्योंकि अगर तुमने उसको सीधे देखा तो तुम पत्थर के हो जाओगे। तुमको उसे एक शीशे में देखना पड़ेगा। वह भी तुमको मैं बताता हूँ कि वह शीशा तुम्हें कैसे मिलेगा।

तुम यहाँ से इधर चले जाओ और थोड़ी दूर जाने के बाद तुमको एक संगमरमर का महल दिखायी देगा और एक बागीचा दिखायी देगा जिसमें खूबानी[20] के फूल वाले पेड़ लगे होंगे।

[20] Apricot flowers. See its picture above.

वहॉ तुमको दो अन्धी स्त्रियॉ मिलेंगी। उन दोनों स्त्रियों के पास केवल एक ही ऑख है। वे दोनों उस एक ऑख को आपस में बॉट कर इस्तेमाल करती हैं। उन्हीं स्त्रियों के पास वह शीशा है जो तुमको उस जादूगरनी को देखने के लिये चाहिये।

वह जादूगरनी अक्सर अपना समय एक घास के मैदान में गुजारती है जिसमें बहुत सारे फूल लगे हैं। उन फूलों की खुशबू ही तुम्हारे ऊपर जादू डालने के लिये काफी है सो उस खुशबू से ज़रा बच कर रहना और ध्यान रहे कि उस जादूगरनी को केवल शीशे में ही देखना नहीं तो तुम पत्थर के हो जाओगे।"

लड़के ने उस बूढ़े को धन्यवाद दिया और उसका उड़ने वाला घोड़ा ले कर चल दिया। वह उस पहाड़ के ऊपर से उड़ा जहॉ बहुत सारे शेर चीते और सॉप रहते थे और जो उसको खाने के लिये तैयार थे।

वे उसको खाने के लिये दौड़े भी पर वह क्योंकि बहुत ऊॅचा उड़ रहा था इसलिये वे उसका कुछ बिगाड़ नहीं सके। पहाड़ को पीछे छोड़ता हुआ वह उड़ा जा रहा था, उड़ा जा रहा था कि दूर उसको एक संगमरमर का महल दिखायी दिया। उसने सोचा कि शायद यही उन अन्धी स्त्रियों का महल होगा।

इन दोनों अन्धी स्त्रियों के बीच में एक ही ऑख थी और इस ऑख को वे एक दूसरे को दे ले कर इस्तेमाल करती रहती थीं।

यह लड़का उस संगमरमर के महल के पास पहुँच तो गया पर महल का दरवाजा खटखटाने की हिम्मत नहीं कर सका सो वह बागीचे में ही टहलता रहा। वे स्त्रियाँ अपना शाम का खाना खा रही थीं। जब वे अपना खाना खा चुकीं तो वे भी बागीचे में टहलने के लिये आ गयीं।

उस समय वह एक पेड़ पर चढ़ गया ताकि वे स्त्रियाँ उसको देख न सकें। वे बातें करती हुई घूम रही थीं। जिस स्त्री के पास आँख थी उसने ऊपर की तरफ मुँह उठा कर देखा और बोली — "तुमको यह महल देखना चाहिये जो राजा ने अभी नया नया बनवाया है।"

दूसरी बोली — "अच्छा? तो तुम मुझे आँख दो तो मैं भी देखूँ।"

पहली वाली ने उसको आँख दे दी। पर जैसे ही उसने हाथ बढ़ा कर आँख देनी चाही तो लड़के ने पेड़ से नीचे झुक कर उसको बीच में ही ले लिया।

दूसरी बोली — "तो तुम मुझको आँख नहीं देना चाहतीं। तुम सारा कुछ अपने आप ही देख लेना चाहती हो।"

"पर मैंने तुमको आँख दी तो।"

"नहीं, तुमने तो नहीं दी।"

"मैंने अभी तो तुम्हारे हाथ में रखी।"

वे इसी तरह आपस में बहस करती ही रहीं जब तक कि उनको यह पता नहीं चल गया कि उनमें से किसी की भी गलती नहीं थी और इस समय आँख उन दोनों में से किसी के पास भी नहीं थी।

तब वे ज़ोर से बोलीं — "ऐसा लगता है कि हमारे बागीचे में कोई और है जिसने हमारी आँख ले ली है। और अगर वह आदमी यहीं है तो मेहरबानी कर के वह हमारी आँख हमें दे दे क्योंकि हम दोनों के पास केवल एक ही आँख है।

और अगर उसे हमसे हमारी आँख के बदले में कुछ चाहिये तो वह हमको यह भी बता दे कि उसको हमसे क्या चाहिये हम अपनी आँख के बदले उसको वह दे देंगे।"

तब वह लड़का पेड़ पर से नीचे उतर आया और बोला — "मेरे पास है आपकी आँख। आप मुझे उसके बदले में वह शीशा दे दीजिये जिसमें मैं जादूगरनी को देख सकूँ क्योंकि मुझे जादूगरनी को मारना है।"

उन अन्धी स्त्रियों ने कहा — "खुशी से। पर पहले तुम हमारी आँख तो वापस करो तभी तो हम वह शीशा तुमको ढूँढ कर दे सकेंगे।"

उस लड़के ने उनकी आँख वापस कर दी। उनमें से एक स्त्री ने अपने आँख लगायी और दोनों महल में चली गयीं। कुछ देर में ही वे एक शीशा ले कर वापस लौटीं।

उन्होंने वह शीशा उस लड़के को दे दिया और वह लड़का शीशा ले कर अपनी आगे की यात्रा पर चल दिया।

वह फिर चलता रहा, चलता रहा जब तक हवा में फूलों की खुशबू नहीं भर गयी। जैसे जैसे वह आगे बढ़ता गया फूलों की खुशबू और तेज़ और और तेज़ होती चली गयी।

वह अब घास के मैदान में बने एक महल के पास पहुँच गया था। उस मैदान में फूल ही फूल लगे हुए थे वह जादूगरनी अपने घास के मैदान में घूम रही थी। उस लड़के ने अपना घोड़ा थोड़ा पीछे किया और उस जादूगरनी की तरफ पीठ कर के उसको शीशे में देखा।

जादूगरनी को अपनी ताकत पर बहुत विश्वास था कि उसको देखते ही लोग पत्थर बन जायेंगे और अपनी इसी ताकत के भरोसे पर वह किसी से बच कर कहीं भागने की कोशिश भी नहीं करती थी और इसी लिये अभी भी वह कहीं गयी भी नहीं। वहीं बागीचे में ही घूमती रही।

उसको वहीं घूमते देख कर उसको शीशे में देखते हुए वह लड़का उसके पास तक चला आया और अपनी तलवार घुमा कर चलाते हुए उसका सिर काट लिया।

उसके सिर से थोड़ा सा खून निकला जो जमीन पर गिरते ही साँपों में बदल गया। उस लड़के ने शीशे में देखते हुए ही वह सिर

एक थैले में रखा और उड़ते घोड़े को धन्यवाद दे कर वह उसके ऊपर सवार हो कर तुरन्त ही वहाँ से उड़ चला।

घर लौटने के लिये उसने दूसरा रास्ता लिया। वह एक बन्दरगाह से गुजरा। समुद्र के पास ही एक चैपल[21] था। वह लड़का उस चैपल में चला गया तो वहाँ उसको एक सुन्दर सी लड़की काले कपड़े पहने रोती हुई दिखायी दी।

जैसे ही उसने उस लड़के को देखा तो चिल्लायी — "चले जाओ यहाँ से चले जाओ। यहाँ अगर ड्रैगन[22] आ गया तो वह तुमको खा जायेगा। वह रोज एक ज़िन्दा आदमी खाता है। आज क्योंकि मेरी बारी है इसलिये मैं यहाँ उसका इन्तजार कर रही हूँ। पर तुम यहाँ से चले जाओ।"

लड़के ने उसको धीरज बँधाया — "देखो तुम घबराओ नहीं और रोओ भी नहीं। मैं तुमको उस ड्रैगन से बचाऊँगा।"

लड़की रोते रोते बोली — "यह नामुमकिन है। उस जैसे ड्रैगन को मारना नामुमकिन है।"

---

[21] Chapel – small church. A chapel is a religious place of fellowship, prayer and worship that is attached to a larger, often nonreligious institution or that is considered an extension of a primary religious institution.

[22] Dragon – is a mythical winged serpent and depicted in various designa in various cultures. Above is its picture as depicted typically in Europe.

लड़का फिर उसको तसल्ली देते हुए बोला — "तुम डरो नहीं और आओ मेरे घोड़े पर बैठ जाओ।" कह कर उस लड़के ने उस लड़की को अपने घोड़े पर बिठा लिया।

उसी समय पानी में छपाकों की आवाज सुनायी दी तो लड़के ने उस लड़की से अपनी ऑखें बन्द करने के लिये कहा और उसने खुद भी अपनी ऑखें बन्द कर के थैले से जादूगरनी का सिर निकाल लिया।

जैसे ही ड्रैगन ने पानी में से अपना सिर बाहर निकाला तो उसको जादूगरनी का सिर दिखायी दिया। वह उसको देख कर तुरन्त ही पत्थर का हो गया और समुद्र की तली में डूब गया।

यह लड़की तो एक राजा की बेटी थी। सो इस लड़की को ड्रैगन से बचा कर वह लड़का उसको उसके माता पिता के पास ले गया। राजा और रानी दोनों ही अपनी बेटी को ज़िन्दा और सही सलामत देख कर बहुत खुश हुए।

इसके बदले में राजा ने अपनी बेटी की शादी उस लड़के से करने का वायदा किया और अगर वह उसके पास रहा तो उसको अपना वारिस बनाने का भी वायदा किया।

उस लड़के ने राजकुमारी को तो ले लिया पर उसके राज्य के लिये उसको बहुत बहुत धन्यवाद दिया और कहा कि वह तो खुद ही अपने राज्य का राजा था और उसको वहाँ वापस लौटना था। राजकुमारी को ले कर वह अपने नाना के पास पहुँच गया।

राजा अपने धेवते को ज़िन्दा वापस आया देख कर आश्चर्यचकित भी हुआ और साथ ही कुछ दुखी भी हुआ।

लड़का बोला — "नाना जी, आप यही चाहते थे न कि मैं जाऊँ और जादूगरनी का सिर काट कर लाऊँ। सो देखिये मैं उसका सिर काट कर ले आया हूँ।"

इतना कह कर उसने अपनी आँखें बन्द कर के उस जादूगरनी का सिर थैले से निकाला और राजा के सामने कर दिया। जैसे ही राजा ने उसका सिर देखा वह पत्थर का हो गया।

उसके बाद वह लड़का अपने माता पिता के पास चला गया। वहाँ से उन सबको ले कर वह अपने नाना के राज्य में लौट आये और अपने नाना के बाद वह लड़का वहाँ का राजा बन गया।

उस राजकुमारी से उसकी शादी हो गयी और वे सब खुशी खुशी रहने लगे।

3 सेब वाली लड़की[23]

एक बार एक राजा और एक रानी थे जो इसलिये बहुत दुखी रहते थे क्योंकि उनके कोई बच्चा नहीं था। रानी बराबर पूछती रहती — "मेरे भी उसी तरीके से बच्चे क्यों नहीं होते जैसे इस सेब के पेड़ के ऊपर सेब लगते है?"

सो हुआ यह कि एक दिन बजाय एक लड़के को जन्म देने के उस रानी ने एक सेब को जन्म दिया। पर यह सेब दुनियाँ के सब सेबों से ज़्यादा लाल और ज़्यादा सुन्दर था। राजा ने उस सेब को एक सोने की तश्तरी में रख कर अपनी बालकनी में रख दिया।

राजा के महल की सड़क के दूसरी तरफ भी एक राजा रहता था। एक दिन वह दूसरा राजा अपनी खिड़की में खड़ा बाहर देख रहा था तो उसने देखा कि उसके सामने वाले राजा की बालकनी में एक बहुत ही सुन्दर नहायी धोयी लड़की खड़ी अपने बालों में कंघी कर रही थी। वह लड़की सेब जैसी गोरी और गुलाबी थी।

उसको देख कर तो उसका मुँह खुला खुला रह गया और वह उसकी तरफ देखता का देखता रह गया।

[23] Apple Girl. Tale No 85. A folktale from Italy from its Florence area.

पर जैसे ही उस लड़की को यह लगा कि कोई उसको देख रहा है तो वह वहाँ से भागी और तश्तरी में रखे सेब के अन्दर जा कर गायब हो गयी।

राजा को तो उससे पागलपन की हद तक प्यार हो गया था। सो उसके दिमाग ने कुछ काम किया और वह सड़क पार कर के उस दूसरे राजा के महल की तरफ चल दिया। वहाँ जा कर उसने महल का दरवाजा खटखटाया तो रानी ने दरवाजा खोला।

राजा बोला — "रानी जी आप मेरे ऊपर एक कृपा करें।"

रानी बोली — "कहिये। पड़ोसी ही पड़ोसी के काम आते हैं।"

राजा बोला — "आपकी बालकनी में जो सेब रखा है वह आप मुझे दे दें।"

रानी बोली — "राजा साहब क्या आप जानते हैं कि आप क्या कह रहे हैं? मैं उस सेब की माँ हूँ और आपको पता होना चाहिये कि मुझे उसके लिये कितना इन्तजार करना पड़ा।"

पर राजा को तो ना सुनना नहीं था इसलिये सेब के माता पिता को उस सेब को उस दूसरे राजा को देना ही पड़ गया ताकि पड़ोसियों में आपस में सम्बन्ध अच्छे रह सकें।

इस तरह वह राजा उस सेब को ले कर अपने घर आ गया और उसको ले जा कर सीधा अपने कमरे में चला गया। वहाँ उसने उस तश्तरी को अपने कमरे की एक मेज पर रख दिया। उसके नहाने धोने के लिये सब कुछ बाहर रख दिया।

अब वह लड़की रोज सुबह उस सेब में से नहाने और अपने बाल ठीक करने के लिये उस सेब में से निकलती और वह राजा उसको देखता रहता।

बस यही था जो वह सेब में से बाहर निकल कर करती थी। न तो वह कुछ खाती थी और न कोई बात करती थी। बस केवल नहाती थी और अपने बाल बनाती थी और फिर सेब के अन्दर चली जाती थी।

यह राजा अपनी सौतेली माँ के साथ रहता था। उसकी माँ को कुछ शक हुआ जब उसने देखा कि उसका बेटा लगातार अपने कमरे में अकेले ही रह रहा था। कहीं बाहर निकलता ही नहीं था।

उसने सोचा "चाहे मुझे कुछ भी करना पड़े पर मुझे यह जरूर मालूम करना है कि मेरा बेटा अपने कमरे में अकेला बैठा बैठा क्या करता रहता है।"

उसी समय किसी और राजा ने उनके राज्य पर हमला कर दिया सो उस राजा को लड़ाई के लिये जाना पड़ गया।

जब उसको अपना सेब छोड़ना पड़ा तो उसका दिल टूट गया। उसने अपने एक बहुत ही भरोसे के नौकर को बुलाया और उससे कहा — "मैं अपने कमरे की चाभी तुम्हारे पास छोड़े जा रहा हूँ। ज़रा ध्यान रखना कि कोई मेरे कमरे में न जाने पाये।

रोज उस सेब वाली लड़की के लिये पानी और कंघा बाहर रख देना और इस बात का भी ध्यान रखना कि उसको और भी जो

चाहिये वह उसको मिल जाये। और हॉ भूलना नहीं कि वह मुझे सब बताती रहे।"

हालॉकि यह गलत था क्योंकि वह तो कभी बोली ही नहीं थी पर राजा ने सोचा कि नौकर को यह झूठ बताना जरूरी था।

"अगर मेरे पीछे उसका बाल भी बॉका हुआ तो मैं तुमको जान से मार दूॅगा।"

नौकर बोला — "आप बिल्कुल बेफिक्र रहिये, राजा साहब। मैं अपनी तरफ से उनकी बहुत अच्छी तरह से देखभाल करूॅगा।"

जैसे ही राजा चला गया उसकी सौतेली मॉ ने अपनी हर कोशिश की कि वह राजा के कमरे में घुस जाये पर उसको मौका ही नहीं मिला।

एक बार उसने नौकर की शराब में अफीम मिला दी और जब वह उसको पी कर सो गया तो उसने उसके पास से राजा के कमरे की चाभी चुरा ली।

फिर उसने राजा के कमरे का दरवाजा खोला और अपने बेटे के इस अजीब से बर्ताव को जानने के लिये उसका सारा कमरा उलट पुलट कर दिया ताकि उसको यह पता चल जाये कि वह ऐसा क्यों कर रहा था।

पर जितना वह ढूॅढती थी उतना ही उसको कुछ नहीं मिल पा रहा था। बहुत सारी साधारण चीज़ों में उसको केवल एक ही अलग

सी चीज़ दिखायी दी, और वह था एक शानदार सेब जो एक सोने के कटोरे में रखा था।

उसको लगा कि शायद यही सेब होगा जिसके बारे में वह हमेशा सोचता रहता होगा।

रानियाँ हमेशा ही एक छोटा सा चाकू अपने कपड़ों में छिपा कर रखती हैं सो उसने अपना वह चाकू निकाला और उस सेब को चारों तरफ से गोदना शुरू किया।

उसके सेब को हर गोदने से खून की एक धारा सी बह निकली। यह देख कर सौतेली माँ डर गयी और उस सेब को वहीं छोड़ कर वहाँ से भाग ली। चाभी उसने नौकर की उसी जेब में रख दी जहाँ से उसने निकाली थी।

जब नौकर की आँख खुली तो उसको तो पता नहीं था कि क्या हुआ। वह राजा के कमरे में गया तो देखा कि वहाँ तो सारी जगह खून बिखरा पड़ा था।

उस बेचारे के मुँह से निकला — "उफ, अब मैं क्या करूँ?" और वह भी वहाँ से भाग लिया। वहाँ से भाग कर वह अपनी एक चाची के पास गया जो एक परी थी और उसके पास बहुत तरीके के जादुई पाउडर थे।

उसने जब जा कर अपनी उस चाची को अपना सारा किस्सा सुनाया तो उसने दो जादुई पाउडर मिलाये – एक तो उन सेबों के

लिये जिन पर जादू किया गया होता है और दूसरा उन लड़कियों के लिये जिन पर जादू किया गया होता है।

उसने उन दोनों पाउडरों को मिलाया और उस पाउडर को नौकर को दे कर कहा कि वह जा कर उसको सेब के ऊपर छिड़क दे।

नौकर भागा भागा आया और वह पाउडर उसने उस सेब पर छिड़क दिया। सेब टूट कर खुल गया और सेब में से वह लड़की बाहर निकल आयी। पर उसके सारे शरीर पर पट्टियाँ बँधी थीं और कई जगह प्लास्टर बँधा था।

राजा घर आया तो वह लड़की पहली बार उससे बोली — "क्या तुम विश्वास करोगे कि तुम्हारी सौतेली माँ ने मेरे सारे शरीर पर चाकू मारे?

पर तुम्हारे नौकर ने मेरी बड़ी सेवा की जिससे मैं ठीक हो सकी। मैं अठारह साल की हूँ और एक जादू में थी। अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हारी पत्नी बन सकती हूँ।"

"अरे यह तुम क्या कहती हो कि मैं पसन्द करूँ तो? मैं तो कब से तुमसे शादी करना चाहता हूँ।"

बस फिर क्या था दोनों तरफ से शादी की तैयारियाँ शुरू हो गयीं और दोनों की शादी हो गयी।

दोनों महलों में खूब आनन्द मनाया। इस आनन्द मनाने के समय में केवल एक ही आदमी नहीं था – और वह थी राजा की सौतेली मॉ।

4 शापित रानी का महल[24]

बहुत पुरानी बात है कि एक शहर में एक बूढ़ी विधवा रहती थी। जो सूत कात कर अपना गुजारा करती थी।

उसके तीन बेटियाँ थीं। वे भी सूत कातती थीं। हालाँकि वे तीनों रात दिन अपने अपने चरखों पर लगी रहती फिर भी वे एक सैन्ट भी नहीं बचा पाती थीं क्योंकि उस कताई से वे केवल उतना ही कमा पाती थीं जिससे उनका रोज का खर्चा चल जाये।

एक दिन वह बुढ़िया बहुत बीमार हो गयी। उसको बहुत तेज़ बुखार आ गया और तीन दिन बाद तो वह बस मरने वाली ही हो गयी।

उसने अपनी तीनों रोती हुई बेटियों को बुलाया और कहा — "बेटी रोओ नहीं। कोई यहाँ हमेशा के लिये नहीं रहता। मैं तो काफी दिन ज़िन्दा रह कर अपनी काफी ज़िन्दगी जी चुकी। अब मेरा मरने का समय आ गया है।

मेरा दिल तो केवल इसलिये रोता है कि मैं तुम लोगों को इतना गरीब छोड़ कर जा रही हूँ। पर मुझे इस बात की खुशी है कि क्योंकि तुम लोग अपनी कमाई करना जानती हो इसलिये तुम लोग

---

[24] The Palace of the Doomed Queen. Tale No 93. A folktale from Italy from its Siena area.

किसी तरह से अपने आपको सँभाल लोगी। कम से कम भूखी नहीं मरोगी। मैं भगवान से प्रार्थना करूँगी कि वह तुम्हारी सहायता करे।

जो कुछ दहेज में मैं तुम्हारे लिये छोड़ कर जा रही हूँ वह हैं ये तीन रुई के गोले। वे तीनों गोले आलमारी में रखे हैं।" यह कह कर उसने अपनी आखिरी साँस ली और इस दुनियाँ से चली गयी।

कुछ दिनों बाद वे तीनों लड़कियाँ आपस में बात कर रही थीं — "इस रविवार को ईस्टर रविवार है और हमारे पास एक अच्छे ईस्टर खाने के लिये कुछ भी नहीं है।"[25]

सो सबसे बड़ी वाली लड़की मैरी[26] बोली — "मैं अपने धागे का गोला बेच दूँगी और उसके आये पैसे से ईस्टर के लिये खाना खरीदूँगी।"

ईस्टर की सुबह उसने अपने धागे का गोला उठाया और उसको बेचने के लिये बाजार चल दी। उसके हाथ का कता हुआ धागा बहुत बढ़िया था सो वह बहुत अच्छे दामों में बिक गया। उस पैसे से उसने डबल रोटी, बकरे की एक टाँग और एक बोतल शराब खरीदी और घर की तरफ चल दी।

जब वह घर आ रही थी तो एक कुत्ता उसके पीछे दौड़ पड़ा। उसने उसके हाथ में लगी वह बकरे की टाँग और डबल रोटी तो मुँह में दबोच ली और शराब की बोतल नीचे गिरा दी।

---

[25] Easter Sunday – the day Jesus was resurrected after his crucifixion on Friday (Good Friday),

[26] Mary – name of the eldest girl

नीचे गिरते ही वह बोतल तो टूट गयी और बकरे की टॉग और डबल रोटी ले कर वह कुत्ता वहॉ से भाग गया। वह लड़की तो डर के मारे हक्का बक्का सी रह गयी। वह तुरन्त ही वहॉ से घर भाग गयी।

जब वह घर आयी तो उसने अपनी बहिनों को बताया कि उस दिन उसके साथ क्या हुआ था। सो उस दिन उनको ब्राउन डबल रोटी के कुछ टुकड़े खा कर ही सन्तुष्ट रह जाना पड़ा।

अगले दिन बीच वाली लड़की रोज़[27] बोली — "आज मैं देखती हूँ कि वह कुत्ता कैसे परेशान करता है?" सो उस दिन वह अपना सूत ले कर बाजार गयी।

उसका सूत भी अच्छा कता हुआ था सो उसको भी अपने सूत के बहुत अच्छे पैसे मिले। उसने भी अपने पैसों से बकरे का कुछ मॉस, डबल रोटी और शराब की एक बोतल खरीदी और घर की तरफ चल दी।

इस लड़की ने मैरी के रास्ते को छोड़ कर अपने घर के लिये एक दूसरा ही रास्ता लिया। पर वह कुत्ता तो इस रास्ते पर भी उसके पीछे भागा। उसने इस लड़की का भी बकरे का मॉस और डबल रोटी अपने मुॅह में दबा ली और शराब की बोतल नीचे गिरा कर तोड़ दी और मॉस और डबल रोटी ले कर भाग गया।

[27] Rose – the name of the second girl

रोज़ मैरी से ज़्यादा हिम्मत वाली थी सो वह उस कुत्ते के पीछे भागी पर वह कुत्ता तो उससे कहीं तेज़ भाग रहा था सो वह उसका पीछा बहुत देर तक नहीं कर सकी और कुछ ही देर में थक कर वापस घर आ गयी। उसने भी हॉफते हॉफते अपनी बहिनों को बताया कि उस दिन उसके साथ क्या हुआ था।

उस दिन भी उन लोगों को ब्राउन डबल रोटी ही खानी पड़ी। उस दिन सबसे छोटी लड़की नीना[28] बोली — "कल मेरी बारी है। कल मैं जाऊँगी और देखती हूँ कि वह कुत्ता मेरे साथ भी ऐसा ही करता है क्या।"

सो अगली सुबह नीना ने अपने सूत का गोला लिया और अपनी दोनों बहिनों के जाने के समय से बहुत पहले ही घर से बाजार के लिये निकल पड़ी।

वहॉ उसने भी अपना सूत बहुत अच्छे दामों पर बेचा और बहुत सारा खाने का सामान खरीदा और एक तीसरे रास्ते से घर की तरफ चल दी।

कुछ दूर चलने के बाद उसके पीछे भी एक कुत्ता आया। उसने भी नीना के हाथ में लगी शराब की बोतल गिरा कर तोड़ दी और बाकी का सामान ले कर भाग गया।

[28] Nina – the name of the youngest girl

नीना उसके पीछे पीछे भागी और भागती ही रही। भागते भागते वह एक महल के पास आ गयी जहाँ आ कर वह कुत्ता गायब हो गया।

उसने सोचा कि अगर मुझे कोई इस महल के अन्दर मिलता है तो मैं उसको बताऊँगी कि एक कुत्ता तीन दिन से हमारा खाना ले कर भाग रहा है और फिर मैं उससे अपने खाने का बदला लूँगी।

यह सोच कर वह उस महल में अन्दर घुसी और उसके रसोईघर तक आ पहुँची। वहाँ आग जल रही थी और बर्तनों में खाना पकाया जा रहा था।

एक जगह बकरे की टाँग भूनी जा रही थी। नीना ने एक बर्तन का ढकना उठा कर उस बर्तन में झाँका तो उसने देखा कि उसमें तो वही माँस पक रहा था जो उसने अभी थोड़ी देर पहले ही खरीदा था और दूसरे बर्तन में बकरे का माँस था।

फिर उसने रसोईघर की एक आलमारी खोली तो देखा कि उसमें तीन डबल रोटियाँ रखी हुई थीं।

फिर वह महल देखने चली गयी। वह सारे महल में घूम ली पर आश्चर्य की बात कि उसको उस महल में एक भी आदमी दिखायी नहीं दिया। पर वहाँ खाने के कमरे में एक मेज पर तीन आदमियों के लिये खाना लगा था।

नीना ने अपने मन में सोचा "लगता है कि यह खाना तो केवल हमारे लिये ही लगा है और वह भी हमारे ही खरीदे हुए खाने से।

अगर मेरी बहिनें यहाँ होती तो मैं यहाँ अभी अभी खाना खाने बैठ जाती पर अब मैं क्या करूँ।”

उसी समय उसने सड़क पर जाती हुई एक गाड़ी की आवाज सुनी तो उसने खिड़की से बाहर देखा। उसने उस गाड़ी चलाने वाले को पहचान लिया।

उसने उस गाड़ीवान से कहा कि वह उसकी बहिनों से जा कर कह दे कि उनकी छोटी बहिन नीना यहाँ महल में उनका इन्तजार कर रही थी। उनके लिये यहाँ बहुत बढ़िया खाना लगा रखा है। सो वे तुरन्त ही यहाँ चली आयें।

उस गाड़ीवान ने उसकी बहिनों को जा कर नीना का सन्देश दिया तो वे दोनों वहीं आ गयीं। नीना ने उन दोनों को बताया कि उसके साथ क्या क्या हुआ।

फिर वह बोली — “चलो खाना खाते हैं। अगर इस घर के मालिक आ जाते हैं तो हम उनसे कह देंगे कि हम तो केवल अपना ही खाना खा रहे हैं।”

उसकी बहिनें उतनी बहादुर तो नहीं थीं जितनी नीना थी पर इस समय तक उनको भी भूख लग आयी थी सो वे सब वहाँ उस मेज पर खाना खाने बैठ गयीं।

अभी वे मेज पर बैठी ही थीं कि लड़कियों ने देखा कि अचानक बाहर अँधेरा हो आया था। उस महल की खिड़कियाँ बन्द होने लगीं और उसमें लगे लैम्प जलने लगे। वे अभी उनकी तारीफ ही कर

रही थीं कि उनका खाना अपने आप आ गया और मेज पर लग गया।

नीना ने खाना खाने से पहले प्रार्थना की — “जो भी हमें हमारा यह खाना परस रहा है और जिसने हमें खाना बनाने से बचाया हम उसका धन्यवाद करते हैं।”

फिर वह अपनी बहिनों से बोली — “आओ बहिनों खाना शुरू करते हैं।” और उन्होंने बकरे की टॉग खानी शुरू कर दी।

नीना की बहिनें तो डर के मारे सुन्न सी हो गयी थीं। वे बड़ी मुश्किल से खाना खा पा रही थीं और वे सारी शाम एक दूसरे को ही देखती रहीं क्योंकि उनको लग रहा था कि वहॉ कभी भी कहीं से भी कोई भी बड़ा सा राक्षस आ सकता था।

पर नीना बोली — “अगर वे हमको यहॉ खाना खिलाना नहीं चाहते थे तो वे हमारे लिये न तो खाना पकाते, न हमें खाना परसते और न ही हमारे लिये लैम्प जलाते।” पर उसकी बहिनें उसके इस विचार से राजी नहीं थीं।

खाना खाने के बाद जल्दी ही उनको नींद आने लगी तो नीना उनको महल में ले गयी। वहॉ वे सब एक ऐसे कमरे में आ गयीं जहॉ तीन बिस्तर लगे हुए थे सो नीना बोली “चलो सोया जाये।”

उसकी बहिनें बोलीं — “नहीं नहीं। हम लोगों को अपने घर चलना चाहिये। यहॉ तो हमको बहुत डर लग रहा है।”

नीना ने हँस कर कहा — "तुम लोग तो बहुत ही डरपोक हो। देखो न हम लोग यहाँ कितने आनन्द से हैं और तुम लोग यहाँ से जाना चाहती हो। मैं तो सोने जा रही हूँ तुमको अगर आना हो तो तुम भी आ जाना।"

वह उनको दोबारा सोने के लिये कहने ही वाली ही थी कि उन्होंने सीढ़ी के नीचे से एक आवाज सुनी — "नीना, मुझे ज़रा रोशनी तो दिखाना।"

यह सुन कर नीना की बहिनें तो डर के मारे जम सी गयीं — "हे भगवान हम पर दया करो। यह कौन हो सकता है? नीना, मत जाना वहाँ। पता नहीं कौन है वहाँ।"

नीना बोली — "मैं तो जाऊँगी।"

कह कर उसने एक लैम्प उठाया और सीढ़ियों से नीचे की तरफ जाने लगी। वह नीचे उतरी तो एक कमरे में आ गयी जिसमें एक रानी एक कुर्सी पर जंजीरों से बँधी बैठी थी। उसके मुँह कान और नाक से लपटें निकल रही थीं।

रानी उन लपटों के बीच में से ही बोली — "सुनो नीना, क्या तुम अपनी किस्मत बनाना चाहोगी?"

"हाँ हाँ क्यों नहीं।"

"तब तुमको अपनी बहिनों की सहायता लेनी पड़ेगी।"

"मैं उनको बता दूँगी।"

रानी फिर बोली — “तुम लोगों को कुछ अजीब अजीब चीज़ें करनी पड़ेंगी और ध्यान रखना कि अगर तुम डर गयीं तो तुम मर जाओगी।”

नीना बोली — “मैं उनको वैसे कामों को करने के लिये किसी तरह से मना लूँगी जो उनको करने के लिये जरूरी होंगे।”

रानी फिर वोली — “बहुत अच्छे। तो देखो, वे तीन बक्से खोलो। उन सब में रानियों वाले कपड़े और गहने रखे हैं। मैं एक बार शहर के एक नौजवान से प्रेम करने लगी थी और उसी की वजह से मैं आज इस नरक में हूँ।

उसने जो भी कुछ मेरे साथ किया गलत किया। वह किसी दूसरी लड़की से शादी करना चाहता था। अब मैं यह चाहती हूँ कि वह भी मेरे साथ इस नरक को सहे। उसके साथ न्याय करने का यही एक तरीका है।

तुम कल मेरे कपड़े पहनना। अपने बाल भी वैसे ही बनाना जैसे मेरे बने हैं और हाथ में एक किताब ले कर बाहर छज्जे की दीवार के सहारे झुक कर खड़ी हो जाना।

एक निश्चित समय पर वह नौजवान यहाँ आयेगा और तुमसे पूछेगा — “मैम, क्या में आपके पास आ सकता हूँ?” तो तुम उसका जवाब देना “हाँ।”

और तब तुम उसको कौफी के लिये बुलाना और उसको जहर मिली कौफी का यह प्याला दे देना। जब वह मर जाये तो उसको

यहाँ नीचे ले आना। फिर यह आलमारी खोलना और उसको इस आलमारी के अन्दर फेंक देना। और फिर उसके चारों तरफ चार मोमबत्ती जला देना।

मैं बहुत अमीर थी। यह मेरी चीज़ों की लिस्ट है जिनको तुम मेरे नौकरों से ले सकती हो जो आज कल मेरी हर चीज़ चुराने पर लगे हैं।"

यह सुन कर नीना सीढ़ियों से ऊपर गयी और अपनी बहिनों को जा कर सब कुछ बताया कि उसने सीढ़ियों के नीचे क्या क्या देखा और बोली — "तुम लोग कसम खाओ कि तुम मेरी सहायता करोगी नहीं तो फिर भगवान ही तुम्हारी सहायता करें।"

उसकी दोनों बहिनों ने वायदा किया कि वे उसकी सहायता जरूर करेंगी।

अगली सुबह नीना उस मरी हुई रानी की तरह तैयार हुई और वहाँ जैसे रानी ने बताया था हाथ में किताब ले कर छज्जे की दीवार के सहारे झुक कर खड़ी हो गयी।

जल्दी ही उसको घोड़े की टापों की आवाज सुनायी पड़ी और एक नौजवान घोड़े पर सवार वहाँ आया। उसने नीना की तरफ देख कर उसको नमस्ते की। नीना ने भी अपना सिर हिला कर उसकी नमस्ते का जवाब दिया।

उस नौजवान ने पूछा — "क्या मैं आपके पास आ सकता हूँ मैम?"

नीना बोली — “यकीनन।”

वह नौजवान अपने घोड़े पर से उतरा और महल की सीढ़ियाँ चढ़ कर ऊपर आ गया।

नीना ने कहा — “चलो, हम लोग साथ बैठ कर कौफी पीते हैं।”

वह नौजवान बोला — “खुशी से।”

नीना ने उसको एक प्याले में जहरीली कौफी डाल कर दे दी। वह नौजवान उस कौफी को पीते ही मर गया। नीना ने फिर अपनी दोनों बहिनों को बुलाया और उनसे कहा कि वह उसके शरीर को नीचे ले जाने में उसकी सहायता करें पर उन्होंने मना कर दिया।

नीना बोली — “अगर तुम लोगों ने मेरी सहायता नहीं की तो मैं तुम लोगों को यहीं मार दूँगी।”

इस पर वे डर गयीं और उस नौजवान के शरीर को नीचे ले जाने में नीना की सहायता करने में लग गयीं। नीना ने उस नौजवान का सिर पकड़ा और उसकी बहिनों ने उसके पैर और तीनों उसको खींचते हुए नीचे आलमारी के पास ले गयीं। उस आलमारी के चारों तरफ चार मोमबत्ती लगी हुई थीं।

उसकी बहिनें तो यह सब देख कर काँपने लगीं और उस नौजवान के शरीर को वहीं छोड़ कर भागने ही वाली थीं कि नीना बोली — “तुम भाग कर तो देखो। फिर तुम देखना कि मैं तुम्हारे साथ क्या करती हूँ।”

उसके बाद उसकी बहिनों की वहाँ से भागने की हिम्मत ही नहीं पड़ी।

नीना ने वह आलमारी खोली तो उसमें वह आग की लपट वाली रानी एक सोने के सिंहासन पर बैठी थी। उन्होंने उसके प्रेमी को उसके पास ही रख दिया।

रानी ने भी उसको हाथ से पकड़ कर अपने पास बिठा लिया और बोली — "आओ मेरे पास नरक में आओ, ओ नीच आदमी। अब तुम मुझे छोड़ कर कहीं नहीं जा सकोगे।"

इसके साथ ही वह आलमारी एक बहुत ज़ोर की आवाज के साथ झटके से बन्द हो गयी और गायब हो गयी।

यह सब देख कर नीना की बहिनें तो डर के मारे बेहोश सी हो गयीं। नीना उनको किसी तरह होश में लायी और उनको उस घटना के धक्के से बाहर निकाला।

फिर उन्होंने उस रानी का खजाना नौकरों से लिया और वे दुनियाँ की सबसे ज़्यादा अमीर लड़कियाँ हो गयीं।

कुछ साल बाद नीना की दोनों बहिनों की शादी हो गयी और उसने उनकी शादी में इतना अच्छा दहेज दिया जैसे किसी राजकुमारी की शादी में दिया जाता है। बाद में उसकी अपनी भी शादी हो गयी और वह भी एक रानी की तरह रही।

5 चौदह[29]

एक बार की बात है कि एक पति पत्नी के तेरह लड़के थे। उनके एक लड़का और हो गया तो उन्होंने उसका नाम चौदह रख दिया।

वह जल्दी जल्दी बड़ा होने लगा। जब वह बड़ा हो गया तो उसकी माँ ने उससे कहा — "बेटा अब तुमको खेतों को खोदने आदि में अपने भाइयों की सहायता करनी चाहिये। लो अपने और उनके खाने की यह टोकरी लो और खेतों पर उनके साथ चले जाओ और वहाँ जा कर उनकी सहायता करो।"

कह कर उसने चौदह को एक टोकरी दी जिसमें चौदह गोल डबल रोटियाँ थीं, चौदह चीज़ के टुकड़े[30] थे और चौदह सेर शराब थी। माँ से यह सब ले कर चौदह खेतों की तरफ चल पड़ा।

जब वह बीच रास्ते में पहुँचा तो उसे भूख और प्यास दोनों लग आयीं। उसने खाने की वह टोकरी खोली और चौदहों डबल रोटी और चौदहों चीज़ के टुकड़े खा लिये और चौदहों बोतल शराब पी गया। उस दिन उसके भाई लोग बेचारे भूखे प्यासे ही रह गये।

उन्होंने उससे कहा — "चलो एक हल ले लो और खेतों में काम करना शुरू कर दो।"
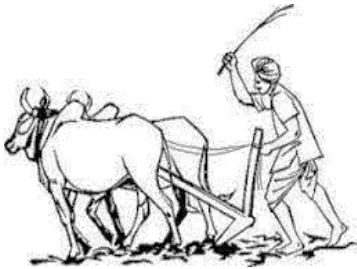
[29] Fourteen. Tale No 96. A folktale from Italy from its Marcbe area.

[30] Cheese in the western world is the processed Paneer of India.

चौदह बोला — "हॉ हॉ क्यों नहीं। पर मुझे तो ऐसा हल चाहिये जो चौदह पौंड भारी हो।"

सो उसके लिये उन्होंने चौदह पौंड का एक हल ढूँढ कर ला कर दिया। अब चौदह भाइयों ने मिल कर खेत जोतना शुरू किया तो बीच में ही चौदह बोला — "क्या हम इस खेत को आखीर तक जोतने के लिये दौड़ लगायें?"

"हॉ हॉ क्यों नहीं।"

चौदहों भाई खेत खोदते हुए दौड़े तो चौदह जीत गया। उसके बाद से चौदह अपने भाइयों के साथ काम करने लगा। वह चौदह आदमियों का काम करता तो वह चौदह आदमियों का खाना भी खाता था।

इस तरह उसके तेरहों भाई डंडों की तरह दुबले होते चले गये और वह खुद तन्दुरुस्त होता चला गया।

एक दिन उसके माता पिता ने उससे कहा — "बेटा अब तुम थोड़ा बाहर जाओ और दुनियॉ देखो।"

सो वह घर से बाहर चल दिया। चलते चलते वह एक अमीर किसान के पास आया। उस किसान को पन्द्रह मजदूरों की जरूरत थी।

लड़का बोला — "तुम्हारा चौदह लोगों का काम तो मैं कर सकता हूँ। पर मैं खाता पीता भी चौदह लोगों के खाने के बराबर हूँ। इसलिये मुझे तनख्वाह भी चौदह लोगों के बराबर ही दी जानी

चाहिये। अगर तुम मुझे इन शर्तों पर काम देना चाहो तो मैं तुम्हारे लिये काम करने के लिये तैयार हूँ।"

उस किसान की कुछ समझ में नहीं आया पर फिर भी उसने उसको एक मौका देना चाहा सो उसने उसको और एक और आदमी को अपने खेत पर रख लिया। इस तरह उसके पास चौदह और एक और आदमी कुल मिला कर पन्द्रह मजदूर हो गये।

उन्होंने खेत में हल चलाना शुरू कर दिया तो चौदह ने उस एक मजदूर से सचमुच ही चौदह गुना काम किया तो उस किसान का वह खेत बहुत जल्दी ही खुद गया।

खेत खुदने के बाद वह अमीर किसान चौदह को उसको उसकी चौदह मजदूरों की मजदूरी और चौदह आदमियों का खाना देना नहीं चाहता था सो उसने चौदह से बचने की एक तरकीब सोची।

वह बोला — "सुनो तुम अब मेरा एक काम और कर दो। तुम ये सात खच्चर और चौदह बालटी ले कर नरक जाओ और वहाँ से इनमें लूसीबैलो[31] का सोना भर लाओ।"

चौदह बोला — "मैं यकीनन ले आऊँगा पर तुम मुझको चौदह पौंड भारी पकड़ने वाला एक चिमटा[32] दे दो।"

[31] Name of the Chief Satan (Devil) – known with several names, such as Lucifer, Lucibello etc

[32] Translated for the word "Tongs". See its picture above.

उस अमीर किसान ने उसको एक चौदह पौंड भारी चिमटा दे दिया और चौदह वह चौदह पौंड भारी चिमटा, चौदह बालटी और सात खच्चर ले कर नरक की तरफ चल दिया।

जब वह नरक पहुँचा तो उसके बाहर के दरवाजे पर एक शैतान खड़ा था। उसने उस शैतान से कहा — "लूसीबैलो को बुलाओ।"

चौकीदार शैतान ने चौदह से पूछा — "तुमको हमारे सरदार से क्या काम है?"

चौदह ने अमीर किसान की लिखी वह चिट्ठी जो उसने लूसीबैलो के नाम लिखी थी जिसमें लिखा था "इसको चौदह बालटी सोना दे दो।" उस शैतान को दे दी।

वह उस चिट्ठी को अपने मालिक के पास ले गया तो मालिक लूसीबैलो ने चौदह को अन्दर बुला लिया और उसको सोना निकालने के लिये नीचे जाने के लिये कहा।

जैसे ही चौदह जमीन के नीचे पहुँचा चौदह शैतान उसको ज़िन्दा खाने के लिये उसके ऊपर कूद पड़े पर चौदह ने अपने चौदह पौंड भारी चिमटे से उन चौदह शैतानों की जीभ पकड़ ली और उन्हें इतना सताया कि वे सब मर गये। बस केवल उनका सरदार लूसीबैलो ही ज़िन्दा बचा।

लूसीबैलो बोला — "मैं अब इन बालटियों को सोने से कैसे भरूँगा जब तुमने मेरे चौदह शैतानों को तो मार दिया जो इन बालटियों को सोने से भरते।"

चौदह बोला — "तुमको इस बात की चिन्ता करने की कोई जरूरत नहीं मैं इन बालटियों को सोने से अपने आप भर लूँगा।"

उसने अपनी चौदह बालटियाँ सोने से भरीं, लूसीबैलो को बाई बाई किया और वहाँ से चल दिया।

लूसीबैलो बोला — "रुको तो। तुम इस तरह से यहाँ से नहीं जा सकते।"

उसने चौदह को खाने के लिये जैसे ही अपना मुँह खोला तो चौदह ने अपनी सँड़ासी से उसकी जबान पकड़ ली। उसको अपने कन्धे के ऊपर डाला और अपने सोने से लदे खच्चर ले कर वहाँ से चल दिया।

चौदह सही सलामत उस अमीर किसान के घर आ गया। घर आ कर उसने शैतान को रसोईघर में रखी मेज के पाये से बाँध दिया।

लूसीबैलो बोला — "अब तुम मेरे साथ क्या करना चाहते हो?"

चौदह बोला — "कुछ खास नहीं। बस तुम मेरे मालिक को साथ ले कर नरक चले जाओ और फिर यहाँ कभी नहीं आना।"

इतना कह कर उसने लूसीबैलो को खोल दिया और वह उस अमीर किसान को ले कर नरक चला गया।

इस तरह शैतान को उससे बचने के लिये अपनी ज़िन्दगी की भीख नहीं मॉगनी पड़ी। उसने उसको बस उस अमीर किसान के वहॉ से ले जाने के बदले में ही आजाद कर दिया था।

उस अमीर किसान के जाने के बाद अब चौदह उस गॉव का सबसे ज़्यादा अमीर किसान बन गया था।

6 क्रिस्टल का मुर्गा[33]

एक बार एक मुर्गा था जो दुनियाँ घूमने के लिये निकला। चलते चलते उसको सड़क पर पड़ी हुई एक चिट्ठी मिल गयी। उसने उस चिट्ठी को अपनी चोंच से उठा लिया और उसे पढ़ने लगा। उसमें लिखा था —

"क्रिस्टल के मुर्गे, क्रिस्टल की मुर्गी, काउन्टैस हंसिनी, ऐबैस बतख, पीले पंखों वाला चिड़ा – चलो सब टौम थम्ब की शादी में चलो।"[34]

मुर्गा यह पढ़ कर बहुत खुश हुआ सो वह उसी दिशा में चल दिया जिस तरफ टौम थम्ब का घर था। चलते चलते उसको क्रिस्टल की मुर्गी मिल गयी।

मुर्गी ने उससे पूछा — "मुर्गे भाई, कहाँ चले?"

"मैं तो टौम थम्ब की शादी में जा रहा हूँ।"

"क्या मैं भी उसकी शादी में चल सकती हूँ?"

"अगर तुम्हारा नाम बुलावे की इस चिट्ठी में लिखा हो तो।"

सो उसने बुलावे की वह चिट्ठी फिर से खोली और पढ़ी — "क्रिस्टल के मुर्गे, क्रिस्टल की मुर्गी, काउन्टैस हंसिनी..."

---

[33] Crystal Rooster. Tale No 98. A folktale from Italy from its Marche area.

[34] Crystal Rooster, Crystal Hen, Countess Goose, Abbess Duck, Gold Finch Birdie. Let's be off to Tom Thumb's Wedding.

"हॉ हॉ तुम्हारा नाम तो यहॉ लिखा है तुम भी चल सकती हो। चलो चलें।"

सो वह मुर्गा और मुर्गी दोनों टौम थम्ब की शादी में चल दिये। कुछ दूर जाने पर उनको काउन्टैस हंसिनी मिली।

हंसिनी ने पूछा — "मुर्गी बहिन और मुर्गे भाई, कहॉ चले?"

मुर्गा बोला — "हम लोग टौम थम्ब की शादी में जा रहे हैं।"

"क्या मैं भी आप दोनों के साथ टौम थम्ब की शादी में चल सकती हूॅ?"

"अगर तुम्हारा नाम बुलावे की इस चिट्ठी में लिखा हो तो।"

सो मुर्गे ने वह चिट्ठी फिर से खोली और फिर से पढ़ी – "क्रिस्टल के मुर्गे, क्रिस्टल की मुर्गी, काउन्टैस हंसिनी. . ."

"ओह यहॉ तो तुम्हारा नाम भी लिखा है हंसिनी बहिन इसलिये तुम भी हमारे साथ चल सकती हो। चलो तुम भी चलो।"

अब वे तीनों टौम थम्ब की शादी में चल दिये। चलते चलते उनको काउन्टैस बतख मिल गयी।

बतख ने पूछा — "बहिन हंसिनी, बहिन मुर्गी, और भाई मुर्गे, आप सब लोग कहॉ जा रहे हैं?"

"हम सब लोग टौम थम्ब की शादी में जा रहे हैं।"

"क्या मैं भी आप सबके साथ टौम थम्ब की शादी में चल सकती हूॅ?"

“हॉ हॉ क्यों नहीं। पर अगर तुम्हारा नाम बुलावे की इस चिट्ठी में लिखा हो तो।”

सो मुर्गे ने वह चिट्ठी फिर से खोली और पढ़ी – “क्रिस्टल के मुर्गे, क्रिस्टल की मुर्गी, काउन्टैस हंसिनी, ऐबैस बतख...”

“ओह यहॉ तो तुम्हारा नाम भी लिखा है बतख बहिन सो तुम भी हमारे साथ चल सकती हो। चलो तुम भी हमारे साथ चलो।”

अब वे चारों टौम थम्ब की शादी में चल दिये। चलते चलते उनको पीले पंखों वाला चिड़ा मिल गया।

उसने पूछा — “बहिन बतख, बहिन हंसिनी, बहिन मुर्गी, और भाई मुर्गे, आप सब लोग कहॉ जा रहे हैं?”

मुर्गा बोला — “हम लोग टौम थम्ब की शादी में जा रहे हैं।”

“क्या मैं भी आप सबके साथ टौम थम्ब की शादी में चल सकता हूॅ?”

“हॉ हॉ क्यों नहीं। पर अगर तुम्हारा नाम बुलावे वाली इस चिट्ठी में लिखा हो तो।”

सो मुर्गे ने वह चिट्ठी फिर से खोली और पढ़नी शुरू की – “क्रिस्टल के मुर्गे, क्रिस्टल की मुर्गी, काउन्टैस हंसिनी, ऐबैस बतख, पीले पंखों वाला चिड़ा...”

“ओह यहॉ तो तुम्हारा नाम भी लिखा है चिड़े भाई सो चलो तुम भी हमारे साथ चलो।”
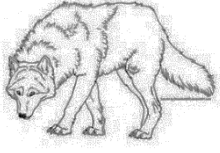
अब वे पाँचों टौम थम्ब की शादी में चल दिये। अब क्या था वे सब आनन्द में बातें करते चले जा रहे थे कि चलते चलते उनको एक भेड़िया मिल गया।

उसने भी उनसे पूछा — "आप सब कहाँ जा रहे हैं?"

मुर्गे ने जवाब दिया — "हम सब टौम थम्ब की शादी में जा रहे हैं।"

"क्या मैं भी आप सबके साथ वहाँ चल सकता हूँ?"

"हाँ हाँ क्यों नहीं। पर अगर तुम्हारा नाम बुलावे वाली इस चिट्ठी में लिखा हो तो।"

सो मुर्गे ने एक बार फिर वह चिट्ठी निकाली और उसको पढ़नी शुरू की। पर उसमें भेड़िये का नाम तो कहीं भी नहीं था।

मुर्गा बोला "पर बुलावे की इस चिट्ठी में तुम्हारा नाम तो कहीं है नहीं भेड़िये भाई।"

भेड़िया बोला — "पर मैं तो जाना चाहता हूँ।"

यह सुन कर सारे जानवर डर गये। वे तो उसको न हाँ कर सके और न उसको ना कर सके। वे डर के मारे बोले — "ठीक है। चलो तो फिर तुम भी हमारे साथ चलो हम सब चलते हैं।"

वे अभी बहुत दूर नहीं गये थे कि भेड़िया बोला — "मुझे तो भूख लगी है।"

मुर्गा बोला — "अफसोस मेरे पास तो तुमको देने के लिये कुछ भी नहीं है।"

"तो मैं तुमको ही खा जाऊँगा।" कह कर उसने अपना बड़ा सा मुँह खोला और मुर्गे को साबुत ही निगल गया।

कुछ दूर आगे जाने के बाद भेड़िया फिर बोला — "मुझे तो अभी और भूख लगी है।"

इस बार मुर्गी बोली — "अफसोस हमारे पास तो तुमको देने के लिये कुछ भी नहीं है।"

"तो मैं तुमको ही खा जाऊँगा।" कह कर उसने अपना बड़ा सा मुँह खोला और मुर्गी को भी साबुत ही निगल गया। यही हाल हंसिनी और बतख का भी हुआ।

अब केवल भेड़िया और पीला चिड़ा ही रह गये। कुछ दूर आगे चलने के बाद भेड़िया फिर बोला — "ओ पीले चिड़े, मुझे तो अभी भी भूख लगी है।"

पीला चिड़ा बोला — "तुम क्या सोचते हो कि मैं तुमको क्या दे सकता हूँ?"

"अगर तुम मुझे कुछ नहीं दे सकते तो फिर मैं तुम्हें ही खा जाता हूँ।" कह कर उसने चिड़े को खाने के लिये अपना मुँह खोला तो वह चिड़ा उड़ कर उसके सिर पर बैठ गया।

भेड़िये ने उसको पकड़ने की बहुत कोशिश की पर वह चिड़ा इधर उधर उड़ता रहा। फिर वह एक पेड़ पर बैठ गया, एक शाख से दूसरी शाख पर फुदकता रहा और उसके हाथ नहीं आया।

वह फिर भेड़िये के सिर पर आ बैठा, फिर वह उसकी पूँछ पर चला गया। इस तरह वह भेड़िये को तब तक नचाता रहा जब तक कि वह भेड़िया पूरी तरह से थक नहीं गया।

उसी समय भेड़िये को एक स्त्री आती दिखायी दी जिसके सिर पर खाने की एक टोकरी रखी थी। वह खाना वह अपने पति के लिये ले जा रही थी।

उसको देख कर चिड़े ने भेड़िये से कहा — "अगर तुम मुझे छोड़ दो तो मैं तुम्हारे लिये नूडिल्स और मॉस का बहुत ही बढ़िया खाने का इन्तजाम कर सकता हूँ जो वह स्त्री ले कर आ रही है।

जैसे ही वह मुझे देखेगी वह मुझे पकड़ने की कोशिश करेगी। मैं उड़ जाऊँगा और एक शाख से दूसरी शाख पर फुदकता रहूँगा। वह अपनी टोकरी नीचे रख देगी और मेरे पीछे दौड़ेगी। तब तुम उसका सारा खाना ले लेना और खा लेना।"

और फिर ऐसा ही हुआ। वह स्त्री जब वहाँ आयी तो उसकी निगाह उस सुन्दर चिड़े पर पड़ी तो वह तुरन्त ही उसको पकड़ने के लिये उसके पीछे भागी।

चिड़ा वहाँ से उड़ कर थोड़ी दूर बैठ गया तो उसने अपनी खाने की टोकरी तो नीचे रख दी और फिर उस चिड़े के पीछे भागी।

बस भेड़िये को मौका मिल गया। वह भी तुरन्त ही उस टोकरी के पास गया और उसने उस टोकरी में से खाना खाना शुरू कर दिया।

भेड़िये को अपना खाना खाते देख कर वह स्त्री चिल्लायी — "अरे कोई मेरी सहायता करो। यह भेड़िया मेरा खाना खा रहा है।"

उसकी चिल्लाहट सुनते ही उसकी सहायता के लिये वहाँ बहुत सारे किसान अपने अपने डंडे और बड़े बड़े चाकू ले कर आ गये। वे सब उस भेड़िये पर टूट पड़े और उसे तुरन्त ही मार दिया।

उसके मरते ही उसके पेट में से क्रिस्टल मुर्गा, क्रिस्टल मुर्गी, काउन्टैस हंसिनी और ऐबैस बतख सब निकल पड़े। वे सब फिर से पीले चिड़े को साथ ले कर हँसते गाते बातें करते टौम थम्ब की शादी में चल दिये।
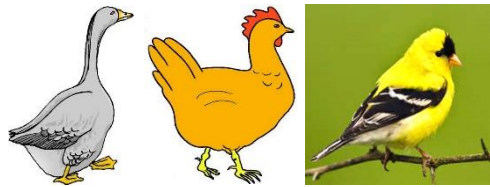
7 जमीन और पानी पर चलने वाली नाव[35]

एक बार एक राजा ने अपने राज्य में यह मुनादी पिटवायी कि "जो कोई आदमी ऐसी नाव बनायेगा जो जमीन पर भी चलेगी और पानी में भी, तो मैं उस आदमी से अपनी बेटी की शादी कर दूँगा।"

उस देश में एक आदमी रहता था जिसके तीन बेटे थे। उसके पास एक घोड़ा, एक गधा और एक सूअर का बच्चा भी था।

जब उसके सबसे बड़े बेटे ने यह मुनादी सुनी तो उसने अपने पिता से कहा — "पिता जी आप अपना घोड़ा बेच दीजिये और उससे जो पैसे मिलेंगे मैं उनसे नाव बनाने का सामान खरीदूँगा।

फिर मैं उस सामान से एक ऐसी नाव बनाऊँगा जो जमीन और पानी दोनों पर चल सके। फिर मैं राजकुमारी से शादी कर लूँगा।"

पिता अपना घोड़ा नहीं बेचना चाहता था पर अपने बेटे की जिद के आगे उसको झुकना पड़ा। घर में शान्ति बनाये रखने के लिये उसने अपना घोड़ा बेच दिया और उस पैसे से उसके लिये नाव बनाने के लिये औजार खरीद दिये।

अगले दिन वह लड़का सुबह सवेरे उठा और नाव बनाने के लिये लकड़ी काटने के लिये जंगल चल दिया।

---

[35] A Boat For Land and Water. Tale No 99. A folktale from Italy from its Rome area.

जब उसकी नाव आधी बन गयी तो एक छोटा सा बूढ़ा वहाँ आया और उससे बोला — "बेटा, तुम यह क्या बना रहे हो?"

"बस ऐसे ही जो मुझे अच्छा लग रहा है।"

"और तुमको क्या अच्छा लग रहा है?"

"बैरल[36] की पट्टियाँ।"

"तो कल तुमको बैरल की पट्टियाँ अपने आप कटी मिल जायेंगी अभी तुम अपने घर जाओ।" कह कर वह बूढ़ा वहाँ से चला गया।

अगली सुबह जब वह वापस जंगल गया तो जहाँ उसने अपनी वह आधी बनी नाव और लकड़ी और औजार छोड़े थे वहाँ बैरल की पट्टियों का ढेर लगा पड़ा था।

उस ढेर को देख कर तो उस लड़के ने अपना सिर पीट लिया और रोता चिल्लाता घर वापस आ गया।

घर आ कर उसने अपने पिता को सब कुछ बताया तो पिता को भी बहुत बुरा लगा। उसने तो अपने बेटे की ख़ुशी के लिये अपना घोड़ा बेचा था पर अब उसका मन अपने बेटे की गर्दन मरोड़ने का कर रहा था।

---

[36] A barrel is a hollow cylindrical container traditionally made of wooden staves bound by wooden or metal hoops. It has a standard size – in UK it is 36 Imperial gallons (160 L, 43 US Gallons). Modern barrels are made of US Oak wood and measure 59, 60 and 79 US Gallons. A US Gallon is 3.8 Liter and an Imperial Gallon is 4.5 Liter. See its picture above.

दो तीन हफ्ते बाद उसके बीच वाले लड़के को अपनी किस्मत आजमाने की खुजली उठी। वह भी नाव बनाना चाहता था। उसने अपने पिता से उसका गधा बेचने के लिये कहा ताकि वह उसको बेचने से आये पैसों से वैसी नाव बना सके।

हालॉकि वह आदमी अपना गधा बेचना नहीं चाहता था पर अपने दूसरे बेटे की जिद के आगे उसको झुकना पड़ा और उसने उसके लिये अपना गधा बेच दिया।

उस पैसे से उसने भी कुछ सामान खरीदा और वह भी नाव बनाने जंगल की तरफ चल दिया। वहॉ जा कर उसने भी लकड़ी काटी और उसकी नाव बनानी शुरू कर दी।

जब उसकी नाव भी आधी बन गयी तो एक बूढ़ा उसके पास आया और उससे बोला — "बेटा, तुम यह क्या बना रहे हो?"

"बस ऐसे ही जो मुझे अच्छा लग रहा है।"

"और क्या तुम बताओगे कि तुमको क्या अच्छा लग रहा है?"

"मैं झाड़ू के हैन्डिल बना रहा हूॅ।"

"तो कल तुमको झाड़ू के हैन्डिल अपने आप बने मिल जायेंगे अभी तुम अपने घर जाओ।" कह कर वह बूढ़ा वहॉ से चला गया।

शाम को वह लड़का भी अपनी नाव के लिये लकड़ी काट कर घर चला गया। घर जा कर उसने खाना खाया और सो गया।

सुबह सवेरे उठ कर जब वह जंगल गया तो उसने देखा कि उसकी काटी सारी लकड़ी के तो झाड़ू के हैन्डिल बने रखे हैं।

यह देख कर उसने भी अपना सिर पीट लिया और रोता चिल्लाता घर वापस आ गया। घर आ कर उसने अपने पिता को सब कुछ बताया तो पिता को भी बहुत बुरा लगा।

उसने तो अपने बेटे की खुशी के लिये अपना गधा बेचा था पर अब उसका मन उसकी गर्दन मरोड़ने का कर रहा था।

वह चिल्ला कर बोला — "तुम्हारे साथ जो कुछ हुआ ठीक ही हुआ। बल्कि तुम दोनों के साथ जो हुआ वह ठीक हुआ क्योंकि तुम लोगों के विचार ही बेवकूफी के थे। और यह मेरे साथ भी ठीक हुआ क्योंकि मैंने तुम बेचकूफों की बात सुनी।"

उसका सबसे छोटा बेटा यह सब सुन रहा था। वह बोला — "अब जब हम यहाँ तक आ ही गये हैं पिता जी तो हमको बाकी बचा रास्ता भी पार कर लेना चाहिये।

पिता जी, मैं भी अपनी किस्मत आजमाना चाहता हूँ। हम यह सूअर का बच्चा बेच देते हैं, नये औजार खरीदते हैं और कौन जाने शायद मैं ही वैसी नाव बनाने में कामयाब हो जाऊँ।"

यह सुन कर तो पिता के गुस्से का पारा आसमान पर चढ़ गया पर काफी कहा सुनी के बाद वह सूअर का बच्चा भी बेच दिया गया, नये औजार खरीदे गये और वह लड़का अगले दिन नाव बनाने के लिये लकड़ी काटने के लिये जंगल पहुँच गया।

उसकी भी नाव जब आधी बन गयी तो वही पहले वाला बूढ़ा फिर वहाँ आया और उससे पूछा — "बेटे, तुम क्या कर रहे हो?"

लड़के ने जवाब दिया — "बाबा, मैं एक ऐसी नाव बना रहा हूँ जो जमीन पर भी चल सके और पानी पर भी तैर सके।"

बूढ़ा बोला — "तो तुमको ऐसी नाव जो जमीन पर भी चल सके और पानी पर भी तैर सके अपने आप मिल जायेगी अभी तुम अपने घर जाओ।" और यह कह कर वह बूढ़ा वहाँ से चला गया।

अपने दूसरे भाइयों की तरह वह भी शाम होने पर घर चला गया। जा कर उसने खाना खाया और सो गया। अगले दिन जब वह सुबह सवेरे जंगल पहुँचा तो उसको वैसी ही एक नाव तैयार खड़ी मिली। वह लड़का तो उस नाव को देख कर बहुत खुश हो गया।

उसके पतवार भी थे और उसमें पाल भी लगे हुए थे। वह तुरन्त ही उस नाव पर चढ़ गया और बोला — "चल नाव चल, जमीन पर चल।"

और नाव जंगल में हो कर इतनी आसानी से जाने लगी जैसे कि कोई नाव पानी पर तैरती है। चलते चलते वह उसके घर आ गयी। उसके पिता और भाई उस नाव को देख कर बड़े आश्चर्य में पड़ गये।

लड़का फिर बोला — "चल नाव चल, जमीन पर चल।" अब वह राजा के महल की तरफ चल दी – पहाड़ों पर चढ़ती हुई, मैदानों

में से गुजरती हुई और जब भी कोई नदी आती तो उसमें तैरती हुई।

अब उसके पास नाव तो थी पर उसको चलाने के लिये कोई टीम[37] नहीं थी। वह अब एक ऐसी नदी में आ पहुँचा था जिसका पानी समुद्र की एक धारा से आना था पर उसका पानी नदी तक नहीं पहुँच रहा था।

क्योंकि नदी के मुँह पर उसके किनारे पर खड़ा एक बहुत ही बड़ा आदमी झुक कर उस समुद्र की धारा में से पानी पी रहा था और उसका पानी नदी में आ ही नहीं पा रहा था जिससे वह धारा सूखी सी हो रही थी।

लड़का बोला — "हे भगवान, कितना सारा पानी पीने वाला आदमी है यह। क्या ही अच्छा हो अगर यह मेरे साथ राजा के महल तक चले।"

वह चिल्ला कर बोला — "क्या तुम मेरे साथ राजा के महल तक चलना पसन्द करोगे?"

उस बड़े आदमी ने एक घूँट पानी और पिया और बोला — "खुशी से। अब जबकि मेरी प्यास थोड़ी सी बुझ गयी है तो मैं तुम्हारे साथ चल सकता हूँ।" कह कर वह उस नाव पर चढ़ गया।

[37] Crew

अब वह नाव पानी पर तैरने लगी क्योंकि समुद्र का पानी अब नदी में आने लगा था। नदी में तैरने के बाद अब वह नाव फिर से जमीन पर चलने लगी थी।

चलते चलते वे दोनों एक ऐसी जगह आये जहाँ एक आदमी एक बड़ी मोटी सी भैंस को लोहे के डंडे में लगा कर आग के ऊपर भून रहा था।

उस आदमी को देख कर उस लड़के ने उस आदमी से पूछा — "क्या तुम मेरे साथ राजा के महल तक चलना पसन्द करोगे?"

वह बोला — "हाँ हाँ क्यों नहीं। मुझे बस ज़रा सा समय दो ताकि मैं यह कौर खा लूँ फिर मैं तुम्हारे साथ चलता हूँ।"

"हाँ हाँ जरूर।"

इस पर उस आदमी ने उस भैंस को उस लोहे के डंडे में से निकाला और अपने मुँह में ऐसे रखा जैसे वह कोई चिड़िया हो और उसे खा कर उस लड़के साथ उसकी नाव पर सवार हो गया। सो अब तीनों राजा के महल चल दिये।

नाव झीलें पार करती हुई और खेतों में से होती हुई चली जा रही थी कि उनको एक बड़े साइज़ का आदमी[38] मिल गया जो एक पहाड़ के सहारे खड़ा था।

उसको इस तरह खड़े देख कर वह लड़का उससे बोला — "हलो, क्या तुम मेरे साथ राजा के महल तक चलना पसन्द करोगे?"

---

[38] Translated for the word "Giant".

वह बोला — "मैं तो यहाँ से हिल भी नहीं सकता।"

"पर क्यों?"

"क्योंकि अगर मैं यहाँ से हटा तो यह पहाड़ गिर जायेगा।"

"तो गिर जाने दो।"

वह आदमी उस पहाड़ को एक हाथ से सँभाले हुए उस लड़के की नाव में कूद कर बैठ गया।

पर जैसे ही वह नाव वहाँ से चली उस आदमी का हाथ उस पहाड़ के नीचे से हट गया और वह पहाड़ एक ज़ोर की आवाज के साथ नीचे गिर कर चकनाचूर हो गया।

वह नाव फिर से सड़क और पहाड़ियों पर से होती हुई राजा के महल की तरफ चल दी और आखीर में राजा के महल के सामने आ कर रुक गयी।

वहाँ आ कर वह लड़का नाव में से उतरा — "राजा साहब, यह लीजिये। यह नाव मैंने अपने हाथों से बनायी है। यह जमीन और पानी दोनों पर चल सकती है। अब आप अपने वायदे के मुताबिक अपनी बेटी की शादी मुझसे कर दें।"

राजा उस लड़के को देख कर बहुत ही दुखी हो गया। वह तो ऐसे गरीब लड़के की आशा ही नहीं कर रहा था कि कोई ऐसा गरीब लड़का इतनी अच्छी नाव बना कर लायेगा जो पानी और धरती दोनों पर चल सकेगी और उसको अपनी बेटी की शादी एक ऐसे आदमी से करनी पड़ जायेगी। ।

वह यह सब देख कर अपनी मुनादी पर पछताने लगा कि मैंने ऐसी मुनादी पिटवायी ही क्यों। अब उसको अपनी बेटी किसी गरीब को देनी पड़ेगी।

कुछ सोच कर राजा बोला — "ठीक है। मैं अपनी बेटी की शादी तुमसे करूँगा पर तुमको मेरी एक शर्त माननी पड़ेगी। मेरी दावत में जो भी मैं तुमको दूँगा वह सारी चीज़ें तुमको और तुम्हारी टीम के लोगों को खत्म करनी पड़ेंगी। तुम उनमें से एक पंख या एक किशमिश भी नहीं छोड़ सकते।"

"ठीक है। यह बताइये कि यह दावत है कब?"

"कल।" और अगले दिन उसने यह सोचते हुए एक हजार चीज़ों की दावत का इन्तजाम किया कि न तो उस लड़के ने इतनी सारी चीज़ें कभी देखीं होंगी और न ही वह अपनी टीम के साथ ये सब चीज़ें खा पायेगा।

सो अगले दिन वह लड़का केवल एक आदमी को साथ ले कर उस दावत में आया। यह वही आदमी था जो भुनी हुई भैंस भुनी हुई चिड़िया की तरह खा रहा था।

लेकिन जब उन सबको खाने का समय आया तो वह तो बस खाता गया, खाता गया, खाता गया। कुछ को चबाते हुए, कुछ को साबुत की साबुत निगलते हुए जब तक कि उसने वहाँ रखी सारी की सारी चीज़ें खत्म नहीं कर लीं।

राजा तो उस आदमी को देखता ही रह गया। फिर उसने ताली बजा कर अपने नौकरों को बुलाया और उनसे पूछा कि रसोई में अभी कुछ बचा है क्या?

वे बोले — "थोड़ा सा ही बचा है।"

राजा ने उसको भी वहाँ मँगवा लिया तो नौकर खाने के आखिरी टुकड़े तक को वहाँ ले आये। उस आदमी ने वह सब भी खा लिया।

राजा की समझ में नहीं आया कि वह क्या कहे पर फिर कुछ सोच कर वह बोला — "हाँ अब मैं अपनी बेटी की शादी तुम्हारे साथ कर सकता हूँ पर अभी तो इस खाने के बाद शराब भी पीनी बाकी रह गयी है।

अब मैं तुम्हारे लिये अपने तहखाने में रखी सारी शराब मँगवाता हूँ जिसको तुमको और तुम्हारी टीम को पूरा का पूरा खत्म करना होगा।"

अबकी बार उस लड़के के साथ वह नदी का पानी पीने वाला आदमी आया और उसने देखते देखते राजा की सारी शराब खत्म कर दी। फिर उसने वह शराब भी पी डाली जो राजा ने अपने लिये बचा कर रखी थी।

राजा बोला — "बहुत अच्छे। मैं इस बात के खिलाफ बिल्कुल भी नहीं हूँ कि मैं अपनी बेटी तुमको नहीं दूँगा पर अब दहेज का सवाल है जो उसके साथ जायेगा।

उसके श्रंगार करने की मेज, आलमारियाँ, पलंग, चादरें, कपड़े और घर की बहुत सारी चीज़ें हैं जो मैं उसको दूँगा। वे सब तुमको मेरी बेटी को उन सबके ऊपर बिठा कर एक ही बार में उसी समय ले जानी होंगी।"

लड़का उस आदमी की तरफ देखता हुआ बोला जिसने पहाड़ सँभाल रखा था — "क्या यह काम तुमको कोई काम लग रहा है?"

वह आदमी बोला — "क्या मुझे यह काम लग रहा है? नहीं, नहीं, यह तो मेरा शौक है।"

सब लोग महल चले गये। लड़के ने सामान लाने वालों से पूछा — "क्या तुम लोग तैयार हो? अगर तैयार हो तो सामान लादना शुरू करो।"

वे लोग कपड़ों की आलमारियाँ लाये, मेजें लाये, जवाहरात के बक्से लाये, और और भी बहुत सारा सामान लाये। सारा सामान ला कर उन्होंने उस आदमी की कमर पर लाद दिया।

उस सामान के ऊपर बैठने के लिये उस राजकुमारी को पहले अपने महल की मीनार पर चढ़ना पड़ा फिर वह उस ढेर पर आ कर बैठी।

जब वह बैठ गयी तो वह बड़ा आदमी चिल्ला कर बोला — "राजकुमारी जी, ज़रा कस कर पकड़ लीजियेगा। मैं अब चलना

शुरू करता हूँ। कहीं ऐसा न हो कि मेरे चलने के धक्के से आप गिर जायें।”

इतना कह कर वह सब कुछ ले कर नाव की तरफ भाग लिया और कूद कर नाव पर चढ़ गया।

लड़का बोला — “ओ नाव, अब तुम उड़ चलो।” और नाव सड़कों, चौराहों और खेतों के ऊपर से होती हुई उड़ चली।

राजा अपनी बालकनी में खड़ा यह सब देख रहा था। वह चिल्लाया — “उनके पीछे जाओ और उन सबको पकड़ कर जंजीर में बाँध कर ले आओ।”

राजा की फौज उनके पीछे भागी परन्तु नाव के उड़ने से जो धूल का बादल उठा उससे वह उनको देख भी न सकी।

लड़के का पिता अपने छोटे बेटे को उसकी दुलहिन के साथ और पूरी नाव भरे सामान के साथ देख कर बहुत खुश हुआ।

फिर उस लड़के ने दुनियाँ का सबसे सुन्दर महल बनवाया जिसमें एक एक तल्ला उसने अपने पिता, भाइयों और अपने साथियों को रहने के लिये दे दिया और बाकी का महल उसने अपने और अपनी पत्नी के लिये रख लिया।

8 जूँ की खाल[39]

एक बार एक राजा अपने खाली समय में बाहर घूम रहा था कि उसको अपने ऊपर एक जूँ चलती दिखायी दे गयी।

अब वह जूँ क्योंकि एक राजा के ऊपर चल रही थी इसलिये वह एक खास जूँ थी और उसकी इज़्ज़त तो होनी ही चाहिये थी।

सो बजाय इसके कि वह राजा उसे मार कर फेंक देता वह उसको अपने महल में ले गया और उसकी ठीक से देखभाल करने लगा।

राजा की देखभाल में वह जूँ बढ़ती रही और एक मोटी बिल्ली जैसी मोटी हो गयी। वह चौबीस घंटे एक कुर्सी पर बैठी रहती। कुछ दिनों बाद तो वह एक मोटे सूअर के बराबर मोटी हो गयी तो राजा को उसको एक आराम कुर्सी पर बिठाना पड़ गया।

और कुछ दिनों बाद वह एक बछड़े के बराबर मोटी हो गयी तो उसको जानवरों के घर में रखना पड़ा। पर वह जूँ तो बराबर बढ़ती ही जा रही थी सो जल्दी ही वह जानवरों का घर भी उसके लिये छोटा पड़ने लगा।

अब राजा ने उसको मरवा दिया। उसकी खाल निकलवा ली और उस खाल को महल के दरवाजे पर टाँग दिया।

---

[39] Louse Hide. Tale No 104. A folktale from Italy from its Rome area.

फिर उसने अपने राज्य भर में मुनादी पिटवा दी कि जो कोई यह बतायेगा कि वह खाल किस जानवर की है वह अपनी बेटी की शादी उसी से कर देगा। पर जिसने भी गलत बताया तो उसको वह मौत की सजा दे देगा।

जैसे ही वह मुनादी पिटी आदमियों की एक लम्बी लाइन राजा के महल के दरवाजे पर लग गयी। सभी उस जानवर का नाम बता कर राजकुमारी से शादी करना चाहते थे।

पर किसको यह अन्दाजा था कि वह जूँ की खाल होगी सो कोई भी उस खाल के जानवर का सही नाम नहीं बता सका और सब मारे गये। फॉसी देने वाले दिन रात लोगों को फॉसी चढ़ाने पर लगे हुए थे।

मजे की बात यह थी कि राजकुमारी को खुद को भी यह पता नहीं था कि वह खाल किसकी है।

राजा की बेटी का एक प्रेमी था। उसका वह प्रेमी राजा की बेटी से शादी करने के लिये बहुत बेचैन था। राजा को अपनी बेटी के उस प्रेमी के बारे में पता नहीं था।

तभी राजा की बेटी को किसी नौकर से यह पता चला कि वह खाल जूँ की थी। सो रोज की तरह जब उसका प्रेमी शाम को उससे खिड़की के नीचे मिलने आया तो उसने उसको फुसफुसा कर यह बताया — "कल तुम मेरे पिता के पास जाना और उनको कहना कि यह खाल जूँ की है।"

पर राजकुमारी की आवाज बहुत धीमी होने की वजह से उसका वह प्रेमी उसके शब्द ठीक से नहीं सुन सका।

वह बोला — "तुमने क्या कहा चूहा? एक बड़ा सा चूहा?"[40]

राजकुमारी थोड़ी ज़ोर से बोली — "नहीं, जूँ।"

"क्या? तीतर?"[41]

अबकी बार वह चिल्लायी — "नहीं, जूँ, जूँ।"

"अच्छा, अच्छा, अब मैं समझ गया। ठीक है मैं कल देखूँगा।" कह कर वह वहाँ से चला गया।

अब राजा की बेटी की खिड़की के नीचे एक कुबड़ा जूता ठीक करने वाला बैठता था। वह ये सब बातें सुन रहा था। यह सुन कर उसने अपने मन में कहा — "अब देखता हूँ कि तुझसे कौन शादी करता है, मैं या वह तेरा प्रेमी।"

उसने अपना सामान तो वहीं छोड़ा और तुरन्त ही वहाँ से राजा के पास भागा गया और वहाँ जा कर बोला — "राजा साहब, राजा साहब, मैं यहाँ इसलिये आया हूँ कि आपकी उस खाल के जानवर के नाम का अन्दाजा लगा सकूँ।"

राजा बोला — "ख्याल रखना। बहुत सारे आदमी पहले ही मारे जा चुके हैं।"

[40] Joon is called Louse in English language and Choohaa is called Mouse, so because of her low voice he confused the word Louse with Mouse.

[41] Translated for the word "Grouse" – thus all the three words sound similar.

कुबड़ा बोला — “यह तो हम अभी देखेंगे कि मैं भी मरता हूँ कि नहीं।”

राजा ने उस कुबड़े को वह खाल दिखायी तो उस कुबड़े ने पहले तो उसको अच्छी तरह से देखने का नाटक किया, फिर उसको सूँघा, फिर सिर खुजलाया और फिर कुछ सोच कर बोला — “राजा साहब, इसके जानवर को पहचानने में तो बहुत देर नहीं लगेगी। यह तो जूँ की खाल है।”

राजा तो उस कुबड़े की होशियारी देख कर दंग रह गया। हालाँकि उसकी समझ में इसका राज़ तो नहीं आ सका पर वायदा तो वायदा होता है इसलिये बिना एक शब्द कहे उसने अपनी बेटी को बुला भेजा और तुरन्त ही उसको उस कुबड़े की पत्नी घोषित कर दी।

बेचारी राजकुमारी जिसको इस बारे में पूरा विश्वास था कि वह अगले दिन अपने प्रेमी से ही शादी कर पायेगी अब बहुत ही दुखी थी।

वह छोटा कुबड़ा अब राजा बन गया और वह राजकुमारी उसकी रानी बन गयी। पर उसके साथ रहने से राजकुमारी की ज़िन्दगी की सारी खुशियाँ चली गयीं।

उसकी दासियों में से एक बूढ़ी दासी थी जो अपनी रानी को हँसते हुए देखने के लिये कुछ भी कर सकती थी।

सो एक दिन सुबह उसने रानी से कहा — "रानी जी, मैंने कल तीन कुबड़े शहर में नाचते गाते खेलते घूमते हुए देखे और उनको देख कर सब हॅस रहे थे। आप क्या सोचती हैं कि मैं उनको यहॉ शाही महल में ले आऊॅ ताकि वे आपका थोड़ा दिल बहला दें?"

रानी बोली — "तुम पागल हुई हो क्या? अगर वह कुबड़ा राजा यहॉ आ गया और उसने उनको देख लिया तो वह क्या कहेगा। वह सोचेगा कि हमने उन कुबड़ों को यहॉ उसकी हॅसी उड़ाने के लिये बुलाया है।"

दासी ने जवाब दिया — "आप चिन्ता न करें अगर राजा साहब यहॉ आ गये तो हम उन कुबड़ों को एक बक्से में बन्द कर देंगे।"

सो वे तीन कुबड़े गवैये महल में रानी के पास आये और रानी को शाही तरीके से हॅसाने की कोशिश करने लगे। रानी भी उनकी बातों पर बहुत हॅसी, बहुत हॅसी।

पर जब वे राजकुमारी को हॅसा रहे थे तभी बीच में राजा आ गये और दरवाजे पर आहट हुई।

दासी ने तीनों कुबड़ों को गर्दन से पकड़ा और एक बड़ी सी आलमारी में बन्द कर के उसका दरवाजा बन्द कर दिया।

और रानी राजा के लिये यह कहती हुई दरवाजा खोलने के लिये चली गयी "ठीक है, ठीक है मैं आ रही हूॅ।" राजा अन्दर आ गये। उन्होंने दोनों ने मिल कर रात का खाना खाया और फिर घूमने के लिये चले गये।

अगला दिन वह दिन था जब राजा और रानी आने वालों से मिला करते थे। उस दिन रानी और उसकी दासी दोनों ही उन कुबड़ों को भूल गये।

तीसरे दिन रानी ने अपनी दासी से कहा — "अरे उन कुबड़ों का क्या हुआ?"

दासी चिल्लायी — "अरे उनके बारे में तो मैं बिल्कुल भूल ही गयी थी। पर वे तो अभी भी आलमारी में ही होंगे कहाँ जायेंगे।"

वह तुरन्त ही भागी भागी अन्दर गयी और जा कर वह आलमारी खोली तो देखा कि वे तीनों कुबड़े तो मरे पड़े थे। वे खाना न खाने और हवा न मिलने की वजह से मर गये थे।

रानी तो यह देख कर बहुत डर गयी वह बोली — "अब क्या करें?"

दासी बोली — "आप चिन्ता न करें, मैं इसका भी कुछ तरीका निकालती हूँ।"

उसने एक कुबड़े को उठाया और एक थैले में रख दिया फिर उसने एक सामान उठाने वाले को बुलाया और उससे कहा — "देखो इस थैले में एक चोर है। यह शाही जवाहरात चुरा कर भाग रहा था सो मैंने इसको एक झापड़ मार कर ही मार दिया।"

फिर उसने उसको वह थैला खोल कर दिखाया जिसमें से उसका कूबड़ दिखायी दे रहा था।

वह आगे बोली — "अब तुम इसको अपनी पीठ पर लाद कर ले जाओ और छिपा कर इसको नदी में फेंक देना। देखो किसी को पता न चले क्योंकि हम कोई हल्ला गुल्ला नहीं चाहते। जब तुम वापस आओगे तब मैं तुमको बहुत सारे पैसे दूँगी।"

उस बेचारे ने वह थैला अपनी पीठ पर लटकाया और नदी की तरफ चल दिया। इस बीच उस दासी ने दूसरे कुबड़े को भी एक थैले में बन्द कर दिया और दरवाजे के पास ही रख दिया।

वह सामान ले जाने वाला अपने पैसे लेने के लिये आया तो दासी ने कहा — "अभी मैं तुमको पैसे कैसे दे दूँ जबकि वह कुबड़ा तो अभी भी यहीं है क्योंकि तुम यह थैला तो ले कर ही नहीं गये।"

नौकर तो यह सुन कर आश्चर्य में पड़ गया कि अभी अभी तो वह थैला फेंक कर आ रहा है और यह दासी कह रही है कि मैं थैला तो ले कर ही नहीं गया। यह क्या मामला है।

वह बोला — "हम लोग यह कौन सा खेल खेल रहे हैं। मैं अभी तो उस थैले को नदी में फेंक कर आया हूँ।"

"देखो यह सबूत है कि तुमने अपना काम ठीक से नहीं किया नहीं तो यह थैला यहाँ नहीं होता।" कह कर उसने नौकर को वह दूसरा थैला खोल कर दिखा दिया।

अपना सिर हिलाते हुए और बुड़बुड़ाते हुए उसने वह थैला उठाया और फिर एक बार नदी की तरफ चल दिया। जब वह

दोबारा शाही महल वापस लौटा तो एक और थैला उसका इन्तजार कर रहा था और वह दासी फिर से उसके ऊपर नाराज थी।

"क्या मैं गलत बोल रही हूँ? तुमको पता नहीं है कि लाश को नदी में कैसे फेंकते हैं? क्या तुम देख नहीं रहे कि यह थैला फिर से वापस आ गया है?"

"पर इस बार तो नदी में फेंकने से पहले मैंने उस थैले में एक पत्थर भी बॉधा था।"

"अबकी बार दो पत्थर बॉधना तब देखते कि यह कैसे वापस आता है। और अबकी बार मैं तुमको न केवल पैसे दूँगी बल्कि तुमको और भी बहुत कुछ दूँगी।"

सो एक बार फिर वह नौकर उस थैले को ले कर नदी की तरफ गया और उसने उसमें दो पत्थर बॉधे और तीसरे कुबड़े को भी नदी में फेंक दिया।

वह वहॉ खड़े हो कर देखता रहा कि वह थैला ऊपर आता है या नहीं। जब उसने यह पक्का कर लिया कि वह थैला डूब गया तब वह वहॉ से चला आया।

जब वह महल में घुस रहा था तो रास्ते में उसको कुबड़ा राजा मिल गया। उसने उसको देखा तो सोचा "अरे यह कुबड़ा तो लगता है कि फिर वापस आ गया। और अब वह चुड़ैल दासी तो मुझे जरूर ही पीटेगी।

यह सोचते हुए उसने गुस्से में कुछ न सोचते हुए कुबड़े राजा को गर्दन से पकड़ा और चिल्लाया — "ओ कुबड़े मुझे तुझे और कितनी बार नदी में फेंकना पड़ेगा? मैंने तुझे एक पत्थर बॉधा और तू वापस आ गया। फिर मैंने तुझे दो पत्थर बॉधे और तू फिर भी वापस आ गया।

तू मुझे इतना परेशान करने वाला कैसे हो सकता है? अबकी बार मैं तेरा ठीक से काम तमाम करता हूँ।"

इतना कह कर उसने अपने हाथ उस कुबड़े राजा की गर्दन पर रखे और उसको दबा दिया। फिर उसने उसको गर्दन से पकड़ा और उसे नदी की तरफ घसीटता हुआ ले चला। वहॉ जा कर उसने उसके पैरों में चार पत्थर बॉधे और ज़ोर से घुमा कर पानी में फेंक दिया।

जब रानी ने सुना कि उसका कुबड़ा पति वहीं चला गया है जहॉ वे तीन कुबड़े गये थे तो उसने उस नौकर को बहुत सारा पैसा, सोना, जवाहरात, सूअर, चीज़[42] और शराब दी।

अब तो अपने प्रेमी से शादी करने में उसको कोई परेशानी ही नहीं थी सो उसने उससे शादी कर ली और आराम से राज किया।

[42] Cheese – processed Indian Paneer made of milk. It is eaten in a variety of ways in western world.

9 तीन अनारों से प्यार[43]

एक बार एक राजा का बेटा शाम को मेज पर बैठा खाना खा रहा था कि रिकोटा चीज़[44] काटते समय वह अपनी उंगली काट बैठा।

उस कटी हुई जगह से एक बूँद खून टपक कर चीज़ के ऊपर गिर गया। यह देख कर उसने अपनी माँ से कहा — "माँ मुझे दूध जैसी सफेद और खून जैसी लाल पत्नी चाहिये।"

माँ बोली — "क्यों मेरे बेटे। जो कोई लड़की इतनी गोरी होगी वह इतनी लाल नहीं होगी और जो इतनी लाल होगी तो वह इतनी गोरी नहीं होगी। पर फिर भी तुम दुनियाँ में घूमो और ऐसी लड़की की तलाश करो शायद तुमको ऐसी कोई लड़की मिल जाये।"

सो राजा का बेटा ऐसी दुलहिन ढूँढने चल दिया। कुछ दूर जाने के बाद उसको एक स्त्री मिली। उसने राजकुमार से पूछा — "ओ नौजवान, तुम कहाँ जा रहे हो?"

राजकुमार बोला — "मैं अपना भेद एक स्त्री पर प्रगट नहीं करता।" और यह कह कर वह आगे बढ़ गया।

आगे जा कर उसको एक बूढ़ा मिला। उसने भी राजकुमार से यही पूछा — "बेटे, तुम कहाँ जा रहे हो?"

[43] The Love of the Three Pomegranates. Tale No 107. A folktale from Abruzzo area, Italy, Europe.

[44] Ricotta cheese is a kind of processed Indian Paneer used in western world.

राजकुमार बोला — “हॉ, मैं आपको तो यह बता सकता हूँ कि मैं कहॉ जा रहा हूँ। जनाब आप सुनें, मैं एक ऐसी लड़की की तलाश में हूँ जो दूध जैसी सफेद भी हो और खून जैसी लाल भी हो।”

बूढ़ा बोला — “बेटे, जो खून जैसी लाल होगी वह दूध जैसी सफेद नहीं होगी और जो दूध जैसी सफेद होगी तो वह खून जैसी लाल नहीं होगी।

खैर, तुम ऐसा करो कि तुम ये तीन अनार ले लो। इनको तोड़ना और देखना कि इनमें से क्या निकलता है। पर ध्यान रहे कि इनको किसी फव्वारे के या पानी के पास ही तोड़ना।”

राजकुमार ने उस बूढ़े से वे तीनों अनार ले लिये और आगे चल दिया। आगे चल कर एक फव्वारे के पास उसने उनमें से एक अनार तोड़ा तो उसमें एक लड़की निकली जो दूध जैसी सफेद और खून जैसी लाल थी।

वह लड़की निकलते ही चिल्लायी — “ओ नौजवान, मुझे पानी दो वरना मैं मर जाऊॅगी।”

राजकुमार ने अपने दोनों हाथों को पानी में डुबो कर उनमें पानी भरा और उसको दिया पर वह सुन्दर लड़की यह कहते हुए कि उसको पानी देने में देर हो गयी वहीं मर गयी।

फिर उसने दूसरा अनार तोड़ा तो उसमें से एक और सुन्दर लड़की निकली। यह लड़की भी दूध की तरह सफेद और खून की

तरह लाल थी। उसने भी निकलते ही कहा — "ओ नौजवान, मुझे पानी दो वरना मैं मर जाऊँगी।"

वह उसके लिये भी पानी ले कर आया पर फिर भी पानी लाने में उसको देर हो गयी और वह लड़की भी वहीं मर गयी। राजकुमार को बड़ा दुख हुआ सो अबकी बार उसने तीसरा अनार तोड़ने से पहले ही फव्वारे से पानी ला कर रख लिया।

अब उसने तीसरा अनार तोड़ा तो उसमें से भी एक सुन्दर लड़की निकली। यह लड़की भी दूध की तरह सफेद और खून की तरह लाल थी। यह पिछली दोनों लड़कियों से ज़्यादा सुन्दर थी।

इस बार राजकुमार ने तुरन्त ही उसके मुँह पर पानी फेंका और वह ज़िन्दा रही। उसने कोई कपड़ा नहीं पहना हुआ था सो राजकुमार ने उसको अपना शाल[45] ओढ़ा दिया।

फिर राजकुमार ने उस लड़की से कहा — "तुम इस पेड़ पर चढ़ जाओ तब तक मैं तुम्हारे पहनने के लिये कुछ कपड़े और तुमको ले जाने के लिये एक गाड़ी ले कर आता हूँ।"

यह कह कर वह राजकुमार तो चला गया और वह लड़की उस फव्वारे के पास लगे हुए एक पेड़ पर चढ़ कर बैठ गयी।

[45] Translated for the word "Cloak". See its picture above.

एक मुस्लिम खानाबदोश[46] लड़की उस फव्वारे पर रोज पानी भरने आया करती थी। वह उस दिन भी वहाँ पानी भरने आयी। जैसे ही उसने अपना मिट्टी का घड़ा फव्वारे के पानी में पानी भरने के लिये डुबोया तो उस पानी में उसको उस लड़की के चेहरे की परछाईं दिखायी दी।

उसको लगा कि वह परछाईं उसके अपने चेहरे की है सो वह एक लम्बी सी साँस भर कर बोली —

वह मैं जो खुद बहुत सुन्दर हूँ पानी का बर्तन ले कर घर जाऊँ?

और यह कह कर उसने वह बर्तन तुरन्त ही पानी में से निकाल लिया और जमीन पर पटक दिया। बर्तन मिट्टी का था सो जमीन पर गिरते ही टूट गया। वह बिना पानी और बिना बर्तन लिये ही घर चली गयी।

जब वह घर पहुँची तो उसकी मालकिन ने उसको खाली हाथ आते देख कर गुस्से से डाँटा — "ओ बदसूरत खानाबदोश, तेरी हिम्मत कैसे हुई बिना पानी लिये घर वापस आने की? और तू तो बर्तन भी नहीं लायी? कहाँ है बर्तन?"

सो उस खानाबदोश लड़की ने एक और मिट्टी का बर्तन उठाया और फिर फव्वारे पर लौट गयी। जब वह अपने बर्तन में फिर पानी

[46] Translated for the word "Saracen" – this word was used in Europe for Muslim nomads in those times.

भरने लगी तो फिर उसको वही परछाईं दिखायी दी। उसको फिर लगा कि वह अपने चेहरे की परछाईं पानी में देख रही है सो वह फिर बोली —

मैं इतनी सुन्दर और पानी का बर्तन ले कर घर जाऊँ?

उसने फिर अपना मिट्टी का बर्तन जमीन पर पटक दिया। वह बर्तन भी मिट्टी का था सो वह भी जमीन पर गिरते ही टूट गया और वह फिर बिना पानी और बिना बर्तन के घर चली गयी।

उसकी मालकिन ने फिर उसको इस तरह खाली हाथ आने और दो बर्तन खोने के लिये बहुत डॉटा तो उसने फिर एक और बर्तन उठाया और फिर पानी भरने के लिये फव्वारे पर चली गयी।

फिर उसने पानी लेने के लिये बर्तन फव्वारे के पानी में डुबोया तो फिर उस लड़की की परछाईं पानी में देख कर फिर उसने वह बर्तन तोड़ दिया।

अब तक वह लड़की पेड़ पर चुपचाप बैठी थी पर अबकी बार जब उसने वह बर्तन तोड़ा तो वह हॅस पड़ी। उसकी हॅसी की आवाज सुन कर उस खानाबदोश लड़की ने ऊपर की तरफ देखा तो वहॉ तो एक बहुत सुन्दर लड़की बैठी थी।

वह चिल्लायी — "ओह तो वह तुम हो। तुमने ही मेरे तीन बर्तन तुड़वाये और यह चौथा भी तुड़वाने वाली थी। पर तुम वाकई

बहुत सुन्दर हो। मुझे तुम्हारे बाल बहुत अच्छे लग रहे हैं। आओ तुम नीचे आओ मैं तुम्हारे बाल सॅवार दूॅ।"

वह लड़की पेड़ से नीचे उतरना नहीं चाहती थी परन्तु बदसूरत खानाबदोश लड़की ने उससे पेड़ से नीचे उतरने की बहुत जिद की — "तुम मेरे पास आओ न, मैं तुम्हारे बाल बना दूॅ। इससे तुम और भी ज़्यादा सुन्दर लगोगी।"

कहते हुए उस बदसूरत खानाबदोश लड़की ने उसको उसका हाथ पकड़ कर पेड़ से नीचे उतार लिया। उसने उसके बाल खोले तो उसको उसके बालों में लगी एक पिन दिखायी दे गयी। उसने वह पिन उस बेचारी लड़की के कान में ठूॅस दी।

इससे उस लड़की के कान में से एक बूॅद खून निकल कर नीचे गिर पड़ा और वह मर गयी। पर जब वह खून की बूॅद जमीन पर पड़ी तो वह एक कबूतरी[47] बन गयी और उड़ गयी।

इस तरह उस लड़की को मार कर और उसके कपड़े पहन कर वह बदसूरत खानाबदोश लड़की खुद पेड़ पर चढ़ कर बैठ गयी।

थोड़ी देर में राजकुमार गाड़ी और कपड़े ले कर वापस आ गया और बदसूरत खानाबदोश की तरफ आश्चर्य से देख कर बोला — "अरे तुम तो दूध जैसी सफेद और खून जैसी लाल थीं। तुम इतनी सॉवली कैसे हो गयीं?"

---

[47] Translated for the word "Wood Pigeon". See its picture above.

बदसूरत खानाबदोश लड़की बोली — “जब सूरज बाहर निकला तो धूप की वजह से मैं सॉवली पड़ गयी।”

“पर तुम्हारी तो आवाज भी बदली हुई है, वह कैसे बदल गयी?

इसके जवाब में वह खानाबदोश लड़की बोली — “हवा ज़ोर से चली और उसी ने मेरी आवाज ऐसी कर दी।”

“पर तुम तो बहुत सुन्दर थीं और अब तो तुम बहुत ही बदसूरत लग रही हो।”

इसके जवाब में वह बोली — “तभी ठंडी हवा चली जिसने मेरे चेहरे को जमा दिया।”

इन जवाबों से राजकुमार को विश्वास हो गया कि वह वही लड़की थी जिसको वह छोड़ कर गया था और वह उसको गाड़ी में बिठा कर अपने घर ले गया। महल में आ कर राजकुमार ने उससे शादी कर ली। अब वह राजकुमार की पत्नी बन गयी।

उधर वह कबूतरी रोज सुबह राजकुमार के शाही रसोईघर की खिड़की पर आ कर बैठ जाती और रसोइये से कहती — “ओ शापित रसोईघर के रसोइये, तू मुझे बता कि राजकुमार इस समय उस बदसूरत खानाबदोश लड़की के साथ क्या कर रहा है?”

शाही रसोइया जवाब देता — “वह खाता है, पीता है और सो जाता है, बस।”

कबूतरी फिर कहती — “तू मुझे थोड़ा सा सूप दे दे तो मैं तुझे सोने के आलूबुखारे[48] दूँगी।”

रसोइया उसको एक कटोरा भर के सूप देता और वह कबूतरी सूप पी कर अपने को हिला डुला कर अपने कुछ सोने के पंख नीचे गिरा देती और उड़ जाती।

पर अगली सुबह वह फिर आ जाती और फिर रसोइये से पूछती — “ओ शापित रसोईघर के रसोइये, तू मुझे बता कि राजकुमार इस समय उस बदसूरत खानाबदोश लड़की के साथ क्या कर रहा है?”

शाही रसोइया फिर वही जवाब देता — “वह खाता है, पीता है और सो जाता है, बस।”

कबूतरी फिर कहती — “तू मुझे थोड़ा सा सूप दे दे तो मैं तुझे सोने के आलूबुखारे दूँगी।”

रसोइया फिर उसको एक कटोरा भर के सूप देता, वह उस सूप को पीती और फिर अपने को हिला डुला कर अपने कुछ सोने के पंख गिरा देती और उड़ जाती।

कुछ समय बाद रसोइये ने सोचा कि वह राजा के पास जा कर यह सब राजा को बताये। सो वह राजा के पास गया और उसने जा कर उसको सारी कहानी सुनायी।

---

[48] Translated for the word “Plums”.

राजा ने उसकी कहानी ध्यान से सुनी और बोला — “कल जब वह कबूतरी तुम्हारे पास आये तो उसको पकड़ लेना और मेरे पास ले आना। मैं उसको अपने पास रखूँगा।”

बदसूरत खानाबदोश लड़की उन दोनों की बात सुन रही थी। वह यह जान गयी कि उसने उस कबूतरी को वहाँ से उड़ जाने देने की गलती कर ली थी। पर अब वह क्या करे?

सो अगले दिन सुबह जब वह कबूतरी खिड़की पर आ कर बैठी तो उस खानाबदोश लड़की ने रसोइये को खूब पीटा और उस कबूतरी के शरीर में लोहे की एक सलाई घुसा कर उसे मार डाला।

इससे कबूतरी तो मर गयी पर उसके खून की एक बूँद खिड़की के बाहर जमीन पर गिर पड़ी। उस बूँद से तुरन्त ही वहाँ अनार का एक पेड़ उग आया।

अनार के इस पेड़ में एक जादू था कि जो भी मर रहा हो अगर वह इस पेड़ का एक अनार खा ले तो वह ज़िन्दा हो जाता था। इस लिये उस बदसूरत खानाबदोश लड़की के पास उस पेड़ का एक अनार लेने के लिये एक लम्बी लाइन लगी रहती।

आखीर में उस पेड़ के सब अनार खत्म हो गये और उस पेड़ पर केवल एक अनार रह गया। वह अनार उन सब अनारों में सबसे बड़ा था जो उस पेड़ पर पहले लगे थे। सो उस खानाबदोश लड़की

ने सबको यह कह दिया कि अब इस पेड़ के सारे अनार खत्म हो गये हैं और अब यह आखिरी अनार मैं अपने लिये रखूँगी।

एक दिन एक बुढ़िया वहाँ आयी और उस खानाबदोश लड़की से बोली — "रानी जी, मेहरबानी कर के यह अनार मुझे दे दीजिये। मेरे पति की हालत बहुत खराब है। अगर यह अनार आप मुझे दे देंगी तो मेरे पति बच जायेंगे।"

वह खानाबदोश लड़की बोली — "अब इस पेड़ पर बस यह एक ही अनार बचा है और इसको अब मैंने सजावट के लिये यहाँ रखा हुआ है।"

पर राजकुमार ने उसको ऐसा करने से मना किया। वह बोला — "उस बेचारी बुढ़िया के पति की हालत बहुत खराब है। तुमको उसको अनार देने से मना नहीं करना चाहिये।"

इस तरह राजकुमार ने उस खानाबदोश लड़की से उस आखिरी अनार को उस बुढ़िया को दिलवा दिया। बुढ़िया खुशी खुशी वह अनार ले कर घर चली गयी।

पर घर जा कर उसने देखा कि उसका पति तो तब तक मर गया था। उसने सोचा "तो अब मैं इस अनार को सजावट के लिये ही रख लेती हूँ" और वह उसने एक खुली आलमारी में रख दिया। उस अनार में वह लड़की रहती थी।

वह बुढ़िया रोज "मास"[49] पढ़ने चर्च जाती थी। जब वह मास पढ़ने के लिये चली जाती तो वह लड़की उस अनार में से निकलती।

वह उस बुढ़िया के लिये आग जलाती, उसका घर साफ करती और उसके लिये खाना बनाती। खाना बना कर उसको उसकी खाने की मेज पर लगाती और यह सब कर के वह फिर अपने अनार में चली जाती।

वह बुढ़िया जब घर वापस आती तो अपना घर ठीक ठाक पा कर और अपने लिये खाना बना देख कर बहुत चकित होती। एक दिन वह चर्च के कनफैशन के कमरे[50] में गयी और अपने कनफैशन सुनने वाले से जा कर उसे सब कुछ बताया।

वह बोला — "तुम ऐसा करो कि कल तुम मास जाने का केवल बहाना बनाओ पर अपने घर में या फिर अपने घर के आस पास ही कहीं छिप जाओ और फिर देखो कि तुम्हारे घर में क्या क्या होता है। इस तरीके से तुम जान पाओगी कि तुम्हारे घर में यह सब काम कौन करता है।"

अगले दिन उस कनफैशन सुनने वाले की सलाह मान कर उस बुढ़िया ने मास जाने का केवल बहाना ही किया। वह घर के बाहर

---

[49] Mass is a kind of C hristian worship

[50] Confession Box – it is a place in the Church where normally a sinner accepts his or her mistakes and sins and promises not to do it again in front of a priest, but there is curtain between them so they cannot see each other that who is confessing and who is hearing.

तक गयी और दरवाजे के बाहर तक जा कर रुक गयी और एक ऐसी जगह जा कर खड़ी हो गयी जहाँ से वह अपना घर अच्छी तरह से देख सकती थी।

उसके जाने के बाद वह लड़की रोज की तरह अपने अनार में से निकली और उस बुढ़िया के घर का काम करना शुरू कर दिया।

तभी वह बुढ़िया घर के अन्दर आ गयी। बुढ़िया को देख कर वह लड़की अपने अनार के अन्दर घुसने की कोशिश करने लगी पर उस बुढ़िया ने उसे अनार के अन्दर जाने से पहले ही पकड़ लिया।

बुढ़िया ने पूछा — "तुम कहाँ से आयी हो?"

वह लड़की बोली — "भगवान आपको सुखी रखे, मुझे मारना नहीं, मुझे मारना नहीं।"

बुढ़िया प्यार से बोली — "मैं तुमको मारूँगी नहीं पर मैं यह जानना चाहती हूँ कि तुम आयी कहाँ से हो?"

लड़की बोली — "मैं इस अनार के अन्दर रहती हूँ।" और उसने बुढ़िया को अपनी सारी कहानी सुना दी।

उसकी कहानी सुन कर उस बुढ़िया ने उसको अपने जैसी किसान लड़की की पोशाक पहनायी क्योंकि इस लड़की ने अभी भी कपड़े नहीं पहन रखे थे।

अगले रविवार को वह उसको मास के लिये चर्च ले गयी। वहाँ पर राजकुमार भी आता था। उसने उस लड़की को देखा तो उसके मुँह से निकला — "हे भगवान, मुझे तो अपनी आँखों पर विश्वास

ही नहीं हो रहा कि यह वही लड़की है जिससे मैं फव्वारे पर मिला था।"

सो मास खत्म हो जाने के बाद उसने चर्च के बाहर उस बुढ़िया का इन्तजार करने का निश्चय किया। जब वह बुढ़िया चर्च के बाहर निकली तो राजकुमार ने उससे पूछा — "मुझे सच सच बताइये माँ जी कि यह लड़की आपके पास कहाँ से आयी?"

"सरकार मुझे मारियेगा नहीं।"

राजकुमार बहुत बेचैनी से बोला — "नहीं नहीं, मैं आपको बिल्कुल नहीं मारूँगा। बस आप मुझे यह बता दें कि यह लड़की आपके पास आयी कहाँ से?"

बुढ़िया फिर भी डरते डरते बोली — "यह लड़की उस अनार में से निकली है जो आपने मुझे दिया था।"

राजकुमार फिर बोला — "तो यह भी अनार में थी?"

फिर वह उस लड़की से बोला — "पर तुम इस अनार में घुसी कैसे?"

इस पर उसने राजकुमार को अपनी सारी कहानी सुना दी। राजकुमार उस लड़की को ले कर महल वापस लौटा और सीधा उस खानाबदोश लड़की के पास गया। उसने उस अनार वाली लड़की से उस खानाबदोश लड़की के सामने एक बार फिर अपनी कहानी सुनाने को कहा।

जब अनार वाली लड़की ने अपनी कहानी खत्म कर दी तो राजकुमार ने खानाबदोश लड़की से कहा — "सुना तुमने? मैं अपने हाथों से तुमको मारना नहीं चाहता इसलिये अच्छा है कि तुम खुद ही मर जाओ।"

खानाबदोश लड़की ने देखा कि अब कोई और रास्ता नहीं रह गया है तो वह बोली "मेरे अन्दर लोहे की एक सलाई घुसा दो और मुझे शहर के चौराहे पर जला दो तो मैं मर जाऊँगी।" ऐसा ही किया गया।

इसके बाद राजकुमार ने उस अनार वाली लड़की से शादी कर ली और दोनों बहुत दिनों तक खुशी खुशी रहे।

10 खाल की बीमारी वाला आदमी[51]

एक बार एक राजा था जिसके कोई बच्चा नहीं था। इसी दुख में वह एक दिन एक जंगल से गुजर रहा था कि उसको सफेद घोड़े पर सवार एक नाइट[52] दिखायी दे गया।

नाइट ने पूछा — "मैजेस्टी, आप इतने उदास क्यों हैं?"

राजा बोला — "मेरे कोई लड़का नहीं है जो मेरा राज्य सँभाल सके। तो मेरे मरने के बाद मेरा राज्य तो चला ही जायेगा।"

नाइट बोला — "अगर आपको लड़का चाहिये तो मेरे साथ एक समझौता कीजिये। जब आपका यह बेटा पन्द्रह साल का हो जायेगा तो आप इसको यहीं इसी जंगल में इसी जगह ले कर आयेंगे और उसको मुझे दे देंगे।"

राजा बोला — "मैं कोई भी समझौता करने के लिये तैयार हूँ पर बस मुझे एक बेटा चाहिये।"

इस तरह राजा ने उस नाइट के साथ यह समझौता कर लिया कि जब उसका बेटा पन्द्रह साल का हो जायेगा तो वह उसको उसी जंगल में उसी जगह ले कर आयेगा और उस नाइट को दे देगा।

कुछ समय बाद राजा के घर एक बेटा पैदा हुआ। उसका यह बेटा बहुत छोटा सा बच्चा था। उसके बाल सुनहरी थे और उसकी

[51] The Mangy One. Tale No 110. A folktale from Italy from its Abruzzo area.

[52] Knight – a knight is a person granted an honorary title of knighthood by a monarch or other political leader for service to the Monarch or country, especially in a military capacity. See its picture above.

छाती पर एक सुनहरा क्रास बना हुआ था। दिन पर दिन वह बड़ा होता गया और उसकी अक्लमन्दी भी बढ़ती गयी।

पन्द्रह साल का होने से पहले ही उसने अपनी सारी पढ़ाई खत्म कर ली थी और वह हथियार चलाने में भी बहुत होशियार हो गया। पर उसकी पन्द्रहवीं सालगिरह से ठीक तीन दिन पहले ही राजा ने अपने आपको एक कमरे में बन्द कर लिया और रोता रहा और रोता रहा।

रानी को यह पता ही नहीं था कि राजा क्यों रोये जा रहा था। जब राजा ने उसको अपने समझौते के बारे में बताया जो बस तीन दिन में पूरा होने वाला था तब वह भी रोने लगी।

जब लड़के ने अपने माता पिता को रोते देखा तो वह भी परेशान हो गया। उसके पूछने पर पिता ने कहा — "बेटे, मैं अब तुमको उसी जंगल में उसी जगह ले कर जाऊँगा और तुम्हें तुम्हारे गौडफादर[53] को दे आऊँगा जिसने इस समझौते के अनुसार तुमको पैदा किया।"

अगले दिन पिता अपने बेटे को ले कर चुपचाप जंगल की तरफ चल दिया। तभी उनको दूसरे घोड़ों की टापों की आवाजें सुनायी दीं। यह उसी नाइट के सफेद घोड़ों की टापों की आवाजें थीं जिसको वह राजा अपने बेटे को देखने वाला था।

[53] Godfather - A godfather is a male godparent in many Christian traditions or a man arranged to be the legal guardian of a child in case the parents die before adulthood or the age of maturity.

जब वह नाइट पास आ गया तो राजा का बेटा उस नाइट के बराबर बराबर चल दिया। पिता ने बिना कुछ कहे रोते रोते अपना घोड़ा पलट कर घुमाया और अपने घर की तरफ वापस चल दिया।

वह लड़का उस अजनबी नाइट के साथ साथ चलता रहा। वह जंगल के ऐसे हिस्सों से गुजर कर जा रहा था जहाँ से पहले वह कभी नहीं गया था। चलते चलते आखिर वे लोग एक बड़े महल के पास आ गये।

वहाँ आ कर वह नाइट उस लड़के से बोला — "गौडसन, अबसे तुम यहाँ रहोगे। तुम इस घर के मालिक हो पर मैं तुमको केवल तीन बातों के लिये मना करूँगा – एक तो यह छोटी खिड़की कभी मत खोलना। दूसरे यह आलमारी कभी मत खोलना। और तीसरे नीचे घुड़साल में कभी मत जाना।"

आधी रात के समय वह गौडफादर अपने सफेद घोड़े पर सवार हुआ और चला गया फिर वह सुबह होने तक नहीं लौटा। तीन रात के बाद जब वह लड़का अकेला रह गया तो उसके मन में उत्सुकता जागी कि वह छोटी खिड़की खोल कर देखे कि उधर क्या है।

वह उस तरफ गया और उसने वह छोटी खिड़की खोली। उसके सामने वहाँ धुँआ और आग की लपटें दिखायी दे रही थीं। ऐसा इसलिये हुआ क्योंकि वह खिड़की नरक की तरफ खुलती थी। उस लड़के ने नरक की तरफ देखा कि शायद वह वहाँ किसी को पहचान सके।

ध्यान से देखने पर जानते हो उसको वहाँ कौन दिखायी दिया? वहाँ तो उसकी दादी थी। दादी ने भी अपने पोते को देखा तो वह नरक की गहराइयों से चिल्लायी — "ओ मेरे पोते, तुझे यहाँ कौन लाया है?"

लड़का बोला — "मेरा गौडफादर।"

"नहीं नहीं मेरे पोते। वह आदमी तेरा गौडफादर नहीं है। वह तो एक शैतान है। तू अपनी जान बचा कर भाग ले। आलमारी खोल और उसमें से एक चलनी ले, एक साबुन की टिक्की ले और एक कंघी ले।

फिर नीचे घुड़साल में जा। वहाँ तुझे तेरा अपना घोड़ा मिल जायेगा। उस पर सवार हो कर भाग जा। अगर तेरे पीछे वह शैतान आये तो ये तीनों चीज़ें एक एक कर के उसके रास्ते में फेंक देना। उसके बाद जोरडन नदी[54] आयेगी उसको पार करते ही तू उस शैतान के चंगुल से छूट जायेगा।"

यह सुन कर उस लड़के ने पहले आलमारी से एक चलनी, एक साबुन की टिक्की और एक कंघी निकाली फिर नीचे घुड़साल में गया, अपना घोड़ा ढूँढा और उस पर चढ़ कर वहाँ से भाग लिया। उसके घोड़े का नाम हौर्सरैडिश[55] था।

---

[54] Jordon River

[55] Horseradish – name of the Prince's horse

जब वह गौडफादर वापस आया तो उसने देखा कि उसका गौडसन तो वहाँ से जा चुका था और साथ में वह अपना घोड़ा भी ले गया था। फिर उसने देखा कि वह तो उसकी आलमारी में से उसका कुछ सामान भी ले गया था।

उसने बहुत सारी आत्माओं को जलते हुए कोयलों पर लुढ़काया और फिर वह भी उस भगोड़े के पीछे पीछे चल दिया।

उस नाइट का सफेद घोड़ा कुलाचें मारता हुआ दौड़ता चला जा रहा था। उसका अपना घोड़ा उस लड़के के हौर्सरैडिश घोड़े से भी सौ गुना तेज़ भाग रहा था और वह उसको जल्दी ही पकड़ भी लेता पर उसके गौडसन ने उसके और अपने बीच के रास्ते में कंघी फेंक दी।

उस कंघी ने जमीन पर गिरते ही रास्ते में एक बहुत बड़ा और घना जंगल पैदा कर दिया। गौडफादर को उसे पार करने में बहुत मुश्किल हुई इसके अलावा उसको पार करते करते उसको देर भी बहुत लग गयी।

आखिर जब वह जंगल से बाहर निकला तो उसको अपना गौडसन फिर से दिखायी पड़ा। गौडसन ने उसको अपने पीछे आते देखा तो अबकी बार उसने चलनी फेंक दी।

उस चलनी ने जमीन पर गिरते ही दलदल का एक बहुत बड़ा मैदान बना दिया। गौडफादर को इस मैदान को पार करने में भी बहुत परेशानी हुई और देर लग गयी।

किसी तरह से वह यहाँ से निकला तो फिर उसने अपने गौडसन को पकड़ा। अबकी बार उस लड़के ने साबुन की टिक्की फेंक दी। उस साबुन की टिक्की ने जमीन पर गिरते ही फिसलने वाले पहाड़ पैदा कर दिये। अब गौडफादर का घोड़ा जहाँ भी अपना पैर रखता वह वहाँ से बहुत नीचे तक फिसल जाता।

इस बीच वह लड़का जोरडन नदी तक आ पहुँचा था सो उसने अपने घोड़े को नदी के पानी में डाल दिया। घोड़ा तुरन्त ही नदी पार कर के उसके दूसरी पार पहुँच गया।

इस समय तक गौडफादर केवल पहाड़ पर चढ़ना शुरू ही कर रहा था। उस लड़के को न पकड़ पाने की वजह से वह बहुत गुस्सा था। और अब जोरडन नदी के पार तो वह जा भी नहीं सकता था। सो उसने खूब बिजली चमकायी, तेज़ हवा चलायी, तेज़ बारिश बरसायी, खूब ओले बरसाये।

पर वह लड़का क्योंकि जोरडन नदी पार कर चुका था इसलिये उसके इन सब जादुओं ने उसके ऊपर कोई असर नहीं किया। अब वह लड़का पुर्तगाल के राजा के शहर में पहुँच गया था।

राजकुमार की शादी

पुर्तगाल पहुँच कर वह पहचाना न जा सके इसलिये उसने अपने सुनहरी बाल छिपाने के लिये एक कसाई से एक बैल का ब्लैडर[56]

[56] Bladder is a part of the body in which urine is collected.

खरीद लिया और उसको अपने सिर पर लगा लिया। इससे वह ऐसा लगने लगा जैसे उसके सिर पर कोई खाल की बीमारी हो गयी हो।

वहाँ पहुँच कर उसने हौर्सरैडिश को एक घास के मैदान में चरने के लिये छोड़ दिया। उस घोड़े को अब कोई चुरा भी नहीं सकता था क्योंकि उस शैतान की घुड़साल में रहते रहते अब उसने आदमी खाना सीख लिया था।

बैल का ब्लैडर सिर पर ओढ़े ओढ़े वह लड़का पुर्तगाल के राजा के महल के आस पास घूम रहा था कि राजा के माली ने उसको देखा। उसने उस लड़के से बात की तो उसको पता चला कि वह कोई काम ढूँढ रहा था। उसने उस लड़के को अपनी सहायता के लिये रख लिया।

माली जब उसको घर ले कर आया तो उसको देख कर माली की पत्नी बहुत नाराज हुई क्योंकि वह ऐसे किसी भी आदमी को अपने घर में नहीं चाहती थी जिसको खाल का रोग हो रहा हो।

अपनी पत्नी को खुश करने के लिये उसने उस लड़के को पास के एक जंगल में रहने भेज दिया और उसने उस लड़के से कह दिया कि अब वह वहीं रहे क्योंकि वह यह नहीं चाहता था कि वह उसके घर में फिर से कदम रखे। सो वह लड़का जंगल में रहने चला गया।

रात को वह लड़का दबे पाँव अपनी झोंपड़ी में से निकला, अपने हौर्सरैडिश को खोला, एक राजा के बेटे की तरह अपना लाल

सूट पहना और अपने सिर से बैल के ब्लैडर को हटा दिया। ब्लैडर को हटाते ही उसके सुनहरी बाल चाँदनी में चमक उठे।

वह फिर शाही बागीचे में चला गया और वहाँ जा कर घूमता रहा और कुछ कुछ करता रहा – जैसे वह वे तीन छल्ले हवा में घुमाता रहा जो उसकी माँ ने उसे दिये थे।

उन तीनों छल्लों को वह अपनी तीनों बीच वाली उँगलियों में पहने रहता था। कभी वह उन छल्लों को हवा में उछाल कर अपनी तलवार की नोक पर टिका लेता था और कभी उनको ऐसे ही उछालता रहता।

इसी समय इत्तफाक से पुर्तगाल के राजा की बेटी अपनी खिड़की पर आ कर खड़ी हुई और चाँदनी रात में अपने बागीचे को देखने लगी। उसकी निगाह उस लड़के पर भी पड़ी – वह सुन्दर सुनहरे बालों वाला लाल पोशाक पहने लड़का जो ये सब करामातें कर रहा था।

उसने सोचा कि यह लड़का कौन हो सकता है? यह इस बागीचे में कैसे आया? मैं देखती हूँ कि यह कहाँ कहाँ जाता है? सो वह तब तक उसको देखती रही जब तक वह वहाँ से चल नहीं दिया।

जब वह वहाँ से चला तो सुबह होने वाली थी। वह बागीचे के उस दरवाजे से बाहर निकला जो घास के मैदान में जाने के लिये खुलता था। बाहर निकल कर उसने अपने घोड़े को घास चरायी और गायब हो गया।

राजकुमारी की ऑखें अभी भी उसका पीछा नहीं छोड़ रही थीं और बागीचे के दरवाजे पर ही लगी हुई थीं।

थोड़ी देर बाद उसने देखा कि वह खाल की बीमारी वाला लड़का जो माली की सहायता कर रहा था उसी दरवाजे से अन्दर चला आ रहा था। उसने अपनी खिड़की बन्द कर दी ताकि वह लड़का उसको न देख सके।

अगली रात राजकुमारी फिर अपनी खिड़की पर आ कर बैठ गयी और उस लड़के का इन्तजार करने लगी। आखिर उसने उस खाल की बीमारी वाले लड़के को जंगल में बनी झोंपड़ी से बाहर निकलते और फिर बागीचे के दरवाजे की तरफ आते देखा।

पर फिर कुछ मिनटों बाद ही उसने उस सुनहरे बालों वाले सवार को शाही बागीचे में उसी दरवाजे से अन्दर आते देखा। आज वह सफेद कपड़े पहने था।

आ कर उसने फिर अपनी करामातें शुरू कर दीं। और पिछली रात की तरह से आज भी वह सुबह होने से पहले ही वहाँ से चला गया।

पर कुछ मिनटों में ही वह खाल की बीमारी वाला लड़का वहाँ आ गया। राजकुमारी को शक हुआ कि जरूर ही इस खाल की बीमारी वाले लड़के में और उस सुनहरी बालों वाले लड़के में आपस में कुछ रिश्ता है।

तीसरी रात फिर ऐसा ही हुआ, सिवाय इसके कि आज वह सवार काले कपड़े पहन कर आया था। राजकुमारी को लगा कि यह खाल की बीमारी वाला लड़का और यह सवार दोनों एक ही हैं।

अगले दिन राजकुमारी खाल की बीमारी वाले लड़के के पास बागीचे में गयी और उससे कुछ फूल लाने के लिये कहा। लड़के ने फूलों के तीन गुच्छे बनाये – एक बड़ा, एक बीच का और एक छोटा। उसने उन तीनों गुच्छों को एक टोकरी में रखा और राजकुमारी की तरफ चला।

सबसे बड़ा वाला फूलों का गुच्छा तो राजकुमार की बीच वाली उँगली के छल्ले में रखा था और छोटा वाला उसकी सबसे छोटी वाली उँगली के छल्ले में लगा था और बीच वाला गुच्छा उसकी अँगूठी वाली उँगली के छल्ले में लगा हुआ था।

जब उसने ये तीनों गुच्छे राजकुमारी को दिये तो राजकुमारी ने ने वे तीनों छल्ले तुरन्त पहचान लिये। ये वे ही छल्ले थे जिनको रात में वह सूट वाला लड़का उछाल उछाल कर खेल रहा था। उस ने उस खाल की बीमारी वाले लड़के की टोकरी को सोने के डबलून[57] से भर दिया।

[57] Doubloon means "double". Means 2 or 32 real gold coins (6.77 gms) each. Doubloons were minted in Spain, Mexico, Peru and New Granada.

अगले दिन राजकुमारी ने खाल की बीमारी वाले लड़के से सन्तरे लाने के लिये कहा तो वह उसके लिये तीन सन्तरे लाया – एक पका हुआ, एक आधा पका और एक कच्चा।

राजकुमारी ने उन तीनों को मेज पर रखा तो राजा ने पूछा — “तुम यह कच्चा सन्तरा मेज पर क्यों रख रही हो?”

राजकुमारी बोली — “वह खाल की बीमारी वाला लड़का यही ले कर आया था।”

राजा बोला उसको अन्दर बुलाओ देखते हैं वह इसके बारे में क्या कहता है। सो उस खाल की बीमारी वाले लड़के को वहॉ बुलाया गया। जब वह वहॉ आया तो राजा ने उससे पूछा — “तुमने ये तीन तरह के सन्तरे क्यों तोड़े?”

वह लड़का बोला — “मैजेस्टी, आपके तीन बेटियॉ हैं। एक शादी के लायक है, दूसरी शादी के लिये अभी थोड़ी दूर है जबकि तीसरी की शादी को तो कई साल हैं।”

राजा बोला — “बिल्कुल ठीक।”

और फिर उसने यह मुनादी पिटवा दी — “जो भी मेरी सबसे बड़ी बेटी से शादी करना चाहता है वह यहॉ आये और फिर जिसको भी मेरी बेटी अपना रूमाल दे देगी वही उसका पति होगा।”

सो शाही खिड़की के नीचे राजाओं और राजकुमारों की एक बहुत बड़ी लाइन लग गयी। पहले राजाओं के परिवार के लोग

आये, फिर और दूसरे बड़े बड़े ओहदे वाले आये, फिर नाइट्स आये, फिर घुड़सवार और फिर पैदल आये।

और सबसे बाद में आया माली की सहायता करने वाला वह खाल की बीमारी वाला लड़का। राजकुमारी ने अपना रूमाल उसको दे दिया।

यह देख कर कि उसकी बेटी ने एक खाल की बीमारी वाले लड़के को चुन लिया है राजा ने अपनी बेटी को घर से निकाल दिया। राजकुमारी उस लड़के साथ रहने के लिये उसकी झोंपड़ी में चली गयी।

लड़के ने सोने के लिये उसको अपना पलंग दे दिया और अपने सोने के लिये एक काउच आग के पास रख दिया। उसने राजकुमारी से कहा कि एक खाल की बीमारी वाला तो राजा की बेटी के पास आने की भी हिम्मत नहीं कर सकता था।

राजकुमारी ने जब यह सुना तो उसको लगा कि कहीं इस लड़के को सचमुच ही खाल की बीमारी न हो। ओह मेरे भगवान, यह मैंने क्या किया। कहीं मुझसे वाकई गलती न हो गयी हो। और वह अपने चुनाव पर पछताने लगी।

राजकुमार की पोल खुली

इसी समय पुर्तगाल और स्पेन के राजाओं में लड़ाई छिड़ गयी और सारे आदमी लोग लड़ाई में लग गये। जबसे राजकुमारी ने उस खाल

की बीमारी वाले लड़के से शादी की थी तबसे बहुत सारे लोग उससे नाराज थे और जल रहे थे।

उन्होंने उस खाल की बीमारी वाली लड़के से कहा — "सारे आदमी लोग तो लड़ाई पर जा रहे हैं पर तुमने क्योंकि राजा की बेटी से शादी की है इसी लिये तुम यहाँ ठहर रहे हो।"

पर फिर भी उन्होंने उसको पहले से ही एक लंगड़ा घोड़ा देने का प्लान बना रखा था ताकि वह लड़का लड़ाई में मारा जाये। खाल की बीमारी वाले लड़के ने उनका दिया हुआ लंगड़ा घोड़ा लिया और मैदान की तरफ चला जहाँ उसका अपना घोड़ा हौर्सरैडिश घास चर रहा था।

वह फिर अपनी लाल पोशाक पहन कर तैयार हुआ, अपनी छाती पर एक प्लेट लगायी जो उसके पिता ने उसको दी थी और अपने हौर्सरैडिश घोड़े पर सवार हो कर लड़ाई के मैदान में चल दिया।

एक समय पर पुर्तगाल के राजा को स्पेन के सिपाहियों ने घेर लिया तो पुर्तगाल के सिपाहियों ने देखा कि लाल पोशाक पहने एक नाइट उनके राजा की रक्षा करने के लिये आ गया और उसने दुश्मनों के सिपाहियों को भगा कर उनके राजा की जान बचा ली।

इसके बाद दुश्मन का कोई भी सिपाही पुर्तगाल के राजा के पास आने की हिम्मत नहीं कर पा रहा था क्योंकि उस लाल पोशाक वाले की तलवार बाँये और दाँये दोनों तरफ से खूब तेज़ चल रही थी।

उधर उसके घोड़े को देख कर दुश्मनों के घोड़े भी डर रहे थे तो वे भी उसके घोड़े के पास आने की कोशिश नहीं कर पा रहे थे। इस तरह लड़ाई का पहला दिन खत्म हुआ।

राजकुमारी लड़ाई की खबर सुनने के लिये शाम को महल गयी। वहाँ जब उसने सुना कि एक सुनहरी बालों वाला लड़का जो लाल पोशाक पहने था बहुत बहादुरी से लड़ा और उसने उसके पिता जी की जान बचायी।

और उसी की वजह से पुर्तगाल जीत गया तो वह यह सोचे बिना न रह सकी कि यह तो मेरा ही नाइट है। वही घुड़सवार जिसको मैं रात को अपने बागीचे में देखती थी और उफ, अब मैंने एक खाल की बीमारी वाले को अपन पति चुन लिया है यह मैंने क्या किया है। यह सोच कर वह उदास सी अपनी झोंपड़ी में लौट आयी।

झोंपड़ी में आ कर उसने देखा कि उसका खाल की रोग वाला लड़का तो आग के पास वाले काउच पर पड़ा सो रहा है। उसने अपना वही पुराना शाल ओढ़ रखा था। उसको देख कर राजकुमारी रो पड़ी।

सुबह को उस खाल की बीमारी वाले लड़के ने फिर से अपना लॅगड़ा घोड़ा उठाया और लड़ाई के मैदान की तरफ चल दिया। पर पहले दिन की तरह से पहले वह घास के मैदान में गया।

वहाँ पहले उसने अपना लंगड़ा घोड़ा अपने हौर्सरैडिश से बदला। फिर अपना सफेद सूट पहना, उसके ऊपर अपनी छाती पर प्लेट लगायी। अपने सुनहरे बालों वाले सिर पर से बैल का ब्लैडर हटाया और लड़ाई के मैदान की तरफ चल दिया।

और उस दिन भी पुर्तगाल जीत गया।

तीसरे दिन वह सुनहरे बालों वाला नाइट अपनी काली पोशाक में गया। इस बार स्पेन का राजा खुद लड़ाई के मैदान में आया हुआ था अपने सात बेटों के साथ। सो वह सुनहरी बालों वाला नाइट उन सातों लड़कों के साथ एक साथ लड़ा।

उसने उन सबके साथ एक साथ लड़ाई लड़ी और सबको मार दिया पर सातवें बेटे ने मरने से पहले उसकी दाँयी बाँह को अपनी तलवार से जख्मी कर दिया।

लड़ाई खत्म हो जाने के बाद राजा उसके घाव की मरहम पट्टी करवाना चाहता था पर दूसरी शामों की तरह इस शाम भी वह वहाँ से गायब हो गया।

यह सुन कर कि वह सुनहरी बालों वाला नाइट जख्मी हो गया है राजा की बेटी को बहुत दुख हुआ क्योंकि वह अभी भी उस अजनबी से बहुत प्यार करती थी।

वह उस खाल की बीमारी वाले लड़के के लिये बुरा सोचते हुए घर गयी जहाँ वह रोज की तरह से अपना पुराना शाल ओढ़े आग के पास पड़े काउच पर सो रहा था।

पर जब वह उसकी तरफ देख रही थी तो उसको उसके शाल के नीचे की तरफ उसकी बॉह पर एक पट्टी बॅधी दिखायी दी। फिर उसने देखा तो शाल के नीचे वह एक कीमती काली पोशाक पहने था।

उसने यही नहीं देखा बल्कि उसने उसके बैल के ब्लैडर के नीचे उसके सुनहरी बाल भी देखे। क्योंकि वह लड़का उस दिन बहुत थका हुआ था और जख्मी था सो वह अपने कपड़े भी नहीं बदल पाया था और ऐसे ही आ कर काउच पर लेट गया था। लेटते ही उसको नींद आ गयी।

यह देख कर राजा की बेटी की तो खुशी और आश्चर्य से चीख निकलते निकलते रह गयी। वह दबे पॉव झोंपड़ी से बाहर निकली ताकि वह लड़का जाग न जाये और दौड़ती हुई अपने पिता के पास पहॅुची और बोली — "पिता जी, ज़रा आ कर देखिये तो कि आपको लड़ाई में किसने जिताया। आइये देखिये।"

राजा और उसका सारा दरबार राजकुमारी के पीछे पीछे उसकी झोंपड़ी तक आया और उस लड़के को देखा। सबके मुॅह से निकला — "अरे यह तो वही लड़का है।" राजा ने उस नाइट को उसके नकली वेश में भी पहचान लिया।

उन्होंने उसको जगाया और उसको अपने कन्धों पर ले गये होते पर राजा की बेटी ने चीरा लगाने वाले डाक्टर को वहीं बुला लिया और उसके घाव की मरहम पट्टी वहीं करवा दी।

राजा तो उनकी शादी वहीं और उसी समय करना चाहता था पर लड़के ने कहा — "अभी नहीं। पहले मुझे अपने माता पिता को बताना है कि क्योंकि मैं भी एक राजा का बेटा हूँ।" सो उस राजा ने वैसा ही किया।

उस लड़के के माता पिता ने तो यह सोच लिया था कि उनका बेटा मर गया पर वे अपने बेटे को ज़िन्दा देख कर बहुत खुश हुए और फिर सब लोग खुशी खुशी शादी की दावत में शामिल हुए। उन दोनों की शादी खूब धूमधाम से मनायी गयी।

11 तीन अन्धी रानियाँ[58]

एक बार तीन राजकुमार थे जिनके माता पिता मर गये थे। उनकी आया ही उनकी देखभाल करती थी।

जब वे बड़े हो गये तो उन्होंने शादी करने की इच्छा प्रगट की। उनके पास तीन लड़कियों की तस्वीरें थी जिनको वे पसन्द करते थे।

उन्होंने अपने दूतों को दुनियाँ भर में भेजा कि जा कर देखो अगर तुम्हें इन तस्वीरों जैसी लड़कियाँ कहीं मिल जायें तो उनको हमारे लिये यहाँ ले कर आना हम उनसे शादी करेंगे।

दूत बेचारे सारी दुनियाँ में घूम आये पर उनको उन तस्वीरों जैसी कोई लड़की कहीं नहीं मिली। वे निराश हो कर वापस घर लौट ही रहे थे कि आखीर में उनको एक मछियारे की तीन लड़कियाँ दिखायी दीं जिनकी सूरतें बिल्कुल उन तस्वीरों से मिलती थी।

बस फिर क्या था दूतों ने उन तीनों लड़कियों को रानियों की तरह से सजाया और राजा के बेटों के पास ले आये। तीनों बेटों ने उन तीनों लड़कियों को पसन्द कर लिया और उनसे उनकी शादी हो गयी।

[58] Three Blind Queens. Tale No 113. A folktale from Italy from its Abruzzo area.
[My Note: This folktale seems somewhat incomplete and incoherent.]

कुछ दिनों बाद लड़ाई छिड़ गयी तो तीनों बेटों को लड़ाई पर जाना पड़ा। उन्होंने अपनी आया के सहारे अपना घर छोड़ा और लड़ाई पर चले गये।

पर वह आया इन रानियों के वहॉ होते हुए राजा के महल में उसी तरह से तो नहीं रह सकती थी जैसे वह इनके आने से पहले रहती थी। इसलिये उसने एक मन्त्री को पटाया और उससे उन तीनों को मारने के लिये कहा और सबूत के तौर पर उनकी ऑखें लाने के लिये कहा – तीन जोड़ी ऑखें।

मन्त्री ने एक दिन रानियों से कहा — "आज का मौसम बहुत अच्छा है चलिये आपको घुमा लाते हैं।" सो वे चारों एक गाड़ी में बैठ गये और वह गाड़ी चल दी।

चलते चलते वह गाड़ी एक पहाड़ की तलहटी में आ गयी। वह बहुत सुन्दर जगह थी सो तीनों रानियॉ और वह मन्त्री वहॉ गाड़ी से उतर गये।

मन्त्री ने अपनी तलवार निकाली और एक आह भर कर बोला — "अफसोस रानी जी, मुझे यह हुक्म मिला है कि मैं आप तीनों को मार कर आपकी ऑखें आया के पास ले जाऊॅ।"

तीनों रानियों ने जवाब दिया — "नहीं, तुम हमको मारो मत। तुम हमको यहीं पहाड़ पर ही छोड़ दो और जहॉ तक ऑखों का सवाल है वे हम तुमको अपने आप ही दे देंगी।"

उन्होंने अपनी ऑखें निकाली और मन्त्री को दे दीं। मन्त्री बेचारा उनको देख कर रो पड़ा। पर क्या करता। उसने उनकी ऑखें ले लीं और उनको वहीं पहाड़ पर छोड़ कर महल चला आया।

जब तीनों बेटे लड़ाई से वापस आये तो उन्होंने अपनी रानियों के बारे में पूछा। आया ने कहा कि वे तीनों तो एक एक्सीडैन्ट में मर गयीं।

अपनी पत्नियों की मौत की खबर सुन कर वे तीनों बहुत दुखी हुए और उन तीनों ने कसम खायी कि वे अब कभी शादी नहीं करेंगे।

उधर वे तीनों रानियॉ एक गुफा में चली गयीं और वहीं रहने लगीं। वे पत्ते, घास और जड़ें खा कर गुजारा करती थीं। तीनों के बच्चा होने वाला था। एक रात तीनों ने एक एक लड़के को जन्म दिया।

मॉऐं और बच्चे पत्ते, घास और जड़ें खा कर ही गुजारा करते रहे। जब पत्ते और जड़ें खत्म हो गयीं तो उन्होंने यह देखना शुरू किया कि वे किसका बच्चा पहले खायें।

सबसे पहले सबसे बड़ी रानी का बेटा खा लिया गया। उसके बाद बीच वाली बहिन का नम्बर आया। उसके बाद अब सबसे छोटी बहिन का नम्बर था।

यह देख कर तीसरी बहिन ने अपने बेटे को गोद में लिया और गुफा से भाग निकली। उसे एक और गुफा मिल गयी जहाँ बहुत सारे पत्ते लगे हुए थे। वह उस गुफा में घुस गयी और वहीं रहने लगी।

धीरे धीरे उसका बच्चा बड़ा हो गया और शिकार के लिये जाने लगा। उसके पास सरकंडे[59] की बनी हुई एक बन्दूक थी जिससे वह अपने और अपनी माँ के खाने के लिये कुछ छोटे मोटे जानवर मार कर लाने लगा।

एक दिन उसको दूसरी दो अन्धी स्त्रियाँ मिल गयीं तो वह उनको अपनी गुफा में ले आया।

एक दिन तीनों राजाओं में से एक राजा जो इस लड़के का पिता था शिकार खेलने निकला तो उसको जंगल में अपना बेटा मिल गया। राजा ने लड़के से कहा — "आओ मेरे साथ आओ। तुम मेरे महल चलो।"

लड़का बोला — "पहले मैं अपनी माँ को बता आऊँ।" और वह अपनी माँ को बताने चला गया कि राजा मुझे अपने महल ले जाना चाहते हैं। तो माँ ने कहा "ठीक है जाओ।" और वह लड़का राजा के साथ चला गया। वह फिर वहीं रहने लगा।

आया ने उस लड़के को देख कर ऊपर से तो खुश होने का नाटक किया पर अन्दर ही अन्दर वह उससे बहुत कुढ़ रही थी।

---

[59] Translated for the word "Reed"

जब हथियारों के चलाने की बात आयी तो वह लड़का हथियार चलाने में पूरे राज्य में सबसे अच्छा और बहादुर साबित हुआ।

आया ने उसको एक ऐसा काम देने का फैसला किया जिससे उसको हमेशा के लिये वहाँ से हटाया जा सके।

काफी समय पहले इस परिवार की एक राजकुमारी को परियों ने उठा लिया था। आया ने तीनों राजाओं से कहा कि इस नौजवान को उस राजकुमारी का पता लगाने के लिये भेजना चाहिये जिसको वह परी उठा कर ले गयी थी। क्योंकि यह बहुत बहादुर है यह उस लड़की का पता लगा सकता है।

राजाओं ने उस नौजवान से कहा कि वह जा कर उस लड़की का पता लगाये।

वह नौजवान पहले तो उन अन्धी रानियों की गुफा में उनकी सलाह लेने गया फिर वह उस लड़की की खोज में निकल पड़ा। चलते चलते वह एक रेगिस्तान में पहुँच गया जहाँ एक काला सफेद महल खड़ा था।

वह उस महल के पास पहुँचा तो किसी की बड़ी धीमी सी आवाज आयी — "क्या तुम देख सकते हो कि मैं कहाँ हूँ? देखो, घूम जाओ। तब तुम मुझे देख सकते हो।"

नौजवान बोला — "नहीं, मैं नहीं घूमूँगा क्योंकि अगर मैं घूम गया तो फिर मैं एक पेड़ बन जाऊँगा।"

सो वह बिना घूमे ही उस काले सफेद महल में घुस गया। अन्दर जा कर उसने देखा कि एक कमरे मे तीन पीली मोमबत्तियाँ जल रहीं थीं। उस नौजवान ने वे तीनों मोमबत्तियाँ एक ही फूँक में बुझा दीं।

जैसे ही वे मोमबत्तियाँ बुझीं तो वहाँ का जादू टूट गया और अचानक उस नौजवान ने अपने आपको उन तीनों राजाओं के महल में पाया। वह सुन्दर राजकुमारी, उस नौजवान की माँ और उसकी दोनों मौसियाँ भी वहीं थीं। तीनों रानियों की आँखें भी आ गयीं थीं।

सब लोग उस राजकुमारी को पा कर बहुत खुश हुए। उस नौजवान ने उस राजकुमारी से शादी कर ली। शाम को खाना खाते समय हर एक ने अपनी अपनी कहानी सुनायी। तीनों रानियों ने भी अपनी अपनी कहानी सुनायी।

आया तो वह सब सुन कर इतना काँप गयी कि उसको गर्म करने के लिये उसके ऊपर तेल लगा कर उसको भूनना पड़ा। तीनों राजकुमार अपनी अपनी पत्नियों और बेटे के साथ खुशी खुशी रहने लगे।

12 एक ऑख[60]

एक बार दो फ्रायर[61] भीख मॉगने निकले। पहाड़ों पर ॲधेरा हो गया था पर एक गुफा में रोशनी हो रही थी सो वे वहॉ पहुॅच गये और वहॉ जा कर आवाज लगायी — "ओ घर के मालिक, क्या आप हमको रात को सोने के लिये जगह देंगे?"

एक बिजली की कड़क जैसी आवाज जो सारे पहाड़ को कॅपकॅपा गयी बोली — "अन्दर आ जाओ।"

दोनों फ्रायर अन्दर चले गये। वहॉ आग के पास एक बड़े साइज़ का आदमी[62] बैठा हुआ था। उसके एक ऑख थी जो उसके माथे पर थी। वह बोला — "आओ तुम लोग यहॉ बैठो।तुम लोग यहॉ आराम से रहोगे।"

दोनों फ्रायर तो उसको देख कर पत्ते की तरह से कॉपने लगे। वह दोनों फ्रायर के पीछे गया और एक बड़ा सा पत्थर गुफा के दरवाजे पर लगा कर उसने गुफा में घुसने का दरवाजा बन्द कर दिया। वह पत्थर इतना बड़ा था कि सौ आदमी भी मिल कर उसे नहीं हटा सकते थे।

उस एक ऑख वाले ने कहा — "हालॉकि खाने के लिये मेरे पास सौ भेड़ें हैं पर अभी तो पूरा साल पड़ा है और मुझे उनको पूरे

---

[60] One Eye. Tale No 115. A folktale from Italy from its Abruzzo area.

[61] Friar is a religious order in Roman Catholic Church especially in mendicant orders

[62] Translated for the word "Giant"

साल के लिये बचाना है इसलिये अब तुम मुझे यह बताओ कि मैं तुममें से पहले किसको खाऊँ? छोटे फ्रायर को या बड़े फ्रायर को? तुम आपस में तय कर लो, चाहे लौटरी निकाल लो और मुझे बता दो।"

सो लौटरी निकाली गयी और उसमें बड़े फ्रायर का नाम निकला। बड़े फ्रायर का नाम देखते ही वह एक ऑख वाला बड़े फ्रायर की तरफ दौड़ा, उसको एक लोहे की सलाख के चारों तरफ लपेटा और आग पर भूनने के लिये रख दिया।

वह उस लोहे की सलाख को अलटता पलटता रहा और गाता रहा — "मोटा आज छोटा कल, मोटा आज छोटा कल।"

छोटा फ्रायर तो अपने साथी के इस तरह मरने पर बहुत दुखी था और सोच रहा था कि वह अपनी इस तरह की किस्मत को किस तरह से बदल सकता था।

जब बड़े फ्रायर का भुनना खत्म हो गया तो उस एक ऑख वाले ने उसे खाना शुरू किया। उसने बड़े फ्रायर की एक टॉग छोटे फ्रायर को भी स्वाद के लिये खाने के लिये दी। छोटे फ्रायर ने उसको खाने का केवल बहाना किया पर असल में उसने उसको अपने पीछे फेंक दिया।

जब उस एक ऑख वाले ने बड़े फ्रायर को खा लिया तो उसने उसकी हड्डियॉ उठा कर फेंक दीं और वहीं पास पड़े भूसे पर सो

गया। छोटा फ्रायर आग के पास ही गुड़मुड़ी बना बैठ गया पर बहाना करता रहा कि वह भी सोने ही वाला था।

जब उसने एक ऑख वाले की खर्राटे की आवाज सुनी तो उसने वह लोहे की सलाख उठायी जिस पर उसने बड़े फ्रायर को भूना था और उसको लाल हो जाने तक गरम किया।

इस बीच वह गाता रहा — "इसको भौंक दो इस बड़े साइज़ के आदमी की अकेली ऑख में।" यह कह कर उसने वह लोहे की सलाख उस बड़े साइज़ के आदमी की अकेली ऑख में भौंक दी।

सलाख के ऑख के अन्दर जाते ही वह बड़े साइज़ का आदमी चिल्लाता हुआ कूद कर उठ बैठा और छोटे फ्रायर को पकड़ने के लिये अपने हाथ इधर उधर फेंकने लगा।

अब क्योंकि उसकी ऑख फूट गयी थी तो वह देख तो सकता नहीं था इसलिये छोटा फ्रायर जल्दी ही भेड़ों के झुंड में भाग गया।

एक ऑख वाला उसका पीछा करता रहा और भागते भागते वह भी भेड़ों के झुंड तक आ पहुँचा और अपने हाथों से उनको एक एक कर के महसूस किया पर वह छोटा फ्रायर हर बार उसके हाथों से बच गया।

जब वह एक ऑख वाला उस छोटे फ्रायर को काफी कोशिशों के बाद भी नहीं पकड़ सका तो चिल्ला कर बोला — "तुम ज़रा दिन निकलने तक रुको फिर मैं तुम्हें देखता हूँ।"

यह सुन कर छोटे फ्रायर ने एक भेड़ ली उसकी खाल निकाली और उसमें छिप गया। जब दिन निकल आया तो एक ऑख वाले ने गुफा के दरवाजे से पत्थर हटाया और खुद वहॉ जा कर बैठ गया।

उसकी एक टॉग दरवाजे के एक तरफ थी और दूसरी टॉग दरवाजे के दूसरी तरफ। ऐसा उसने इसलिये किया था ताकि वह हर बाहर जाने वाले को महसूस कर सके।

इस तरीके से वह भेड़ को तो वहॉ से गुजर जाने देगा पर अगर कोई आदमी गुजरेगा तो वह उसको पहचान लेगा। फ्रायर ने एक छोटी भेड़ को अपने ऊपर रखा और उस बड़े साइज़ के आदमी की टॉगों के बीच में से निकल गया।

उस बड़े साइज़ के आदमी को पता ही नहीं चला कि छोटा फ्रायर कब उन भेड़ों के झुंड में से निकल कर बाहर भाग गया। उसने सोचा कि उसके नीचे से तो सारी भेड़ें ही निकल कर जा रही है तो लगता है कि वह उसके बिना महसूस किये ही बाहर निकल गया होगा।

इस तरह से उस छोटे फ्रायर ने उस बड़े साइज़ के आदमी से अपनी जान बचायी।

13 नकली नानी[63]

एक बार एक मॉ को आटा छानना था पर उसके पास आटा छानने के लिये चलनी नहीं थी। उसने अपनी बेटी को अपनी मॉ के घर चलनी लाने के लिये भेजा।

बच्ची ने अपने लिये कुछ खाना बॉधा – एक ॲगूठी की शक्ल वाली डबल रोटी और थोड़ा सा तेल, और वह अपनी नानी के घर से चलनी लाने चल दी।

उसकी नानी के घर के रास्ते में जोरडन नदी[64] पड़ती थी। जब वह जोरडन नदी के पास पहुॅची तो उससे बोली — "ओ जोरडन नदी, मुझे नदी पार करने दो।"

जोरडन नदी बोली — "अगर तुम मुझे अपनी ॲगूठी की शक्ल वाली डबल रोटी दो तो मैं तुमको नदी पार करने दूॅगी।" जोरडन नदी को ॲगूठी की शक्ल वाली डबल रोटी बहुत अच्छी लगती थी। वह उसको अपने भॅवर में घुमा घुमा कर खाती थी।

सो बच्ची ने अपनी ॲगूठी की शक्ल वाली डबल रोटी नदी में फेंक दी। उस डबल रोटी को नदी में फेंकते ही नदी का पानी नीचे उतर गया और वह बच्ची उस नदी को पार कर गयी।

[63] False Grandmother. Tale No 116. A folktale from Italy from its Abruzzo area.
[64] Jordan River

चलते चलते वह बच्ची रेक दरवाजे के पास पहुँची तो बोली — “रेक गेट, रेक गेट, मुझे अपने अन्दर से जाने दोगे?”

रेक गेट बोला — “हाँ हाँ क्यों नहीं, पर अगर तुम मुझे तेल के साथ डबल रोटी खाने के लिये दो तो।” रेक गेट को तेल के साथ डबल रोटी बहुत अच्छी लगती थी।

क्योंकि उसके कब्जे[65] बहुत जंग लगे थे और जब वह तेल लगी डबल रोटी खाता था तो उसके कब्जे बहुत आसानी से चलने लगते थे। सो बच्ची ने उसको भी थोड़ी सी डबल रोटी और तेल दिया और रेक गेट ने उसको अपने अन्दर से जाने दिया।

अब वह अपनी नानी के घर पहुँच गयी थी। पर उसके घर का दरवाजा बहुत कस के बन्द था सो वह बाहर से ही चिल्लायी — “नानी नानी, दरवाजा खोलो। यह मैं हूँ। मुझे अन्दर आने दो।”

अन्दर से नानी की आवाज आयी — “बेटी, मैं बीमार पड़ी हूँ तुम खिड़की से अन्दर आ जाओ।”

बच्ची बोली — “नानी, मैं खिड़की से अन्दर नहीं आ सकती। खिड़की बहुत ऊँची है।”

नानी फिर बोली — “तो फिर बिल्ली के अन्दर आने के दरवाजे से अन्दर आ जाओ।”

[65] Translated for the word “Hinges”. See its picture above.

बच्ची बोली — "बिल्ली के अन्दर आने का दरवाजा तो बहुत ही छोटा है नानी। मैं उसके अन्दर तो घुस ही नहीं सकती।"

"तब फिर ज़रा रुको।" कह कर उसकी नानी ने एक रस्सी नीचे गिरा दी और उससे उस बच्ची को खिड़की से ऊपर खींच लिया।

कमरे में ॲधेरा था सो वह बच्ची यह देख नहीं पायी कि उसको किसने ऊपर खींचा। असल में उस कमरे में उसकी नानी की बजाय एक जादूगरनी[66] लेटी हुई थी।

उस जादूगरनी ने उसकी नानी को एक ही कौर में निगल लिया था। वह उसके दॉत नहीं खा पायी थी क्योंकि वे उसकी नानी ने एक बर्तन में रख दिये थे। जादूगरनी ने उनको उबलने के लिये एक बर्तन में रख दिया।

बच्ची अन्दर आ कर बोली — "नानी नानी, मॉ ने चलनी मॅगायी है।"

जादूगरनी बोली — "बेटी, अब तो बहुत देर हो चुकी है। अब मैं वह तुमको कल दूॅगी। आओ अब तुम सो जाओ।"

बच्ची बोली — "पर नानी मुझको बहुत भूख लगी है। पहले मुझे खाना चाहिये।"

[66] Translated for the word "Ogress"

जादूगरनी बोली — "देखो तो एक बर्तन में बीन्स उबल रही हैं तुम वह खा लो।" पर उस बर्तन में तो नानी के दाँत उबल रहे थे।

बच्ची ने उस बर्तन को इधर उधर हिलाया तो बोली — "नानी ये बीन्स तो बहुत सख्त हैं।"

जादूगरनी बोली — "तो फिर कड़ाही में से पकौड़े निकाल कर खा लो।"

अब कड़ाही में तो नानी के कान थे। बच्ची ने उनमें काँटा घुसा कर देखा तो बोली — "पर नानी ये तो करारे नहीं हैं बहुत ही मुलायम हैं।"

जादूगरनी बोली — "तो फिर तुम अब तुम सो जाओ कल खा लेना।"

यह सुन कर वह बच्ची अपनी नानी के पास उसके बिस्तर में घुस गयी। उसने नानी का एक हाथ छुआ तो बोली — "नानी तुम्हारा हाथ इतना सारे बालों वाला क्यों है?"

जादूगरनी बोली — "क्योंकि मेरी उँगलियों में बहुत सारी अँगूठियाँ हैं।"

फिर उसने नानी की छाती पर हाथ रखा तो वह बोली — "नानी तुम्हारी तो छाती पर भी इतने सारे बाल है?"

जादूगरनी बोली — "हाँ बेटी, क्योंकि मैंने अपने गले में बहुत सारी मालाऐं पहन रखी हैं।"

फिर उसने नानी के होठ छुए और बोली — "नानी तुम्हारे होठों पर इतने सारे बाल क्यों हैं?"

जादूगरनी फिर बोली — "क्योंकि मैंने अपने कपड़े बहुत कसे हुए पहन रखे हैं।"

इसके बाद उसके हाथ में नानी की पूँछ आ गयी तो उसको लगा कि ये बाल हों या न हों पर नानी की पूँछ तो कभी थी ही नहीं। उनकी यह पूँछ कहाँ से आ गयी। लगता है कि यह मेरी नानी नहीं बल्कि जादूगरनी है, और कोई नहीं।

सो वह बोली — "नानी मैं तब तक नहीं सो सकती जब तक मैं अपना छोटा काम[67] न कर आऊँ।"

जादूगरनी बोली — "तो जाओ नीचे जानवरों के बाड़े में चली जाओ।" यह कह कर उसने बच्ची को नीचे बाड़े में उतार दिया। जैसे ही वह बच्ची नीचे बाड़े में उतरी उसने अपनी रस्सी खोली और उसमें एक बकरी बाँध दी।

कुछ मिनट बाद नानी ने पूछा — "तुम्हारा छोटा काम हो गया?"

बच्ची ने भी जब बकरी के गले में रस्सी बाँध दी तो वह बोली — "हाँ नानी मेरा काम हो गया। बस अब तुम मुझे ऊपर खींच लो।"

[67] To urinate

जादूगरनी ने रस्सी ऊपर खींचनी शुरू की तो वह बच्ची चिल्लाने लगी — "बालों वाली जादूगरनी, बालों वाली जादूगरनी।" उसने बाड़े का दरवाजा खोला और वहाँ से भाग ली।

उधर जादूगरनी रस्सी खींचती रही तो वहाँ तो बच्ची की जगह एक बकरी आ गयी। बच्ची की जगह बकरी को देख कर वह जादूगरनी अपने बिस्तर से कूदी और बच्ची के पीछे भागी।

भागते भागते बच्ची रेक गेट के पास पहुँची तो जादूगरनी चिल्लायी — "ओ रेक दरवाजे, इस लड़की को इस दरवाजे से बाहर नहीं जाने देना।"

रेक गेट बोला — "मैं तो इसको जाने दूँगा क्योंकि इसने मुझे खाने के लिये तेल के साथ डबल रोटी दी है।" और वह बच्ची उस गेट से बाहर निकल गयी।

आगे चल कर बच्ची जोरडन नदी के पास पहुँची तो जादूगरनी फिर पीछे से चिल्लायी — "ओ जोरडन नदी, इस लड़की को पार नहीं उतरने देना।"

पर जोरडन नदी बोली — "मैं तो इसको उस पार जाने दूँगी क्योंकि इसने मुझे खाने के लिये अँगूठी की शक्ल वाली डबल रोटी दी है।" और उसने भी बच्ची को पार जाने दिया। इस तरह वह बच्ची दरवाजा और नदी दोनों पार कर गयी।

पर जब जादूगरनी जोरडन नदी पार करने लगी तो उसने अपना पानी नीचे नहीं किया और वह जादूगरनी उस नदी के पानी के बहाव में बह गयी।

बच्ची दूसरे किनारे पर खड़ी खड़ी उसको मुॅह बना बना कर चिढ़ाती रही। इस तरह से बच्ची ने जोरडन नदी और रेक गेट की सहायता कर के अपने आपको बचा लिया और जादूगरनी को मार दिया।

14 चमकती हुई मछली[68]

एक बार एक बहुत ही अच्छे बूढ़े पति पत्नी के लड़के मर गये थे तो वे बेचारे यह ही नहीं सोच पा रहे थे कि वे उनके बिना अपनी बाकी की ज़िन्दगी कैसे बितायेंगे।

बूढ़े की पत्नी बहुत बूढ़ी थी और बीमार भी बहुत रहती थी। बूढ़ा रोज जंगल जाता था और लकड़ी काट कर लाता था। फिर उस लकड़ी को बेचने के लिये बाजार ले जाता था। उनको बेच कर जो पैसा मिलता था उससे वह अपना पेट पालता था। इसी तरह से वह अपना गुजारा चला रहा था।

एक दिन जब वह जंगल जा रहा था तो कुछ कराहता जा रहा था कि रास्ते में उसको एक भला आदमी मिला जिसके लम्बी सी दाढ़ी थी।

वह लम्बी दाढ़ी वाला उस बूढ़े से बोला — "मुझे तुम्हारी परेशानियों का पता है। मैं तुम्हारी सहायता करूँगा। लो यह बटुआ लो। इसमें सौ डकैट[69] हैं। शायद यह तुम्हारी कुछ सहायता कर सके।"

बूढ़े ने वह बटुआ ले लिया और बेहोश हो गया। जब तक उसे होश आया तब तक वह भला आदमी तो गायब भी हो गया था।

---

[68] Shining Fish. Tale No 118. A folktale from Italy from its Abruzzo area.

[69] Ducat – currency in use at that time in Europe

वह बूढ़ा उस बटुए को ले कर अपने घर चला गया और वह बटुआ खाद के एक ढेर के नीचे छिपा दिया।

उसने अपनी पत्नी को भी इस बारे में कुछ नहीं बताया। उसने सोचा — “अगर मैंने उसको इसके बारे में बताया तो यह सारा पैसा बहुत जल्दी ही खत्म हो जायेगा।” सो अगले दिन वह रोज की तरह फिर लकड़ी काटने जंगल चला गया।

उस शाम जब वह घर पहुँचा तो उसने देखा कि उसकी खाने की मेज पर तो दावत का खाना लगा हुआ है। वह देख कर वह चौंक गया और अपनी पत्नी से पूछा — “तुमने यह सब कहाँ से खरीदा?”

पत्नी सीधे स्वभाव बोली — “आज मैंने खाद बेच दी।”

वह आदमी बोला — “अरी बेवकूफ उसके नीचे तो सौ डकैट छिपे हुए थे।”

“मुझे क्या मालूम। तुमने मुझसे उसके बारे में कुछ कहा ही नहीं था तो मुझे कैसे पता चलता। कहाँ से आये वे?”

अगले दिन वह बूढ़ा फिर ज़ोर ज़ोर से कराहता हुआ जंगल की तरफ चल दिया। उसको वह पहले वाला भला आदमी उसी जगह फिर मिल गया।

वह भला आदमी बोला — “मुझे तुम्हारी बदकिस्मती का पता है। शान्त हो जाओ। यह लो सौ डकैट और।”

बूढ़े ने उन डकैटों को ले लिया और अपने घर वापस आ गया। अबकी बार उसने वे पैसे राख के ढेर में छिपा दिये और रोज की तरह अगले दिन फिर जंगल लकड़ी काटने चला गया।

पर जब वह शाम को घर वापस लौटा तो उसकी खाने की मेज फिर वैसे ही बहुत सारे खानों से सजी हुई थी। वह फिर उसको देख कर परेशान हो गया।

उसने अपनी पत्नी से फिर पूछा — "आज तुमने इतना सारा खाना कहाँ से खरीदा?"

पत्नी ने सीधे स्वभाव कहा — "आज मैंने राख बेच दी।"

मगर आज उस बूढ़े के गले से वह खाना नीचे नहीं उतरा और वह बिना खाना खाये ही सोने चला गया। अगले दिन वह बूढ़ा फिर लकड़ी काटने के लिये जंगल चल दिया। आज वह बहुत ज़ोर ज़ोर से रोता हुआ जा रहा था।

आज भी उसको जंगल में वही भला आदमी उसी जगह मिल गया। आज वह बोला — "अबकी बार मैं तुमको पैसे नहीं दूँगा। आज तुम ये चौबीस मेंढक ले जाओ और इनको बेच कर इनके पैसे से एक मछली खरीद लो – सबसे बड़ी मछली जो भी तुम खरीद सकते हो।"

बूढ़े ने वे चौबीस मेंढक उस भले आदमी से ले लिये और जा कर उनको बाजार में बेच दिये। उससे आये पैसे से उसने एक बहुत बड़ी मछली खरीद ली और घर आ गया। रात को उसने देखा कि

वह मछली तो चमक रही थी। उसमें से तो बहुत ज़ोर की रोशनी निकल रही थी जिससे सारी जगह में रोशनी फैल रही थी।

उसकी रोशनी इतनी तेज़ थी कि अगर उस मछली को हाथ में ले कर चलो तो ऐसा लगता था जैसे कोई लालटेन ले कर चल रहा हो। शाम को वह उस मछली को घर के बाहर लटका देता ताकि वह ताजा रहे।

एक दिन बड़ी ॲधेरी और तूफानी रात थी। मछियारे जो बाहर समुद्र पर मछलियॉ पकड़ने गये थे उनको घर वापस लौटने का रास्ता नहीं सुझाई दे रहा था सो वे लोग परेशान थे कि वे अब घर कैसे पहॅुचें।

तभी उनको इस बूढ़े की खिड़की पर लटकी हुई इस मछली से निकली रोशनी दिखायी दे गयी। उसको देख कर उन्होंने इसी तरफ अपनी नावें खेना शुरू कर दिया और वे समुद्र में रास्ता भटकने से बच गये। वे ठीक से किनारे आ गये थे।

इस सबके बदले में उन सबने अपनी अपनी कमाई का आधा आधा हिस्सा उस बूढ़े को दे दिया और उससे समझौता किया कि अगर वह उस मछली को वहॉ पर ऐसे ही लटका कर रखेगा तो वे हमेशा अपना रात का शिकार उससे आधा आधा बॉट लेंगे। बूढ़े ने ऐसा ही किया और फिर उसको कभी खाने की कोई मुश्किल नहीं उठानी पड़ी।
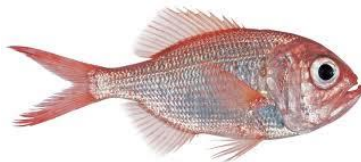
15 मिस उत्तरी हवा और मिस्टर ज़ैफिर[70]

एक बार ऐसा हुआ कि मिस उत्तरी हवा[71] को लगा कि उसको शादी कर लेनी चाहिये सो वह मिस्टर ज़ैफिर[72] के पास गयी और बोली — "ज़ैफिर जनाब, क्या आप मेरे पति बनना पसन्द करेंगे?"

मिस्टर ज़ैफिर को पैसों से बहुत लगाव था और वह स्त्रियों के बारे में ज़्यादा सोचता नहीं था सो बिना कुछ इधर उधर किये वह बोला — "नहीं मैम उत्तरी हवा, मैं तुमसे शादी नहीं कर सकता क्योंकि तुम्हारे पास तो दहेज में देने के लिये एक पैसा भी नहीं है।"

सो उत्तरी हवा ने लगातार बहुत तेज़ी से बहना शुरू किया। उसने यह भी परवाह नहीं की कि इतनी तेज़ बहने से उसके फेंफड़े भी फट सकते थे।

वह तीन दिन तीन रात लगातार बहती रही और बहती रही। इससे बर्फ और तूफान आ गया। सारे खेत, पहाड़ियाँ और गाँव बर्फ से ढक गये।

जब मिस उत्तरी हवा अपनी चाँदी सब तरफ फैला चुकी तब उसने ज़ैफिर से कहा — "यह लो मेरा दहेज जो आप कह रहे थे कि मेरे पास दहेज नहीं था। क्या इससे काम चलेगा?"

---

[70] Miss North Wind and Mr Zephir. Tale No 119. A folktale from Italy from its Abruzzo area.

[71] Translated for the word "North Wind" – it is very cold arctic air.

[72] In Italian very light warm breeze is called Zephyr

इसके बाद वह फिर तीन दिन के लिये आराम करने चली गयी।

मिस्टर ज़ैफिर ने उसके दहेज की तरफ ऑख उठा कर भी नहीं देखा। बस उसने अपने कन्धे उचकाये और बहने लगा। वह भी तीन दिन और तीन रात तक बहता रहा और बहता रहा और इस बीच सारे खेतों मैदानों और पहाड़ियों की सारी बर्फ गर्मी के मारे पिघल गयी।

जब मिस उत्तरी हवा ने कुछ देर आराम कर लिया तो वह उठी। उसने देखा कि उसका तो सारा दहेज चला गया है। उसकी फैलायी हुई सारी बर्फ पिघल गयी थी।

वह मिस्टर ज़ैफिर के पास दौड़ी गयी तो उसने हॅस कर मिस उत्तरी हवा से पूछा — "मिस उत्तरी हवा, तुम्हारा दहेज कहॉ है? क्या तुम अभी भी यही चाहती हो कि मैं तुम्हारा पति बन जाऊॅ?"

मिस उत्तरी हवा मुॅह लटका कर वहॉ से चली आयी — "नहीं मिस्टर ज़ैफिर मैं कभी आपकी पत्नी बनना पसन्द नहीं करूॅगी क्योंकि आपने तो मेरा इतना सारा दहेज एक ही दिन में खत्म कर दिया।

16 महल का चूहा और खेत का चूहा[73]

एक बार महल रहने वाला एक चूहा महल के भंडारघर में चीज़[74] खा रहा था कि घर में रहने वाले एक बिल्ले ने उसको डरा दिया। असल में वह बिल्ला किसी तरह से महल के बागीचे में से महल के अन्दर आ गया था।

वह तो चूहे ने अपना सिर एक लैटस के पत्ते[75] के पीछे छिपा लिया वरना तो वह बिल्ला उस दिन उसको खा ही जाता।

लैटस के पत्ते के पीछे छिपा छिपा वह कुछ सोचने लगा। काफी सोचने के बाद उसको याद आया कि उसके पिता ने, भगवान उनकी आत्मा को शान्ति दे, एक बार उससे एक खेत के चूहे के बारे में कुछ कहा था। वह खेत का चूहा बागीचे में एक अंजीर के पेड़ के नीचे रहता था।

सो उसने उस खेत वाले चूहे से मिलने की सोची। वह बागीचे की तरफ दौड़ गया और चारों तरफ उसका बिल ढूँढने लगा। कुछ देर तक इधर उधर घूमने के बाद उसको उस चूहे का बिल मिल गया। बिल मिल जाने पर वह उसमें घुस गया।

---

[73] The Palace Mouse and the Field Mouse. Tale No 120. A folktale from Italy from its Molise area.

[74] Cheese is a kind of processed Indian Paneer and is very common to eat in Western countries.

[75] Leaf of lettuce – lettuce is kind of vegetable, normally eaten in salads, and looks like cabbage. See its picture above.

महल वाले चूहे के पिता का दोस्त तो मर गया था पर उसका बेटा वहाँ था। दोनों ने आपस में एक दूसरे को अपना परिचय दिया और खेत वाले चूहे ने उसकी दो दिन तक इतनी खातिरदारी की कि महल का चूहा अपने महल की सारी चीज़ और बढ़िया खाना भूल गया।

पर तीसरे दिन उसने इतने सारे शलगम खाये कि अब उसको उसकी खुशबू से भी नफरत हो गयी।

वह बोला — "तुम्हारा बहुत बहुत धन्यवाद, मेरे दोस्त। पर अब मुझे तुम्हारे ऊपर ज़्यादा बोझ नहीं बनना चाहिये इसलिये अब मैं चलता हूँ।"

खेत वाला चूहा बोला — "क्यों भाई, जाने की इतनी भी क्या जल्दी है कम से कम एक दिन तो और ठहर जाओ।"

"नहीं दोस्त, घर पर मेरा सब लोग इन्तजार कर रहे हैं। अब मुझे चलना ही चाहिये।"

"घर पर तुम्हारा कौन इन्तजार कर रहा है?"

"एक चाचा हैं... । सुनो, मुझे एक विचार आया है। क्यों न तुम मेरे साथ मेरे घर चलो। हम लोग दोपहर का खाना साथ खायेंगे फिर खाना खा कर तुम यहाँ वापस आ जाना।"

खेत वाला चूहा जो महल देखने के लिये बहुत बेचैन था उसके इस बुलावे पर बहुत खुश हुआ और उसके साथ महल चल दिया।

जब वे बागीचे से बाहर आ गये तो वे एक दीवार पर चढ़े और महल के भंडारघर की छोटी सी खिड़की में आ गये।

खेत वाला चूहा बोला — “ओह कितना सुन्दर घर है और कितनी अच्छी खुशबू भी आ रही है।

“नीचे उतरो मेरे दोस्त, और बिल्कुल भी शर्म मत करना, इसे अपना ही घर समझना, यहाँ तुम चाहे जितना खाओ।”

“नहीं मेरे दोस्त, बहुत बहुत धन्यवाद। मुझे इन सबका बिल्कुल भी अन्दाज नहीं है और फिर मैं शायद अपने घर का रास्ता भी न पा सकूँ इसलिये मैं यहीं इस खिड़की पर ही बैठा ठीक हूँ।”

महल वाला चूहा बोला — “अच्छा अगर तुम नीचे नहीं उतरते तो फिर ज़रा तुम वहीं रुको।” कह कर वह नीचे भंडारघर में खुद ही चला गया।

जैसे ही उसने भंडारघर से सूअर के माँस का एक टुकड़ा उठाया एक बिल्ला वहाँ आया और उस महल वाले चूहे को खा गया। खिड़की पर बैठे बैठे उस खेत वाले चूहे के मुँह से एक चीख सी निकली — “ई ई ई ई।”

खेत वाले चूहे का दिल धड़कने लगा। वह बोला — “यह क्या कह रहा है? ओह तो यह है इसका चाचा। इसके चाचा ने तो इसका बहुत ही अच्छा स्वागत किया।

अगर इसी तरह से कोई अपने भतीजे का स्वागत करता है तो ज़रा सोचो वह मेरे साथ क्या करेगा जो कि उसके लिये बिल्कुल ही अजनबी है।” और एक पल में ही वह अपने बागीचे में था।
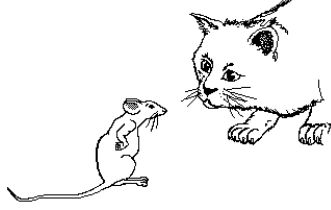
17 पागल, चालाक और कॉटा[76]

एक बार की बात है कि तीन रोग थे – एक था पागल, एक था चालाक और एक था कॉटा। एक बार उन्होंने आपस में शर्त लगायी कि देखा जाये कि उनमें से कौन सबसे ज़्यादा होशियार और चालाक है। सो वे चल दिये।

उनमें से पागल सबसे आगे जा रहा था। उसने एक पेड़ के ऊपर एक मैना[77] अपने घोंसले में बैठी देखी तो उसने अपने दोस्तों से पूछा — "क्या तुम देखना चाहते हो कि मैं इस मैना के अंडे इसके नीचे से बिना इसके जाने और बिना इसको उठाये कैसे निकाल सकता हूॅ?"

उसके दोनों दोस्त बोले — "हॉ हॉ देखें तुम ऐसा कैसे करते हो?"

सो वह पागल अंडे चुराने के लिये पेड़ पर चढ़ा और जब उन को वह वहॉ से ले रहा था तो चालाक ने उसके जूतों की एड़ी काटी और अपने टोप में छिपा ली। पर इससे पहले कि वह टोप अपने सिर पर रखता कॉटे ने उसके जूतों की एड़ी को उसके टोप में से निकाल लिया।

---

[76] Crack, Crook and Hook. Tale No 123. A folktale from Italy from its Irpinia area.

[77] Magpie – a singing bird. See her picture sitting in her nest.

पागल पेड़ पर से नीचे आया और बोला — "मैं सबसे ज़्यादा होशियार और चालाक हूँ क्योंकि मैंने मैना के अंडे उसके नीचे से बिना उसको वहाँ से उठाये चुरा लिये हैं।"

चालाक बोला — "नहीं मैं सबसे ज़्यादा होशियार और चालाक हूँ क्योंकि मैंने तुम्हारे बिना देखे ही तुम्हारे जूतों से तुम्हारी एड़ी निकाल ली है।"

काँटा बोला — "मुझे लगता है कि मैं सबसे ज़्यादा होशियार और चालाक हूँ क्योंकि मैंने तुम्हारे टोप में से तुम्हारे बिना जाने ही पागल के जूतों की एड़ी चुरा ली है।

और क्योंकि मैं सबसे ज़्यादा होशियार और तेज़ हूँ इसलिये अब मैं तुम दोनों से अलग होता हूँ। मैं तुम लोगों से ज़्यादा अच्छा करूँगा।" कह कर वह अपने रास्ते चला गया।

बाद में उसने इतना पैसा इकट्ठा कर लिया कि वह बहुत अमीर हो गया। वह कई शहरों में गया। उसने शादी कर ली और फिर एक सूअर को मारने वाली दूकान खोल ली।

दूसरे दो लोग भी घूमते रहे, चोरी करते रहे और फिर लौट कर उसी शहर में आ गये जिसमें काँटे की दूकान थी। उन्होंने काँटे की दूकान देखी तो वह उसकी दूकान देख कर बहुत खुश हुए और आपस में बोले — "चलो अन्दर चलते हैं। यहाँ अच्छा समय गुजरेगा।"

वे दूकान के अन्दर गये तो वहाँ दूकान पर कॉटे की पत्नी बैठी थी। उन्होंने उससे कहा — "मैम, क्या हमको कुछ खाने को मिलेगा?"

कॉटे की पत्नी ने पूछा — "तुम्हें क्या चाहिये? क्या दूँ मैं तुम्हें?"

"चीज़[78] का एक टुकड़ा।"

सो वह उनके लिये चीज़ काटने लगी। जब वह चीज़ काट रही थी तो दोनों ने दूकान में इधर उधर देखा कि वे वहाँ से क्या उठा सकते थे। उनको वहाँ एक कटा हुआ सूअर दिखायी दे गया। वह उस दूकान में ऊपर लटका हुआ था।

उसको देख कर दोनों ने एक दूसरे को आँखों ही आँखों में इशारा किया कि आज रात को ही वे लोग इस सूअर को यहाँ से ले जायेंगे। कॉटे की पत्नी ने यह सब देख लिया पर वह बोली कुछ नहीं। जब उसका पति आया तो उसने उसको सब कुछ बता दिया।

अब कॉटा तो सबसे बड़ा चोर था सो उसने उन दोनों को पहचान लिया। उसने सोचा कि वे दोनों जरूर ही पागल और चालाक रहे होंगे जो उस सूअर को चुराने का प्लान बना रहे थे।

---

[78] Cheese is a kind of processed Indian Paneer. There are many kinds of cheese and are very popular in western world food items

उसने अपने मन में कहा "ठीक है, तुम इन्तजार करो। मैं देखता हूँ कि तुम मेरा सूअर कैसे चुराते हो।" यह सोच कर उसने वह सूअर ओवन[79] में रख दिया।

शाम हुई तो वह सोने चला गया। जब रात हुई तो वे पागल और चालाक उस सूअर को चुराने के लिये कॉटे की दूकान पर आये। उन्होंने दूकान में चारों तरफ निगाह दौड़ायी पर वह सूअर तो उनको वहाँ कहीं दिखायी ही नहीं दिया।

सो चालाक ने सोचा कि जब सूअर कहीं दिखायी नहीं दे रहा तो इसका पलंग ही चुरा लिया जाये। उस पलंग के बराबर में कॉटे की पत्नी सो रही थी।

चालाक कॉटे की पत्नी से बोला — "सुनो, मुझे यहाँ सूअर कहीं दिखायी नहीं दे रहा है तुमने कहाँ रखा है?"

यह सोचते हुए कि वह उसका पति बोल रहा है कॉटे की पत्नी बोली — "सो जाओ, तुमको तो कुछ याद ही नहीं रहता। तुम्हीं ने तो कल रात उसे ओवन में रख दिया था।" और वह सो गयी।

अब वे दोनों चोर ओवन के पास गये उसमें से सूअर निकाला और उसको ले कर चल दिये। पहले चालाक बाहर निकला, इसके बाद पागल सूअर को अपनी पीठ पर लाद कर बाहर निकला।

---

[79] Oven is a box, made of iron or bricks etc which when is made hot by fire or electricity can cook food. In western world most food are cooked in this way – bread, cake, biscuits, meat dishes etc

कॉटे की दूकान के सामने ही एक छोटा सा बागीचा था। जब वे उस बागीचे को पार कर रहे थे तो पागल ने देखा कि वहॉ सूप बनाने की कुछ पत्तियॉ उग रही थीं।

सो वह आगे चालाक के पास तक पहुॅचा और बोला — "कॉटे के बागीचे तक जाओ। उसके बागीचे में सूप बनाने की कई पत्तियॉ उगी हुई हैं। आज कुछ पत्तियॉ तोड़ लो जिनको हम सूअर की टॉग के साथ उबाल लेंगे।"

सो चालाक आगे से लौट कर सूप के लिये पत्तियॉ तोड़ने के लिये कॉटे के बागीचे तक वापस गया और पागल अपने रास्ते चलता चला गया।

इतने में कॉटे की ऑख खुली तो वह अपना ओवन देखने गया तो देखा कि सूअर तो वहॉ से जा चुका था। उसने अपने बागीचे की तरफ निगाह डाली तो चालाक को बागीचे में से सूप बनाने के लिये कुछ पत्ते तोड़ते देखा। उसने सोचा कि वह उसको वहीं से पत्ते तोड़ने देगा।

फिर उसने अपने घर में ही लगा हुआ सूप में डालने वाले पत्तों का एक बड़ा सा गुच्छा तोड़ लिया और अपने बागीचे की तरफ भागा ताकि वह चालाक उसको देख ले।

भागते भागते वह चालाक के आगे निकल गया और आगे जा कर उसने पागल को पकड़ लिया जो सूअर के बोझ से झुका हुआ

चला जा रहा था। कॉटे ने उसको इशारे से कहा कि थोड़ी दूर तक वह उस सूअर को ले जाने में उसकी सहायता करेगा।

पागल ने सोचा कि वह चालाक था और वह पत्ते ले कर लौट आया था और अब सूअर को ले जाने में उसकी सहायता करने के लिये इशारा कर रहा था। सो पागल ने उससे पत्ते का गुच्छा ले लिया और सूअर उसको दे दिया।

एक बार सूअर कॉटे के पास आ गया तो बस, वह तो पलटा और अपने घर की तरफ भाग लिया। कुछ ही देर में चालाक ने भी पत्ते इकट्ठे कर लिये थे सो उसने भी आगे आ कर पागल को पकड़ लिया।

पास आने पर चालाक ने देखा कि पागल के पास सूअर तो है नहीं और वह बस एक पत्तों का गुच्छा लिये आराम से चलता चला जा रहा है तो उसने उससे पूछा — "तुमने सूअर का क्या किया?"

पागल बोला — "क्या किया का क्या मतलब है। तुम्हीं ने तो मुझसे उसे ले लिया था।"

चालाक ने पूछा — "मैंने? लेकिन मैं तो यहाँ था ही नहीं। मैं कहाँ से लेता। मैं तो यहाँ अभी अभी आया हूँ। नहीं नहीं, मैंने नहीं लिया।"

पागल कुछ परेशान सा बोला — "पर तुमने उसको अभी कुछ देर पहले ही तो पत्तों के बदले में मुझसे उसे ले लिया था।"

चालाक बोला — "मैंने ऐसा कब किया? तुमने ही तो मुझे सूप के लिये पत्ते इकट्ठे करने को लिये भेजा था और मैं अभी अभी पत्ते ले कर चला आ रहा हूॅ।"

अन्त में दोनों को पता चल गया कि कॉटे ने ही उन दोनों को बेवकूफ बनाया है। एक बार कॉटा फिर उन दोनों को बेवकूफ बना गया था इसलिये उन दोनों ने मान लिया कि उन तीनों में वही सबसे ज़्यादा चालाक और होशियार था।

18 पहली तलवार और आखिरी झाड़ू[80]

एक बार की बात है कि दो सौदागर थे जिनके घर एक दूसरे के आमने सामने थे। उनमें से एक सौदागर के सात बेटे थे और दूसरे के सात बेटियाँ।

रोज सुबह बेटों का पिता अपनी खिड़की खोलता और बेटियों के पिता को नमस्ते कहता — "गुड मौर्निंग ओ सात झाड़ुओं वाले सौदागर।"

और दूसरे सात बेटियों वाले सौदागर को उसकी यह गुड मौर्निंग कभी अच्छी नहीं लगती। वह चुपचाप अपने घर के अन्दर चला जाता और अक्सर गुस्से में आ कर रो पड़ता।

यह देख कर उसकी पत्नी बहुत दुखी होती। उसको रोते देख कर वह उससे पूछती कि "क्या हुआ? तुम क्यों रो रहे हो?" पर उसका पति उसे कभी कुछ नहीं बताता और बस वह रोता ही रहता।

इस सौदागर की सबसे छोटी बेटी सत्रह साल की थी और तस्वीर की तरह सुन्दर थी। उसके पिता को उसके ऊपर बड़ा नाज़ था और वह उसको बहुत प्यार करता था।

[80] First Sword and Last Broom. Tale No 124. A folktale from Italy from its Naples area.

अपने पिता को इस तरह रोज रोते देख कर उसको भी बहुत दुख होता था सो एक दिन उसने अपने पिता से कहा — "पिता जी, अगर आप सचमुच मुझे प्यार करते हैं तो आज आप मुझे अपनी परेशानी बताइये। आपका रोज सुबह सुबह का रोना मुझसे देखा नहीं जाता।"

पिता बोला — "बेटी, यह जो सौदागर हमारे घर के सामने रहता है रोज सुबह यह कह कर मुझे गुड मौर्निंग करता है "गुड मौर्निंग ओ सात झाडुओं वाले सौदागर।" और हर सुबह मैं वहॉ खड़ा होता हूॅ पर यह नहीं सोच पाता कि मैं उसकी इस गुड मौर्निंग का क्या जवाब दूॅ।"

बेटी प्यार से बोली — "अरे पिता जी बस इतनी सी बात। आप मेरी बात सुनें। अबकी बार जब वह आपको इस तरह से गुड मौर्निंग करे तब आप उससे कहियेगा —

"गुड मौर्निंग ओ सात तलवार वाले सौदागर। मैं तुझसे शर्त लगाता हूॅ कि मैं अपनी आखिरी झाड़ू लेता हूॅ और तू अपनी पहली तलवार ले ले और फिर देखते हैं कि फ्रांस[81] के राजा का राजदंड और ताज[82] पहले किसको मिलता है और कौन उनको पहले ले कर आता है।

[81] France is a country in Europe

[82] Who can get the scepter and the crown of the King of France first? See the picture of the crown of the King of France above.

अगर मेरी बेटी जीत गयी तो तू मुझे अपनी सारी चीज़ें दे देना और अगर तेरा बेटा जीत गया तो मैं अपनी सारी चीज़ें हार जाऊँगा।" और हॉ आप उससे यह बात जरूर जरूर कहियेगा।

और अगर वह इस बात पर राजी हो जाये तो उससे एक कौन्ट्रैक्ट पर दस्तखत भी जरूर करा लीजियेगा जिसमें ये सब शर्तें लिखी हों ताकि वह बाद में मुकर न जाये।"

यह सुन कर तो पिता का मुँह खुला का खुला रह गया। जब उसकी बेटी की बात खत्म हो गयी तो वह बोला — "पर बेटी तू जानती भी है कि तू क्या कह रही है? क्या तू यह चाहती है कि मैं अपना सब कुछ खो दूँ?"

बेटी बोली — "नहीं पिता जी। मैं ऐसा क्यों चाहूँगी। मैं तो बल्कि यह चाहती हूँ कि आपको उसका भी सब कुछ मिल जाये। आप बिल्कुल मत डरिये। सब मुझ पर छोड़ दीजिये।

आप तो बस उससे शर्त लगाइये और इस शर्त के कौन्ट्रैक्ट को लिख कर उस पर दस्तखत करा लीजिये। फिर मैं देखती हूँ कि क्या होता है।"

उस रात सात बेटियों का पिता सौदागर एक मिनट के लिये भी नहीं सो सका और सुबह का इन्तजार करता रहा। अगले दिन सुबह से ही वह अपने छज्जे पर जा पहुँचा। आज वह दूसरे दिनों से पहले ही वहॉ पहुँच गया था। सामने वाले सौदागर की खिड़की अभी भी बन्द थी।

अचानक सामने वाले सौदागर की खिड़की खुली और उसमें उसको वह सात बेटों का पिता सौदागर दिखायी दिया। उसने अपनी खिड़की खोल कर रोज की तरह उसको गुड मौर्निंग की — "गुड मौर्निंग ओ सात झाड़ुओं वाले सौदागर।"

आज वह सात बेटियों का पिता यह सुन कर दुखी हो कर अन्दर नहीं गया क्योंकि आज तो वह उसकी इस गुड मौर्निंग का जवाब देने के लिये तैयार था सो वह बोला —

"गुड मौर्निंग ओ सात तलवार वाले सौदागर। मैं आज तुझसे एक शर्त लगाता हूँ। मैं अपनी आखिरी झाड़ू लेता हूँ और तू अपनी पहली तलवार ले ले।

हम इन दोनों को एक एक घोड़ा और एक एक थैला भर कर पैसे देंगे और देखते हैं कि दोनों में से पहले कौन फ्रांस के राजा का राजदंड और ताज हमारे पास ले कर आता है। हम इस बात पर अपना अपना पूरा सामान दाँव पर लगाते हैं।

अगर मेरी बेटी जीत गयी तो तेरा सारा सामान मेरा हो जायेगा और अगर तेरा बेटा जीत गया तो मेरा सारा सामान तेरा हो जायेगा।"

यह सुन कर वह सात बेटों वाला सौदागर पिता तो हक्का बक्का रह गया। फिर ज़ोर से हँस पड़ा और अपना सिर ज़ोर से ना में हिलाया जैसे कि कह रहा हो कि सात बेटियों का यह पिता कहीं पागल तो नहीं हो गया।

बेटियों का पिता फिर बोला — "क्या तू मेरी बेटी से डरता है? या फिर तुझे अपने बेटे पर भरोसा नहीं है?"

बेटों का पिता बोला — "मैं अपनी बात के लिये राजी हूँ। चल कौन्ट्रैक्ट पर दस्तखत करते हैं और उन दोनों को फ्रांस के राजा का राज दंड और ताज लाने के लिये भेजते हैं।"

यह सब वह बेटियों के पिता से कह कर इस सबको अपने सबसे बड़े बेटे से कहने के लिये वह तुरन्त ही अन्दर चला गया।

यह सोच कर ही कि वह "पड़ोसी सौदागर की उस सुन्दर लड़की के साथ जायेगा" वह लड़का मुस्कुरा दिया। सो उन शर्तों के साथ कौन्ट्रैक्ट पर दस्तखत हो गये। दोनों बच्चों को एक एक घोड़ा और एक एक पैसों का थैला दे दिया गया और उनके जाने का समय तय कर दिया गया।

जब जाने का समय आया तो वह लड़की एक लड़के के वेश में तैयार हो कर आयी और आ कर अपनी सफेद फ़िली घोड़ी[83] पर बैठ गयी। तब उस लड़के को लगा कि यह मजाक का मामला नहीं था।

असल में तो जब उनके पिताओं ने एक बार उस कौन्ट्रैक्ट पर दस्तखत कर दिये और उनको कह दिया कि "जाओ" तो वह लड़की तो अपनी फ़िली घोड़ी पर तुरन्त ही दौड़ गयी जबकि दूसरे

[83] Filly horse is a young female horse, too young to be called a mare, is up to first breeding or 4 years of age. See its picture above.

सौदागर के लड़के का अपना मजबूत घोड़ा केवल हिनहिनाता ही रह गया। उसको चलने में थोड़ा समय लगा।

फ्रांस में पहुँचने के लिये एक घना, अँधेरा और बिना रास्ते वाला जंगल पार करना पड़ता था। लड़की की फ़िली तो उसमें से कूदती हुई ऐसे निकल गयी जैसे वह अपने घर में से जा रही हो।

वह कभी ओक के पेड़ों के दाँये से निकल जाती, तो कभी पाइन के पेड़ों के बाँये से निकल जाती, तो कभी हैज[84] के ऊपर छलाँग लगा देती पर बस वह तो आगे ही आगे बढ़ती जा रही थी।

पर इस घोड़ी के सामने लड़के के मजबूत घोड़े को थोड़ी परेशानी हो रही थी। पहली बार तो उसकी ठोड़ी ही एक पेड़ की झुकी हुई डाल से टकरा गयी तो वह लड़का उसकी जीन[85] से ही नीचे गिर गया।

फिर उसके घोड़े के पैर नीचे पड़ी सड़ी पत्तियों के ढेर पर पड़ कर उसमें फँस गये और वह पेट के बल गिर पड़ा। फिर वे दोनों यानी लड़का और घोड़ा एक ब्रायर के मैदान[86] में फँस गये और बहुत देर तक नहीं निकल सके।

---

[84] Hedge is normally a low wall, 3-6 feet tall, otherwise it can be high also – as high as 10-12 feet, made of very densely planted plants. It works as a boundary wall to protect the house from thieves and animals etc. See its picture above

[85] Translated for the word “Saddle”.

[86] Briar is a kind of poisonous grass/plant

पर इस बीच वह लड़की अपनी फ़िली पर चढ़ कर वह जंगल बहुत जल्दी ही पार कर गयी और उस लड़के से मीलों आगे निकल गयी। फ्रांस पहुँचने के लिये उस जंगल के बाद फिर एक पहाड़ पार करना पड़ता था जो चोटियों और खाइयों से भरा हुआ था।

वह लड़की पहाड़ की चढ़ाई पर ऊपर चढ़ रही थी जब उसको उस लड़के के घोड़े के टापों की आवाज अपने पीछे आती सुनायी दी। पर उसकी फ़िली तो बस चढ़ती ही जा रही थी जैसे वह उसका अपना घर हो।

वह पत्थरों के दॉये बॉये से कूदती फॉदती हुई अब मैदानों में आ पहॅुची थी। पर लड़के को अपने मजबूत घोड़े को उस पहाड़ पर ले जाने में काफी मेहनत करनी पड़ रही थी।

बीच में पहाड़ भी टूट कर गिर पड़ा जिससे उसका घोड़ा गिर पड़ा और फिर वह वापस जहॉ से चढ़ने के लिये चला था वहीं आ गया।

लड़की तो फ्रांस जाने के रास्ते पर उस लड़के से कहीं बहुत आगे थी। फ्रांस पहॅुचने के लिये अभी उसको एक नदी और पार करनी थी। उसकी फ़िली उस पानी में कूद पड़ी और तेज़ी से नदी पार कर के उसके दूसरे किनारे पर आ गयी।

जब वह लड़की दूसरे किनारे पर आ गयी तो उसने लड़के को ढूॅढने के लिये इधर उधर देखा तो उसने लड़के को नदी की तरफ

आते देखा और अपने नदी में से निकलने के बाद में उसके घोड़े को नदी में घुसते देखा।

पर लड़के के घोड़े को नदी पार करने का शायद ज़्यादा पता नहीं था सो जब उसका घोड़ा नदी की बालू पर पैर न रख सका तो वह घोड़ा और वह लड़का दोनों नदी के तेज़ बहाव में बह गये।

लड़की पेरिस[87] पहुँच गयी। वह अभी भी एक लड़के के वेश में थी। वहाँ पहुँच कर वह एक ऐसे सौदागर के पास गयी जो उसको अपने यहाँ काम दे देता। यह सौदागर राजमहल में सामान पहुँचाता था।

जब उसने इतना सुन्दर नौजवान देखा तो उसने उसको तुरन्त ही काम पर रख लिया और फिर वह उसी के हाथों अपना सामान राजमहल में भेजने लगा।

जब राजा ने सौदागर के उस नौजवान नौकर को देखा तो उसने उससे पूछा — "तुम कौन हो? तुम तो मुझे कोई परदेसी लगते हो। यहाँ कैसे आये हो?"

नौजवान ने जवाब दिया — "मैजेस्टी, मेरा नाम टैम्परीनो[88] है। मैं नैपिल्स[89] के राजा के यहाँ उनकी चीज़ों पर खुदाई का काम[90]

[87] Paris is the capital of France country

[88] Temperino – name of the girl. Temperino means small knife

[89] Naples is big important historical city and port of Italy situated at South to Rome on its Western coast.

[90] Translated for the word "Carver" who carves on wood or metal

करता था। पर वहाँ कुछ ऐसी घटनाऐं हो गयी जिनकी वजह से मुझे यहाँ आना पड़ा।"

यह सुन कर राजा ने पूछा — "अगर मैं तुम फ्रांस के शाही महल में खुदाई करने वाले की जगह दे दूँ तो क्या तुम वह काम करना पसन्द करोगे?"

वह नौजवान बोला — "ओह मैजेस्टी, वह तो मेरे लिये भगवान का दिया हुआ वरदान होगा।"

"ठीक है मैं तुम्हारे मालिक से बात करूँगा।" राजा ने उस सौदागर से उस नौजवान के बारे में बात की तो उस सौदागर की उस को छोड़ने की इच्छा तो नहीं हो रही थी पर वह राजा का हुक्म भी नहीं टाल सकता था सो उसने उस नौजवान को राजा को दे दिया। और इस तरह वह लड़की राजा के राजमहल में खुदाई करने वाला बन गया।

राजा उसको रोज देखता और जितना देखता उसको देख कर उसके दिल में कुछ कुछ होता। एक दिन उसने अपनी माँ से इस नौजवान के बारे में बात की।

उसने अपनी माँ से कहा — "माँ इस टैम्परीनो में कुछ राज़ है जो मैं सुलझा नहीं पा रहा हूँ। इसके हाथ बहुत सुन्दर हैं, इसकी कमर बहुत पतली है, यह गाता बजाता है और पढ़ता लिखता है। मुझे लगता है कि टैम्परीनो लड़का है ही नहीं बल्कि एक लड़की है। मैं उसे अपना दिल दे बैठा हूँ।"

मॉ बोली — “बेटे तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है।”

राजा बोला — “नहीं मॉ, मेरा दिमाग खराब नहीं हुआ बल्कि मुझे पूरा यकीन है कि टैम्परीनो लड़का नहीं एक लड़की है। मुझे तुमसे बस यही पूछना है कि मैं इसे कैसे साबित करूॅ।”
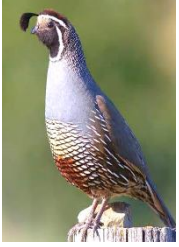
मॉ बोली — “तुम ऐसा करो कि एक दिन उसको शिकार के लिये ले जाओ। अगर वह केवल क्वैल[91] का शिकार करे तब तो वह एक लड़की है क्योंकि फिर उसके दिमाग में केवल एक भुनी हुई चिड़िया ही आयेगी।

और अगर वह गोल्ड फ़िन्च[92] का शिकार करे तब वह एक आदमी है क्योंकि आदमी लोगों को अपने शिकार के पीछे भागना अच्छा लगता है।”

इस प्लान के मुताबिक राजा ने ऐसा ही किया। उसने टैम्परीनो को एक बन्दूक दी और उसको शिकार का न्यौता दिया। टैम्परीनो ने कहा कि वह शिकार के लिये अपने ही घोड़ी पर जायेगा सो वह अपनी फ़िली पर चढ़ा और राजा के साथ शिकार पर चल दिया।

राजा को धोखा देने के लिये टैम्परीनो ने केवल एक क्वैल मारी पर जब भी कोई और क्वैल दिखायी दी तो फ़िली पीछे हट गयी। इससे टैम्परीनो को लगा कि उसको क्वैल को नहीं मारना चाहिये।

---

[91] Quail is a mid-sized bird found in many species. See the picture here of a Californian Quail bird.

[92] Gold Finch is a bird which is found in several colors. One of its types is shown here in yellow color.

सो टैम्परीनो ने पूछा — "मैजेस्टी, क्या मैं आपसे यह पूछने की हिम्मत कर सकता हूँ कि क्या क्वैल को मारना शिकार करने की होशियारी का इम्तिहान है? आपने भूनने के लिये तो काफी क्वैल मार ली हैं अब कुछ गोल्ड फ़िन्चैज़ भी मार लीजिये जो कि क्वैल को मारने से ज़्यादा मुश्किल काम है।"

जब राजा घर पहुँचा तो उसने यह सब कुछ अपनी माँ को बताया — "माँ, तुम ठीक कहती थीं वह गोल्ड फ़िन्चैज़ को मारने पर ज़्यादा ज़ोर दे रहा था बजाय क्वैल के। पर मैं अभी भी सन्तुष्ट नहीं हूँ।

माँ, उसके हाथ बहुत सुन्दर हैं, उसकी कमर बहुत पतली है, यह गाता बजाता है और पढ़ता लिखता है। माँ मैं फिर कहता हूँ कि टैम्परीनो एक लड़की है जिसको मैं अपना दिल दे बैठा हूँ।"

माँ बोली — "तो बेटे, अब हम उसका दूसरा इम्तिहान लेते हैं। तुम उसको बागीचे में सलाद तोड़ने के लिये जाओ। अगर वह बड़ी सावधानी से केवल ऊपर वाले पत्ते तोड़ता है तो वह एक लड़की है क्योंकि हम स्त्रियों में आदमियों से ज़्यादा धीरज होता है। और अगर वह जड़ के साथ सारा का सारा पौधा ही उखाड़ लेता है तब वह एक आदमी है।"

सो अबकी बार राजा उसको अपने बागीचे में सलाद तोड़ने के लिये ले गया और वह खुद सलाद के ऊपर ऊपर के पत्ते तोड़ने

लगा। वह खोदने वाला टैम्परीनो भी यही करने वाला था कि उसकी फ़िली आयी और उन पौधों को जड़ से उखाड़ने लगी।

टैम्परीनो समझ गया कि उसको भी वही करना था। उसने तुरन्त ही पूरे के पूरे सलाद के पौधे उखाड़ कर अपनी टोकरी भर ली। उन पौधों पर अभी भी मिट्टी लगी थी।

फिर राजा उसको फूलों की क्यारियों की तरफ ले गया और बोला — "देखो कितने सुन्दर गुलाब खिले हैं यहाँ।" पर फ़िली अपने मालिक को दूसरी तरफ ले गयी जिधर कारनेशन और चमेली[93] के फूल खिले थे।

टैम्परीनो बोला — "गुलाब के तो काँटे हाथों में चुभ जायेंगे। तुम कारनेशन और चमेली के फूल तोड़ो न।" राजा यह सुन कर कुछ नाउम्मीद सा तो हो गया पर फिर भी उसने अपनी उम्मीद नहीं छोड़ी।

उसने यह सब जा कर फिर अपनी माँ से कहा क्योंकि उसको हमेशा ही यह लगता — "इसके हाथ बहुत सुन्दर हैं, इसकी कमर बहुत पतली है, यह गाता बजाता है और पढ़ता लिखता है। मुझे लगता है कि टैम्परीनो लड़का है ही नहीं बल्कि एक लड़की है और मैं उसे अपना दिल दे बैठा हूँ।"

---

[93] Carnation and jasmine. See the picture of pink carnation flower above.

मॉ बोली — “बेटे, अब इस समय बस तुम्हारे पास केवल एक तरीका ही और रह गया है और वह यह कि तुम उसको अपने साथ तैरने के लिये ले जाओ।”

सो राजा ने टैम्परीनो से कहा — “चलो आज नदी में तैरने चलते हैं।” टैम्परीनो तैयार हो गया।

नदी पर पहुँच कर टैम्परीनो बोला — “मैजेस्टी, पहले आप अपने कपड़े उतारिये।” राजा समझ गया कि वह राजा के पीछे अपने कपड़े उतारेगा सो वह अपने कपड़े उतार कर नदी में घुस गया।

उसी समय ज़ोर से हिनहिनाने की आवाज आयी और फ़िली वहाँ दौड़ती हुई आयी। उसके मुँह से झाग निकल रहे थे।

उसको देखते ही टैम्परीनो चिल्लाया — “ओह मेरी फ़िली। मैजेस्टी आप ज़रा सा इन्तजार कीजिये। मेरी फ़िली बहुत खुश है। मैं ज़रा उसके पास हो कर आता हूँ।” और वह फ़िली के पीछे दौड़ गया।

टैम्परीनो सीधा शाही महल दौड़ा गया और रानी मॉ से जा कर बोला — “रानी मॉ, राजा नदी में बिना कपड़ों के हैं और चौकीदार इस हालत में उनको बिना पहचाने पकड़ भी सकते हैं इसलिये उन्होंने अपना राजदंड और ताज लेने के लिये मुझे यहाँ भेजा है ताकि वे उनको उन चीज़ों से पहचान सकें।”

रानी माँ तो यह सुन कर घबरा गयी। बिना सोचे समझे उसने राजा का दंड और ताज टैम्परीनो को दे दिये। जब वे उसके हाथ में आ गये तो वह अपने फ़िली पर चढ़ा और यह गाता हुआ चल दिया

मैं यहाँ एक लड़के के रूप में आयी मैं एक लड़के के रूप में ही वापस जा रही हूँ
वैसे ही मैंने राजा का दंड और ताज भी ले लिया।

उसने नदी पार की, उसने पहाड़ पार किया, उसने जंगल पार किया और अपने घर आ गयी।

घर आ कर उसने देखा तो सामने वाले सौदागर का बेटा तो वहाँ अभी तक आया ही नहीं था और इस तरह वह जीत गयी। सामने वाले सौदागर की सारी चीज़ें उसके पिता की हो गयीं।

19 मिसेज़ लोमड़ी और मिस्टर भेड़िया[94]

एक बार एक भेड़िया और एक लोमड़ी थे जो आपस में एक दूसरे को भाई बहिन कहते थे। उन्होंने आपस में यह तय कर रखा था कि वे जो कुछ भी पकड़ेंगे उसे आपस में बाँट कर खायेंगे।

एक दिन भेड़िया इधर उधर सूँघते हुए चला जा रहा था कि उसको एक भेड़ की बू आयी। उसने लोमड़ी से कहा — "लोमड़ी बहिन, मैं ज़रा इस घास के मैदान में देखने जा रहा हूँ अगर यहाँ कहीं जानवरों का कोई झुंड चर रहा हो तो।"

वह उधर गया तो वहाँ तो उसको जानवरों का एक बहुत ही बड़ा झुंड चरता हुआ मिल गया। तुरन्त ही उसने एक मेमने[95] को अपने मुँह में पकड़ा और वहाँ से अपनी जान बचा कर भागा।

पर उसको भागने में कुछ देर हो गयी तो उसने महसूस किया कि उसको किसी ने मारा। उस मार की वजह से वह एक हफ्ते तक बिस्तर में पड़ा रहा।

भेड़िये ने सोचा क्योंकि मुझे इस मेमने की वजह से इतना कष्ट सहना पड़ा इसलिये यह मेमना मेरा है और इसे मैं अकेला ही रखूँगा। यह सोच कर उसने उस मेमने को भूनने के लिये आग के ऊपर लटका दिया और इस बारे में लोमड़ी से कुछ नहीं कहा।

---

[94] Mrs Fox and Mr Wolf. Tale No 125. A folktale from Italy from its Naples area.

[95] Translated for the word Baby sheep or lamb

बाद में लोमड़ी ने भेड़िये से पूछा — “भेड़िये भाई, क्या तुमको वहाँ कोई जानवर मिला? क्या तुम उन जानवरों में से किसी को पकड़ सके?”

भेड़िया बोला — “बहिन, हाँ मुझे जानवर तो मिले पर मैंने देखा कि उनके पीछे जाना बहुत खतरनाक था सो मैं तो वापस लौट आया। और मेरी सलाह तो यही है कि हम उनको छोड़ ही दें तो अच्छा है।”

लोमड़ी को उसकी बातों पर विश्वास नहीं हुआ सो उसने सोचा “अब मैं तुमको देखती हूँ।” सो वह भी खाना ढूँढने चल दी।

घूमते घूमते लोमड़ी को एक जगह ऐसी मिल गयी जहाँ बहुत सारा शहद था। उसने भेड़िये से कहा — “भेड़िये भाई, मुझे एक जगह मिली है जहाँ बहुत सारा शहद है। एक दिन हम दोनों वहाँ उसको देखने चलेंगे।”

लेकिन फिर भेड़िये से बिना कुछ कहे वह उस शहद की जगह अकेली ही चली गयी। वहाँ तो उसको बहुत सारा शहद मिल गया। उसने उसको चखा, अपने होठ चाटे और बोली — “ओह, कितना मीठा शहद है।”

हालाँकि भेड़िये का शरीर अभी भी उस मार से दर्द कर रहा था पर जब भी वह लोमड़ी से मिलता तो हर बार उससे पूछता — “लोमड़ी बहिन, तुम शहद लाने कब चल रही हो?”

लोमड़ी कहती — "भेड़िये भाई, तुम मुझसे क्या चाहते हो? आज तो मैं बहुत चली हूँ सो बहुत थक गयी हूँ। फिर कभी चलेंगे।"

भेड़िया ने पूछा — "पर बहिन तुम इतनी देर तक कहाँ गयीं, कहाँ रहीं जो तुम इतना थक गयीं?"

लोमड़ी बोली — "भेड़िये भाई, मैं एक छोटे से शहर गयी थी जिसका नाम है "टेस्ट इट।[96] बस मैं ज़रा वहीं चली गयी थी।"

अगले दिन भेड़िये का मेमना खत्म हो गया तो उसने फिर लोमड़ी से पूछा — "बहिन लोमड़ी, हम लोग शहद की जगह कब चलेंगे?"

लोमड़ी बोली — "भाई वह जगह बहुत दूर है। देखना पड़ेगा। जब मैं थोड़ी ठीक होऊँगी तब मैं तुम्हें बताऊँगी।"

"पर तुम तो बहुत दिन से दिखायी ही नहीं दीं। कहाँ थीं तुम?"

"भेड़िये भाई, मैं बहुत थकी हुई हूँ। आज मैं "पिल्फ़र इट"[97] नाम के शहर गयी थी।"

यह सुन कर बेचारा भेड़िया वहाँ से चला आया। दो दिन बाद वह फिर लोमड़ी से मिला और बोला "आज उस जगह को देखने चलें लोमड़ी बहिन?"

---

[96] Taste it

[97] Pilfer it – means stealing in small quantity

लोमड़ी बोली — "ठीक है कल चलते हैं।"

पर जैसे ही भेड़िया वहाँ से गया लोमड़ी वहाँ से अकेली ही उस शहद की जगह चल दी। वह वहाँ सीधी गयी और वहाँ जा कर उसने सारा शहद खा लिया। यहाँ तक कि उसने उस बर्तन का तला भी चाट चाट कर साफ कर दिया जिसमें वह शहद रखा था।

पर जब वह उस बर्तन का तला चाट रही थी तो शहद के मालिक लोग आ गये सो लोमड़ी वहाँ से तुरन्त ही भाग जाना पड़ा।

अगले दिन लोमड़ी बोली — "भेड़िये भाई, हम लोगों को शहद खाने के लिये काफी दूर के शहर में जाना पड़ेगा। सो अगर तुम मेरे साथ चलना चाहो तो मेरे साथ साथ आ सकते हो। इस शहर का नाम है "फ़िनिश इट"[98]।"

भेड़िया अभी भी अपनी पुरानी मार से लँगड़ा कर चल रहा था पर फिर भी वह शहद खाने के लिये लोमड़ी के साथ चल दिया।

लोमड़ी उसको एक पहाड़ की चोटी पर ले गयी। जब वे वहाँ पहुँचे तो लोमड़ी बोली — "अब हम यहाँ फ़िनिश इट शहर में आ गये हैं। तुम आगे आगे चलो और मैं पीछे यह देखने के लिये रहती हूँ कि कोई दूसरा हमको पीटने के लिये यहाँ न आ जाये।"

बेचारा भेड़िया आगे गया। पर क्योंकि उन शहद के मालिकों को अब तक यह पता चल गया था कि उनका शहद चुरा लिया

[98] Finish it

गया है सो वे वहीं बैठे यह देखने के लिये पहरा दे रहे थे कि देखें तो वह कौन है जो उनका शहद चुरा ले गया है।

भेड़िया जब आगे शहद खाने के लिये गया तो उसको केवल शहद से लिपटे टूटे हुए बर्तन ही मिले। अब भेड़िया तो भूखा था सो वह जल्दी जल्दी वे टूटे बर्तन ही चाटने लगा।

अभी वह वे बर्तन चाट ही रहा था कि शहद के मालिक निकल आये और उसको बहुत पीटा। लोमड़ी अपनी छिपी हुई जगह से पिटते हुए भेड़िये को नाचते हुए देख कर बहुत खुश हो रही थी।

किसी तरह से भेड़िया वहाँ से बच निकलने में सफल हो गया और कराहता हुआ लोमड़ी के पास आ गया।

लोमड़ी उसको देखते हुए बोली — "अरे भेड़िये भाई, यह क्या हुआ?"

भेड़िया रो कर बोला — "अरे लोमड़ी बहिन देखो न, उन्होंने मुझे कितना पीटा है। अगर हम चाहते हैं कि वे हमको दोबारा न पकड़ लें तो चलो हम यहाँ से भाग चलते हैं।"

"भाग चलें? अरे हम कैसे भाग सकते हैं? मेरे पैर में तो मोच आयी हुई है मेरे लिये तो चलना भी मुश्किल है भागना तो दूर।"

इस तरह भेड़िये को पिटवा कर और वहाँ से उसको भागने के लिये मजबूर कर वह लोमड़ी लँगड़ाने का बहाना कर के वहाँ से लँगड़ाती हुई चल दी।

रास्ते में वह कहती आ रही थी — "ओह भाई भेड़िये, मैं इस टूटे हुए पैर से कैसे चलूँ? कम से कम थोड़ी दूर तक तो तुम मुझे अपनी पीठ पर बिठा कर ले चलो।"

भेड़िये के पास उसको अपनी पीठ पर बिठा कर चलने के अलावा और कोई चारा नहीं था। इस तरह अच्छी भली लोमड़ी पिटे हुए भेड़िये की पीठ पर बैठ कर गाना गाती चली आयी।

भेड़िये ने पूछा कि ऐसी हालत में वह गाना क्यों गा रही थी। लोमड़ी बोली "तुमको खुश करने के लिये ताकि तुम थकान महसूस न करो।"

आखिर वे घर आये। भेड़िया मार की वजह से बहुत घायल था और लोमड़ी को अपनी पीठ पर बिठा कर लाने की वजह से थका हुआ था। वह घर आते ही जमीन पर गिर पड़ा और फिर कभी ठीक नहीं हुआ।

इस तरह लोमड़ी ने भेड़िये से अपना बदला लिया जो सारा मेमना अपने आप अकेला ही खा गया था।

20 पॉच दुष्ट[99]

एक बार की बात है कि इटली के मैगली[100] नाम के गॉव में एक पति पत्नी रहते थे जिनके एक बेटा था। और उनका यह बेटा एक शैतान[101] जैसा था।

उसके दिमाग में हमेशा ही कुछ न कुछ चलता रहता या फिर वह कुछ न कुछ बेचता रहता। वह रात रात भर बाहर रहता था। इस वजह से उसके बूढ़े माता पिता उसकी तरफ से बहुत परेशान रहते थे।

एक शाम उसकी मॉ ने उसके पिता से कहा — "यह लड़का तो लगता है कि हमारे लिये मौत बन कर आया है। चाहे हमें कितना भी दुख क्यों न उठाना पड़े पर हमें इसे घर से बाहर भेज देना चाहिये।"

अगले दिन पिता ने अपने बेटे को देने के लिये एक घोड़ा खरीदा और सौ डकैट[102] कहीं से उधार लिये। फिर जब उसका बेटा दोपहर को घर आया तो वह उससे बोला — "बेटा इस तरह से बहुत दिनों तक काम नहीं चल सकता। यह लो तुम सौ डकैट लो और यह घोड़ा लो और जा कर अपना कुछ कमाओ खाओ।"

---

[99] The Five Scapegraces. Tale No 126. A folktale from Italy from its Terra d'Otranto area.
[100] Maglie – a town in Italy
[101] Translated for the word "Devil"
[102] Ducat was the then currency in Italy

बेटे ने पैसे लिये और घोड़ा लिया और बोला — "मैं नैपिल्स[103] जा रहा हूँ पिता जी।" कह कर वह घोड़े पर सवार हुआ और नैपिल्स की तरफ चल दिया।

रास्ते में एक खेत के बीच में उसको एक आदमी दिखायी दिया जो अपने चारों हाथ पैरों पर चल रहा था। मैगली वाले नौजवान ने उसको पुकारा — "ओ सुन्दर नौजवान। तुम वहाँ क्या कर रहे हो? और तुम्हारा नाम क्या है?"

वह नौजवान बोला — "मेरा नाम बिजली है।"

"और तुम्हारा पारिवारिक नाम[104]?"

बिजली बोला — "धारा[105]।"

मैगली वाले नौजवान ने पूछा — "ऐसा नाम क्यों?"

"क्योंकि खरगोशों का पीछा करना मेरी खासियत है।"

बस उसने अभी यह बोला ही था कि उसको एक खरगोश दिखायी दे गया। वह उस खरगोश के पीछे दौड़ पड़ा और उसको पकड़ लिया।

मैगली वाले नौजवान ने सोचा "यह विचार तो बुरा नहीं है।"

फिर वह उससे बोला — "मुझे एक विचार आया है। तुम मेरे साथ नैपिल्स चलो। मेरे पास सौ डकैट हैं।"

---

[103] Naples is big historical city and sea port of Italy just south to Rome, Italy's capital, on its West coast

[104] Surname or Family name

[105] Streak – a thin long strip of water or anything else

बिजली भीख मॉगना नहीं चाहता था सो वह उसके साथ चलने के लिये राजी हो गया और वे दोनों नैपिल्स की तरफ चल दिये – एक घोड़े पर और एक पैदल।

जल्दी ही उनको एक और आदमी मिल गया। मैगली वाले नौजवान ने पूछा — "तुम्हारा नाम क्या है?"

वह नौजवान बोला — "अन्धा सीधा[106]।"

मैगली वाला नौजवान बोला — "अरे भाई यह किस तरीके का नाम है?"

उसके मुँह से ये शब्द निकले भी नहीं थे कि उसको सामने से आता हुआ कौओं का एक झुंड दिखायी दे गया। उस झुंड के पीछे एक बाज़[107] था।

मैगली वाले नौजवान ने उससे कहा — "देखते हैं अब तुम क्या करते हो?"

वह आदमी बोला — "मैं अपने तीर को इस बाज़ की बॉयी ऑख पर रख कर उसको नीचे गिरा दूँगा।"

यह कह कर उसने अपनी कमान खींची और उस बाज़ की बॉयी ऑख में तीर मार कर उसको नीचे गिरा दिया।

मैगली वाला नौजवान बोला — "अब क्या कहते हो दोस्त, हमारे साथ चल रहे हो?"

[106] Blind Straight

[107] Translated for the word "Falcon". See its picture above

"यकीनन मैं आप दोनों के साथ चल रहा हूँ।"

सो अब वे तीनों नैपिल्स की तरफ चल दिये। नौजवान अपने घोड़े पर और दोनों साथी उसके पीछे पीछे।

चलते चलते वे ब्रिन्दीसी[108] पहुँचे तो वहाँ के बन्दरगाह पर सौ नौकर[109] काम कर रहे थे पर उनमें से एक नौकर उनको कुछ खास दिखायी दे रहा था। उसने एक खच्चर से भी ज़्यादा का बोझ उठा रखा था और फिर भी ऐसा लग रहा था जैसे उसको वह बोझ कुछ बोझ ही न लग रहा हो।

तीनों के मुँह से निकला "अरे उसको देखो ज़रा। वह कितनी आसानी से इतना सारा बोझ लिये जा रहा है। चलो चल कर उसका नाम पूछते हैं।"

उन्होंने उस आदमी से उसका नाम पूछा तो वह बोला — "मेरा नाम है मजबूत पीठ"[110]।

ज़रा सोचो तो फिर क्या हुआ होगा? मैगली वाले नौजवान ने उससे भी कहा — "तुम हमारे साथ चलो न। मेरे पास सौ डकैट हैं जो हम सबके खाने के लिये काफी हैं। जब मेरे पैसे खत्म हो जायें तब तुम सब मुझे खाना खिला देना।"

इस बात से वहाँ जो मजदूर काम कर रहे थे वे बड़े दुखी हुए क्योंकि वह मजबूत पीठ उनका बहुत काम करता था। जब वह

---

[108] Brindisi – a place in Southern Italy
[109] Translated for the word "Stevedores"
[110] Strongback

जाने लगा तो वे सब रो कर कहने लगे — "हम तुम्हें चार पैन्स ज़्यादा मजदूरी देंगे अगर तुम हमारे पास रुक जाओ तो।"

पर वह मजबूत पीठ बोला — "आराम बड़ी चीज़ है, खाना पीना और घूमना। वाह क्या मजा है। मैं अब यहाँ नहीं रुक सकता मैं इन लोगों के साथ जा रहा हूँ।"

सो अब चारों अपनी यात्रा पर चल दिये। नौजवान अपने घोड़े पर और उसके तीन साथी उसके पीछे पीछे।

आगे जा कर वे एक सराय के पास रुके। वहाँ उन्होंने खूब खाना खाया और जितनी पी सकते थे उतनी शराब पी। खा पी कर वे सब वहाँ से फिर चल दिये।

वहाँ से वे अभी केवल पाँच छह मील ही चले होंगे कि उनको एक और नौजवान दिखायी दिया जो धरती से कान लगा कर कुछ सुनने की कोशिश कर रहा था।

मैगली वाले नौजवान ने पूछा — "तुम यहाँ नीचे क्या कर रहे हो? और तुम्हारा नाम क्या है?"

उस नौजवान ने जवाब दिया — "मेरा नाम है "खरगोश के कान"[111]। मैं यहीं बैठे बैठे दुनियाँ की सारी बातें सुन सकता हूँ चाहे वह कोई भी क्यों न हो। राजा हो या मन्त्री, या फिर प्रेमी हो या कोई साधारण आदमी।"

---

[111] Translated for the words "Rabbit-ears"

मैगली वाला नौजवान बोला — "देखते हैं कि तुम सच बोल रहे या नहीं। तुम अपने कान लगा कर सुनो कि मैगली में इस खम्भे के सामने वाले मकान में रहने वाले लोग क्या बात कर रहे हैं।"

वह बोला — "एक मिनट।"

उसने अपना कान जमीन पर लगाया और बोला — "वहाँ पर दो बूढ़े बुढ़िया आग के पास बैठे आपस में बात कर रहे हैं।

बुढ़िया बूढ़े से कह रही है — "भगवान का लाख लाख धन्यवाद है कि तुम्हारे ऊपर कर्जा तो हो गया पर यह भी अच्छा हुआ जो हमने उस शैतान को घर से बाहर निकाल दिया। अब कम से कम घर में शान्ति तो है।"

मैगली वाले नौजवान ने कहा — "मैं समझ सकता हूँ कि तुम झूठ नहीं बोल रहे हो। मेरे माता पिता के अलावा और कोई ऐसी बात कर ही नहीं सकता।"

सो उन्होंने उसको भी साथ लिया और आगे चल दिये। वे आगे चले तो उनको कई राज[112] काम करते दिखायी दिये। वे सब सुबह की धूप में पसीने से नहाये हुए थे।

"तुम लोग इस समय इतनी गर्मी में कैसे काम कर रहे हो?"

"हम कैसे काम कर रहे हैं? हमारे पास एक आदमी है जो हम को ठंडक देता रहता है।"

---

[112] Translated for the word "Mason" – who build buildings

उन सबने देखा कि एक नौजवान अपनी साँस से सबकी हवा कर के उन लोगों को ठंडक पहुँचा रहा था – फ़ फ़ फ़।

उन्होंने उससे पूछा — "तुम्हारा नाम क्या है?"

वह बोला — "मेरा नाम पफ़रैलो[113] है और मैं सारी हवाओं की नकल कर सकता हूँ – फ़ू ऊ ऊ ऊ यह उत्तरी हवा है। पू ऊ ऊ ऊ यह दक्षिण पश्चिमी हवा है। फ़ फ़ फ़ फ़ यह पूर्वी हवा है।" और फिर उसने अपनी पूरी ताकत से उन सबको कई हवाओं की नकल कर के दिखायी।"

फिर बोला — "अगर आप चाहें तो मैं हरीकेन[114] भी पैदा कर सकता हूँ।" कह कर उसने अपनी साँस फेंकी और पेड़ टूट टूट कर जमीन पर गिरने लगे जैसे देवताओं को बहुत गुस्सा आ गया हो।

उन चारों ने कहा — "बस करो बस करो। हमारी समझ में आ गया कि तुम क्या कर सकते हो।"

मैगली वाले नौजवान ने कहा — "दोस्त मेरे पास सौ डकैट हैं। क्या तुम मेरे साथ आना पसन्द करोगे?"

पफ़रैलो बोला — "हाँ हाँ चलो चलते हैं।" और वह भी उन सबके साथ चल दिया।

अब उनका एक अच्छा खासा झुंड बन गया था और वे सब एक दूसरे को कहानियाँ सुनाते चले जा रहे थे।

---

[113] Puffrello

[114] Hurricane – a kind of wind storm

अब वे नैपिल्स आ गये थे। वहाँ आ कर उन्होंने पहला काम तो यह किया कि उन सबने खूब खाया और खूब पिया। फिर वे एक नाई के पास गये और वहाँ जा कर अपने बाल कटाये और हजामत बनवायी। उसके बाद अच्छे से कपड़े खरीदे और उनको पहन कर तैयार हो कर घूमने निकले।

तीन दिनों के अन्दर अन्दर ही मैगली वाले नौजवान के सौ डकैट खत्म होने को आ गये तो उसने अपने साथ आये लोगों से कहा — "मुझे नैपिल्स की हवा नहीं भा रही है। चलो यहाँ से पेरिस[115] चलते हैं। वह जगह ज़्यादा अच्छी है।"

काफी दूर चलने के बाद वे सब पैरिस आ गये। वहाँ के शहर के दरवाजे पर लिखा था — "जो भी आदमी राजा की बेटी को पैदल की दौड़ में हरायेगा वही उसका पति होगा पर जो कोई उससे हार जायेगा वह मारा जायेगा।"

मैगली वाला नौजवान बोला — "बिजली, यहाँ अब तुम्हारा काम है।"

सो मैगली वाला नौजवान शाही महल तक आया और वहाँ के चौकीदार से बोला — "जनाब मैं अपनी खुशी के लिये ज़रा इधर उधर घूम रहा था कि आज सुबह मैं आपके शहर में घुसा तो आपके शहर के दरवाजे पर राजा की बेटी की यह चुनौती लिखी देखी तो मैं यहाँ अपनी किस्मत आजमाने चला आया।"

[115] Paris is the capital of France country

चौकीदार बोला — "बेटे, यह मेरे और तुम्हारे बीच की बात है किसी से कहना नहीं। यह राजकुमारी एक पागल लड़की है। वह शादी करना ही नहीं चाहती इसलिये हर समय वह ऐसी चालें सोचती रहती है जिससे कि वह शादी न कर सके और सारे लोग मरते चले जायें। मुझे बहुत दुख होगा अगर तुम भी उन मरने वालों में शामिल हो गये तो।"

मैगली वाला नौजवान बोला — "यह सब बेकार की बात है। तुम जाओ और उसको बोलो कि वह कोई भी दिन निश्चित कर ले और मुझे बता दे। मेरे लिये कोई भी दिन ठीक है।"

चौकीदार बेचारा क्या करता। उसकी सलाह बेकार गयी। मजबूरन वह अन्दर गया और राजा की बेटी से बात कर के उसने मैगली वाला नौजवान को बताया कि रविवार का दिन ठीक रहेगा।

मैगली वाला नौजवान यह सब बताने के लिये अपने साथी के पास चला गया। तय किया हुआ दिन भी आ पहुँचा। उन लोगों ने एक सराय में जा कर बहुत बढ़िया खाना खाया और फिर प्लान बनाया कि आगे क्या करना है।

बिजली बोला — "तुम्हें मालूम है न कि तुम्हें क्या करना है। तुमको मुझे शनिवार की शाम को उसके पास एक नोट ले कर भेजना है कि तुमको बुखार आ गया है और तुम भाग नहीं सकते इसलिये अपने बदले में तुम मुझको भेज रहे हो।

अगर मैं जीत जाता हूँ तो वह तुमसे शादी कर लेगी और अगर मैं हार गया तो फिर मरने के लिये तुम जाओगे।"

और यही उन लोगों ने किया भी। मैगली वाले नौजवान ने शनिवार की शाम को राजकुमारी के पास यह चिट्ठी भेज दी कि उसको बुखार आ गया है सो अपनी जगह वह एक दूसरे आदमी को दौड़ने के लिये भेज रहा है।

रविवार की सुबह सड़क के दोनों तरफ लोगों की कतार लगी हुई थी और सड़क तेज़ भागने के लिये शीशे की तरह से चमक रही थी।

जब दौड़ का समय आया तो राजा की बेटी बैलेरीना[116] की पोशाक पहन कर आयी और बिजली की तेज़ी के साथ आ कर खड़ी हो गयी। हर आदमी ऑखें फाड़ फाड़ कर देख रहा था।

बिगुल बजा और राजकुमारी खरगोश की तरह से वहॉ से भाग चली। पर बस चार कूद के बाद ही बिजली ने राजकुमारी को सौ फीट पीछे छोड़ दिया।

खूब तालियॉ पिटीं। लोग ज़ोर ज़ोर से चिल्लाये — "ओ इटली के नौजवान, तुम्हारी जय हो। आखिर तुमको अपना साथी मिल ही गया, ओ पागल लड़की। यह आदमी इसको जरूर दबा कर रखेगा।"

[116] Ballerina – is a type of dance and a special costume is worn while dancing. See its picture above.

अपनी हार देख कर राजकुमारी दुखी हो कर घर चली गयी।

घर पहुँची तो उसका पिता बोला — "इस तरह का मुकाबला रखने का तुम्हारा ही विचार था और अब गुस्सा होने की भी तुम्हारी ही बारी है। जो भी तुमको अच्छा लगे।"

अब हम राजा की बेटी को तो महल में ही छोड़ते हैं और बिजली के पास चलते हैं। दौड़ में जीत कर वह सराय में वापस आ गया और अपने साथियों के साथ जीत की खुशी की दावत खाने बैठ गया।

दावत खाते खाते "खरगोश का कान" बोला — "श श श।" और अपना कान जमीन से लगा दिया जैसा कि वह हमेशा किया करता था।

कुछ सुन कर बोला — "हम लोग बड़ी मुसीबत में हैं। राजकुमारी कह रही है कि वह तुमको किसी भी कीमत पर अपना पति मानने के लिये तैयार नहीं है। वह कहती है कि ऐसी दौड़ का कोई मानी नहीं होता जिसमें उसके होने वाले पति की बजाय कोई और दौड़े।

वह अब किसी जादूगरनी से इस बारे में बात कर रही है कि तुमको कैसे हराया जाये। वह जादूगरनी उसको बता रही है कि वह एक कीमती पत्थर यानी किसी रत्न पर जादू करेगी और उसको एक अँगूठी में लगवा कर वह अँगूठी वह तुमको पहनवा देगी ताकि तुम हार जाओ।

राजकुमारी दौड़ से पहले वह ॲंगूठी तुमको देगी और एक बार तुमने उसको पहन लिया तो तुम उसको अपनी उँगली से निकाल भी नहीं पाओगे और उसकी वजह से तुम्हारी टाँगें भी भागने से मना कर देंगी।"

"अन्धा सीधा" बोला — "अब काम करने की बारी मेरी है। दौड़ शुरू होने से पहले जब तुम ॲंगूठी पहनने के लिये अपना हाथ आगे बढ़ाओगे तब मैं एक तीर ॲंगूठी की तरफ फेंकूँगा इससे वह कीमती पत्थर ॲंगूठी में से निकल कर दूर जा पड़ेगा तब हम देखेंगे कि हमारी राजकुमारी जी क्या करती हैं।"

यह सुन कर सब चिल्लाये — "बहुत बढ़िया, बहुत बढ़िया।" और इस बारे में उन सबकी चिन्ता खत्म हो गयी।

अगली सुबह मैगली वाले नौजवान के पास राजकुमारी का एक सन्देश आया जिसमें उसको उसके दोस्त के दौड़ने की कला पर बधाई दी गयी थी।

इसके साथ ही उसमें यह भी कहा गया था कि अगर उसको कोई ऐतराज न हो तो अगले रविवार को वह फिर से दौड़ में हिस्सा ले। मैगली वाले नौजवान को भला क्या ऐतराज हो सकता था सो उसने अगले रविवार की दौड़ के लिये हाँ कर दी।

अगले रविवार को सड़क पर और भी ज़्यादा भीड़ थी। निश्चित समय पर राजकुमारी अपनी नंगी टाँगों के साथ आयी जैसे कलाबाजी करने वालों की या नट लोगों की होती हैं।

वह बिजली की तरफ बढ़ी और उसको ॲगूठी दी और बोली — "ओ नौजवान, क्योंकि तुम ही एक अकेले ऐसे आदमी हो जिसने दौड़ में मुझे हराया था इसलिये मैं यह अगूठी तुम्हारे दोस्त की दुलहिन के नाते तुमको देती हूॅ।"

यह कह कर उसने वह ॲगूठी बिजली को पहना दी।

ॲगूठी पहनते ही बिजली की टॉगें कॉपने लगीं और वह बैठने लगा। अन्धा सीधा जो उसकी तरफ देख रहा था चिल्लाया "अपना हाथ आगे कर।"

धीरे धीरे बड़ी मुश्किल से उसने अपना हाथ आगे किया और उसी पल दौड़ शुरू होने का बिगुल बजा तो राजकुमारी ने तो भागना शुरू कर दिया।

अन्धे सीधे ने अपनी कमान खींची, तीर चलाया और ॲगूठी बिजली की ॲगली से निकल कर दूर जा गिरी और बिजली फिर से चार कूद में ही राजकुमारी के पास पहुॅच गया। पॉचवीं कूद में उससे आगे निकल गया और राजकुमारी फिर से हार गयी।

पर असली तमाशा तो लोगों में था। लोग बहुत खुश थे। वे अपने अपने टोप हवा में उछाल रहे थे। राजकुमारी की हार देख कर सब बहुत खुश थे। उन्होंने बिजली को ऊपर उठा लिया और सारे शहर में अपने कंधे पर उठाये घूमे।

जब ये पॉचों दुष्ट अकेले थे तो वे एक दूसरे को गले लगा रहे थे। एक दूसरे को शाबाशी दे रहे थे।

मैगली वाले नौजवान ने कहा — "अब हम अमीर हो गये हैं। कल को मैं राजा बन जाऊँगा और मैं चाहूँगा कि हर आदमी मेरे शाही महल के बाहर रहे। बताओ कि तुम लोग क्या बनना चाहते हो?"

एक बोला — "मुझे तो शाही महल का रखवाला[117] बनना है।"

दूसरा बोला — "मुझे मिनिस्टर बनना है।"

तीसरा बोला — "और मैं तो जनरल बनूँगा।"

पर "खरगोश का कान" बोला कि वे लोग थोड़ा चुप हो जायें क्योंकि वह कुछ सुन रहा था।

जमीन पर कान लगा कर सुनने की कोशिश करते हुए वह बोला — "अभी एक सन्देश आने वाला है। वे लोग महल में बात कर रहे हैं कि वे लोग मैगली वाले नौजवान को बहुत सारा पैसा केवल इसलिये देने वाले हैं ताकि वह राजकुमारी से शादी न करे।"

"मजबूत पीठ" बोला — "अब काम करने की मेरी बारी है। मैं उनको उनका सब कुछ देने पर मजबूर कर दूँगा।"

अगली सुबह मैगली वाला नौजवान तैयार हुआ और महल गया। राज सिंहासन के कमरे के बाहर वह एक सलाहकार से मिला और उससे महल में जाने की इजाज़त माँगी।

[117] Translated for the word "Chamberlain". Chamberlain takes care of the palace.

तो वह सलाहकार बोला — "बेटे, क्या तुम अपने से किसी बड़े की सलाह मानना पसन्द करोगे? अगर तुम उस पागल लड़की से शादी करोगे तो तुम एक शैतान को अपने घर ले जाने के अलावा और कुछ नहीं करोगे।

इससे तो अच्छा यह है कि उस पागल लड़की की बजाय तुम उनसे कुछ अच्छा खासा पैसा माँग लो और शान्ति से अपने घर जाओ।"

मैगली वाला नौजवान बोला — "आपकी सलाह के लिये बहुत बहुत धन्यवाद पर मुझे इस तरह पैसा लेना पसन्द नहीं है। पर आप की सलाह के अनुसार फिर भी हम ऐसा करते हैं कि मैं अपने एक दोस्त को आपके पास भेजता हूँ।

आप उसको अपने साथ ले जाइये और उसकी पीठ पर जितना वह उठा सकता है पैसा लाद कर भेज दीजिये।"

सो वह मजबूत पीठ वहाँ आ गया। उसकी पीठ पर सौ सौ पौंड के बोझा उठाने वाले पचास थैले रखे हुए थे।

वह आ कर बोला — "मेरे दोस्त ने मुझे आपके पास इसलिये भेजा है ताकि आप मेरी पीठ पर सामान लाद दें।"

दरबार में बैठा हर आदमी एक दूसरे की तरफ देखने लगा कि कहीं यह आदमी पागल तो नहीं हो गया है।

मजबूत पीठ बोला — "नहीं नहीं मैं पागल नहीं हूँ मैं सच कह रहा हूँ। जल्दी करो मुझे और काम भी हैं।"

सो वे शाही खजाने में घुसे और एक थैला भरना शुरू किया तो बीस आदमी उसको उठाने के लिये लगे। अन्त में जब उन्होंने उसको उठा कर मजबूत पीठ की पीठ पर रखा और पूछा "इतना काफी है?"

वह बोला — "यह क्या तुम मजाक कर रहे हो? मेरे लिये तो यह एक छोटे से तिनके के बराबर है।"

सो वे थैले भरते चले गये और सोने के ढेर के ढेर खाली होते चले गये। फिर उन्होंने चाँदी के ढेर थैलों में भरना शुरू किया तो उनकी चाँदी भी खाली होती चली गयी।

फिर उन्होंने ताँबा लिया तो वह भी खत्म हो गया। इन सबके बाद उन्होंने मोमबत्तियाँ, प्लेटें, प्यालियाँ भर कर उसकी पीठ पर लादे पर उसकी मजबूत पीठ फिर भी नही झुकी।

इसके बाद उन्होंने पूछा — "अब तुमको कैसा लग रहा है?"

मजबूत पीठ कुछ नाराज सा हो कर बोला — "क्या मैं इस बात की शर्त लगा लूँ कि मैं तुम्हारा महल भी उठा कर ले जा सकता हूँ?"

उसके साथियों ने जब उसको आते देखा तो उनको लगा कि उनके सामने तो एक पहाड़ चला आ रहा है, और वह भी अपने आप दो छोटे छोटे पैरों पर। उसको साथ ले कर वे आगे बढ़े।

वे वहाँ से अभी केवल पाँच छह मील ही गये होंगे कि "खरगोश के कान" ने सुना — "दोस्तों, अभी हमारी मुसीबतें खत्म नहीं हुई हैं। महल में लोग सलाह मशवरा कर रहे हैं। क्या तुम लोग सोच सकते हो कि वे लोग क्या कह रहे होंगे?

वे कह रहे हैं — "मैजेस्टी, क्या यह मुमकिन है कि चार बेकार के लोग हमारा सब कुछ ले कर चले जायें? हमारे पास तो अब डबल रोटी खरीदने तक के लिये भी पैसे नहीं है। वे हमारा सब कुछ ले गये हैं।"

राजा बोला — "जल्दी करो, हमको अपने कुछ सिपाही भेजने चाहिये जो उनके टुकड़े टुकड़े कर के उड़ा दें नहीं तो हमको आज शाम का खाना भी नहीं मिलेगा।"

मैगली वाला नौजवान बोला — "अगर ऐसा है तो हमारा काम तो खत्म हो गया। हमने सब मुश्किलें पार कर लीं पर अब हम क्या करें?"

पफ़ैला बोला — "तुम बेवकूफ हो। तुम मुझको तो भूल ही गये कि मैं तो तूफान भी ला सकता हूँ और उस तूफान से हर एक को नीचे गिरा सकता हूँ। तुम लोग चलो और फिर देखो कि मैं क्या कर सकता हूँ।"

उधर राजा ने अपने सिपाही भेजे तो उनके घोड़ों की टापों की आवाजें सुनायी पड़ने लगीं। जैसे ही वे पास आ गये पफ़ैला ने

अपनी सॉस छोड़ना शुरू किया – फ़ फ़ फ़। फिर और तेज फ़ फ़ फ़। इससे धूल के बादल उठे और उसकी वजह से उन सिपाहियों को दिखायी देना बन्द हो गया।

और फिर उसने अपनी पूरी ताकत से अपनी सॉस फेंक दी – फ़ फ़ फ़ फ़ फ़। इससे सारे सिपाही अपने अपने घोड़ों से गिर पड़े, पेड़ जड़ से उखड़ कर गिर पड़े, दीवारें गिर पड़ीं और उन सिपाहियों की बन्दूकें हवा में उड़ गयीं।

जब पफ़ैरेला को निश्चय हो गया कि उसने राजा के सारे सिपाहियों को तहस नहस कर दिया तो वह अपने साथियों के साथ जा कर मिल गया और बोला — "फ्रांस के राजा को इस सबकी उम्मीद नहीं होगी। अब वह इन सब घटनाओं को ज़िन्दगी भर याद रखेगा और अपने बेटों को बतायेगा।"

फिर वे सब मैगली वाले नौजवान के पास आये। सारे पैसों को आपस में बॉटा। सबको चार चार मिलियन डकैट मिले।

इसके बाद जब भी वे एक साथ होते वे हमेशा कहते फ्रांस के राजा को क्या नीचा दिखाया और उसकी पागल लड़की को भी।
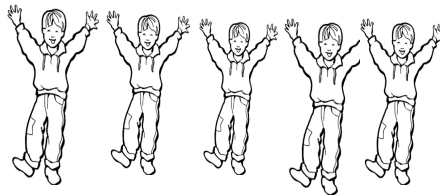
21 बिल्लियों की कहानी[118]

एक स्त्री के दो बेटियाँ थीं – एक तो उसकी अपनी बेटी थी और दूसरी उसकी सौतेली बेटी थी। वह अपनी बेटी को तो बहुत प्यार करती थी पर अपनी सौतेली बेटी को नौकर की तरह से रखती थी।

एक दिन उसने अपनी सौतेली बेटी को चिकोरी[119] इकट्ठी करने के लिये जंगल भेजा पर काफी ढूँढने के बाद भी उसको चिकोरी तो मिली नहीं उसको एक बहुत बड़ा गोभी का फूल दिखायी दे गया। उसने उस गोभी के फूल को उखाड़ने की कोशिश की पर वह उसको काफी कोशिशों के बाद ही उखाड़ पायी।

उस फूल को उखाड़ने से वहाँ एक बहुत बड़ा गड्ढा बन गया – एक कुँए जितना बड़ा। उस कुँए में नीचे जाने के लिये एक सीढ़ी बनी हुई थी। वह लड़की यह जानने के लिये बहुत उत्सुक थी कि उस कुँए में क्या था सो वह उस सीढ़ी के सहारे सहारे उस कुँए में नीचे उतर गयी।

नीचे जा कर उसको एक घर मिला जो बिल्लियों से भरा हुआ था। सारी बिल्लियाँ अपने अपने कामों में लगी हुई थीं। कोई घर की सफाई कर रही थी, तो कोई कुँए से पानी खींच रही थी, तो

---

h[118] The Tale of the Cats. Tale No 129. A folktale from Italy from its Terra d'Otranto area.

[119] Chicory is a cultivated salad plant with blue flowers and with a good size root which is roasted and powdered for a substitute or additive to coffee. It looks like large thick radish. See its picture above.

कोई सिलाई कर रही थी। कोई कपड़े धो रही थी तो कोई डबल रोटी बना रही थी।

लड़की ने एक बिल्ली के हाथ से झाड़ू ले ली और उसकी घर की सफाई में मदद करने लगी। फिर एक दूसरी बिल्ली से उसने मैली चादरें ले लीं और उसकी उनको धोने में मदद करने लगी। फिर उसने उनकी पानी खींचने में मदद की और एक बिल्ली को डबल रोटी ओवन में रखने में मदद की।

दोपहर को एक बड़ी बिल्ली आयी जो उन सब बिल्लियों की माँ थी। आ कर उसने घंटी बजायी "डिंग डौंग, डिंग डौंग" और बोली — "जिस जिसने काम किया है वह यहाँ आ कर खाना खा ले। और जिसने भी काम नहीं किया है वह आये और हमको खाना खाते देखे।"

बिल्लियाँ बोलीं — "माँ, हममें से हर एक ने काम किया है पर इस लड़की ने हम सबसे ज़्यादा काम किया है।"

बड़ी बिल्ली बोली — "तुम बहुत अच्छी लड़की हो। आओ और हमारे साथ आ कर खाना खाओ।" सो वे दोनों एक मेज पर बैठ गयीं।

माँ बिल्ली ने उसको थोड़ा सा माँस दिया, मैकेरोनी[120] दी और भुना हुआ मुर्गा दिया पर उसने अपने बच्चों को केवल बीन्स ही दीं।

[120] A kind of Italian food preparation. See its picture above.

इससे वह लड़की कुछ नाखुश हो गयी क्योंकि यह अच्छा खाना केवल वही अकेले खा रही थी और बाकी सब बिल्लियाँ तो केवल बीन्स ही खा रही थीं। उसको वे भूखी भी लगीं सो उसने अपने खाने में से हर चीज़ उनको दी।

जब वे सब खाना खा कर उठे तो लड़की ने मेज साफ की, बिल्लियों की भी प्लेटें साफ कीं, कमरा बुहारा और सारा सामान जहाँ रखा जाना चाहिये था वहीं रख दिया।

फिर उसने माँ बिल्ली से कहा — "माँ बिल्ली, अब मुझे अपने घर जाना चाहिये नहीं तो मेरी माँ मुझे डाँटेगी।"

माँ बिल्ली बोली — "बेटी एक मिनट। ज़रा रुको। मैं तुमको कुछ देना चाहती हूँ।"

उनके घर के नीचे की तरफ एक बहुत बड़ा भंडारघर था जिसमें बहुत सारी चीज़ें रखी थीं – सिल्क का सामान, पोशाकें, स्कर्ट, ब्लाउज़, ऐप्रन, सूती रूमाल, गाय की खाल के जूते आदि आदि।

माँ बिल्ली उस लड़की को नीचे ले गयी और बोली — "तुमको इसमें से जो चाहिये वह ले लो।"

उस गरीब लड़की ने जो नंगे पैर थी और फटे कपड़ों में थी बोली — "बस मुझे एक ड्रैस दे दो, एक गाय की खाल का जूता दे दो और एक स्कार्फ। बस केवल इतना ही।"

माँ बिल्ली बोली — "नहीं केवल इतना ही नहीं तुमने मेरी बच्चियों की बहुत सहायता की है इसलिये मैं तुमको एक बहुत ही अच्छी भेंट दूँगी।"

कह कर उसने वहाँ से सबसे अच्छा सिल्क का एक गाउन उठाया, एक बड़ा और बहुत सुन्दर रूमाल और एक जोड़ी स्लिपर उठाये और उन सबको उस लड़की को पहना कर बोली — "अब जब तुम बाहर जाओगी तो तुमको दीवार में छोटे छोटे छेद दिखायी देंगे। तुम उनमें अपनी उँगली डालना और उसके बाद ऊपर देखना और फिर देखना कि क्या होता है।" और उसको विदा किया।

जब वह लड़की बाहर गयी तो उसको दीवार में छेद दिखायी दिये। माँ बिल्ली के कहे अनुसार उसने उनमें अपनी उँगलियाँ डालीं तो उसकी उँगलियों में बहुत सुन्दर सुन्दर अँगूठियाँ आ गयीं।

फिर उसने ऊपर देखा तो एक तारा उसकी भौंह पर आ गिरा। इस तरह वह एक दुलहिन की तरह सजी धजी घर पहुँची।

उसकी सौतेली माँ ने पूछा — "तुझको ये इतनी अच्छी अच्छी चीज़ें कहाँ से मिलीं?"

वह लड़की सीधे स्वभाव बोली — "माँ मुझको कुछ छोटी छोटी बिल्लियाँ मिल गयी थीं। मैंने उनका काम करने में थोड़ी सी मदद कर दी तो उन्होंने मुझे ये थोड़ी सी भेंटें दे दीं।" और उसने उनको अपनी सारी कहानी सुना दी।

यह सुन कर उसकी सौतेली मॉ तो बस उस जगह अपनी आलसी बेटी को भेजने का इन्तजार करने लगी। अगले दिन उसने अपनी बेटी से कहा — "बेटी जा तू भी जा ताकि तू भी अपनी बहिन की तरह से अमीर हो कर आ सके।"

वह बोली — "मुझे नहीं चाहिये यह सब। मैं कहीं नहीं जाती।" क्योंकि उसको तो बड़े आदमियों से बात करने की भी तमीज नहीं थी।

वह फिर बोली — "और हॉ मुझे तो अभी कहीं जाना भी नहीं है। बाहर बहुत ठंडा है। मैं तो यहीं आग के पास बैठती हूॅ।"

पर उसकी मॉ ने एक डंडी उठायी और उससे उसको हड़काते हुए घर के बाहर निकाल दिया। सो अब तो उस बेचारी को वहॉ से उन बिल्लियों के घर जाना ही पड़ा। बड़ी मुश्किल से तो उसको वह बड़ा गोभी का फूल मिला और फिर बड़ी मुश्किल से उससे वह उखड़ा।

फूल उखाड़ कर वह भी उस कुॅए में बनी सीढ़ियों से उतर कर नीचे बिल्लियों के घर में पहुॅची।

जब उसने पहली बिल्ली को देखा तो हॅसी हॅसी में उसने उसकी पूॅछ अपनी टॉगों के बीच में दबा ली। फिर दूसरी को देखा तो उसके कान खींच लिये और तीसरी की मूॅछें खींच लीं।

जो बिल्ली सिलाई कर रही थी उसने उसकी सुई में से धागा निकाल दिया। जो बिल्ली पानी खींच रही थी उसकी उसने बालटी का पानी पलट दिया।

इस तरह उसने उन सब बिल्लियों के सारे काम रोक दिये जो वे उस समय कर रही थीं। वे बेचारी कुछ भी नहीं कर सकीं।

दोपहर को जब माँ बिल्ली आयी तो उसने रोज की तरह घंटी बजायी "डिंग डौंग, डिंग डौंग।" और आ कर रोज की तरह से बोली "जिस किसी ने भी काम किया है वह यहाँ आये और खाना खा ले और जिसने भी काम नहीं किया है वह हमको केवल खाना खाते देखता रहे।"

बिल्लियाँ बोलीं — "माँ, हम लोग तो काम करना चाहते थे पर इस लड़की ने हमको हमारी पूँछ पकड़ कर खींच लिया, हमारे सारे काम रोक दिये और हमारी ज़िन्दगी दूभर कर दी इसलिये हम कुछ भी नहीं कर सके।"

माँ बिल्ली बोली — "ठीक है, आओ मेज पर बैठो और खाना खाओ।"

माँ बिल्ली ने उस लड़की को सिरके में डूबी हुई जौ की केक खाने के लिये दी और अपनी बच्चियों को मैकेरोनी और माँस खाने के लिये दिया। जितनी देर तक वे सब खाना खाते रहे वह लड़की बिल्लियों का ही खाना खाती रही।

जब उनका खाना खत्म हो गया तो उस लड़की ने कुछ नहीं किया – न तो उसने मेज साफ की, न ही उसने प्लेटें साफ कीं और न ही उसने वहॉ का सब सामान वहॉ से उठा कर उनकी जगह रखा।

वह बोली — "मॉ बिल्ली, मुझे वह सब सामान दो जो तुमने मेरी बहिन को दिया था।"

मॉ बिल्ली उसको नीचे बने अपने भंडारघर में ले गयी और उससे वहॉ रखे सामान को दिखा कर पूछा कि उसमें से उसको क्या चाहिये।

उस सब सामान को देख कर तो उस लड़की की आखें चकाचौंध गयीं। वह लड़की बोली — "वह वाली पोशाक जो सबसे अच्छी है और वह वाले जूते जिनकी एड़ी सबसे ऊॅची है। वह मुझे दे दो।"

मॉ बिल्ली बोली — "ठीक है। तुम अपने कपड़े उतारो और यह तेल लगी ऊनी पोशाक पहन लो और ये जूते जिनकी एड़ी सारी खत्म हो चुकी है इनको पहन लो।"

उसको ये कपड़े पहना कर और उसके बालों में एक फटा स्कार्फ बॉध कर उस मॉ बिल्ली ने उसको वहॉ से भेज दिया और बोली — "अब तुम जाओ और जब तुम बाहर जाओ तो तुमको दीवार में छोटे छोटे छेद दिखायी देंगे। तुम उनमें अपनी उॅगलियॉ डालना और फिर ऊपर देखना और फिर देखना कि क्या होता है।"

यह सब पहन कर वह लड़की वहाँ से चली गयी। बाहर जा कर उसने दीवार में कुछ छेद देखे तो उनमें अपनी उँगलियाँ डाल दीं। उसकी उँगलियों में बहुत सारे कीड़े लिपट गये। उसने अपनी उँगलियों को उन छेदों में से जितना खींचने की कोशिश की उतनी ही वे उसमें जकड़ी रह गयीं।

फिर उसने ऊपर देखा तो एक खून से भरा सौसेज उसके मुँह पर गिर पड़ा और वहाँ से वह नीचे गिरा भी नहीं इसलिये उसे उसको बराबर खाते रहना पड़ा।

जब वह इस पोशाक में घर पहुँची तो वह एक चुड़ैल से भी बुरी शक्ल में थी। उसकी माँ तो उसको इस शक्ल में देख कर इतना गुस्सा और परेशान हुई कि वह तो वहीं की वहीं मर गयी। और वह लड़की भी वह खून भरा सौसेज खा कर कुछ दिनों बाद ही मर गयी।

इस तरह दूसरों से अच्छे व्यवहार और बुरे व्यवहार का नतीजा ऐसा ही होता है।

22 चिक[121]

एक बार एक पति पत्नी थे जिनके सात बच्चे थे। पिता किसान था और खेती करता था जबकि पत्नी घर में रहती थी और घर और बच्चों की देखभाल करती थी।

एक बार बहुत ज़ोर का अकाल पड़ा तो सब लोग भूख से मरने लगे। रात को बच्चे तो सो जाते पर वे पति पत्नी बेचारे चिन्ता के मारे सो नहीं पाते। पति कहता — "प्रिये, अब तो ज़िन्दगी दूभर हो गयी है। अपने बच्चों को भूखा रहते देख कर मेरा तो दिल रोता है।"

उसकी पत्नी जवाब देती — "यह तो तुम ठीक कह रहे हो पर करें क्या?"

एक दिन पति बोला — "कल जब मैं लकड़ी काटने जंगल जाऊँगा तो मैं उनको अपने साथ ले जाऊँगा और उनको वहीं छोड़ आऊँगा। उनको तिल तिल कर के मरते देखने की बजाय तो अच्छा है कि मैं उन सबको एक साथ ही खो दूँ।"

"श श श श। थोड़ा धीरे बोलो कहीं वे हमारी बात न सुन लें।"

[121] Chick. Tale No 130. A folktale from Italy from its Terra d'Otranto area.

“ओह तुम उनकी चिन्ता न करो वे तो बहुत गहरी नींद सोये हुए हैं।”

पर उनमें से उनका सबसे छोटा बेटा जो कुबड़ा था और जिसको वे सब चिक कह कर पुकारते थे वह यह सब कुछ सुन रहा था।

सुबह को जब वे सब सो कर उठे तो उनकी माँ ने उनको बुलाया और उनको तैयार कर के आँखों में आँसू भर कर प्यार कर के बोली — “अच्छा बच्चो जाओ। आज तुम लोग अपने पिता के साथ काम पर जा रहे हो।” और वे सब अपने पिता के साथ चल दिये।

रास्ते में चिक ने बहुत सारे सफेद पत्थर उठा लिये और उनको अपनी जेब में रख लिया।

जब वे सड़क छोड़ कर जंगल में घुसे तो अपने पिता की बात को ध्यान में रखते हुए चिक ने हर कदम पर एक एक पत्थर नीचे डालना शुरू कर दिया ताकि उसको घर वापस आने का रास्ता याद रह सके कि वे लोग किस रास्ते से जंगल आये थे।

जब वे बीच जंगल में पहुँच गये तो उनके पिता ने बच्चों से कहा कि वे वहीं खेलें और वह अभी आता है। पर वहाँ से जाने के बाद वह जंगल नहीं लौटा।

रात हो आयी। जब बच्चों ने अपने पिता को नहीं देखा तो वे रोने और चिल्लाने लगे।

चिक ने उनको ढाँढस बँधाया — "तुम लोग रोते क्यों हो? मैं तुम लोगों को घर ले जाऊँगा तुम बिल्कुल चिन्ता मत करो।"

"अच्छा अच्छा। पर अब हम क्या करें?"

वह बोला — "अभी तुम लोग ऐसा करो कि तुम लोग मेरे साथ चलो। मैं तुमको घर ले चलता हूँ।" ऐसा कह कर उसने अपने गिराये हुए पत्थरों को ढूँढा और उनके पीछे पीछे चलते हुए वे सब अपने घर आ गये।

उनकी माँ उनको देख कर बहुत खुश हुई पर आश्चर्य से बोली — "पर तुम लोग घर वापस आये कैसे?"

सब बड़े बच्चों ने कहा — "चिक ने हम सबको रास्ता दिखाया माँ और हम घर आ गये।"

वे बच्चे कुछ दिनों के लिये घर में रहे पर जल्दी ही फिर उनके पिता ने उनको जंगल में छोड़ने का विचार किया क्योंकि अकाल के खत्म होने के तो अभी कुछ आसार ही नजर नहीं आ रहे थे।

उनकी माँ ने सात रोटियाँ खरीदने के लिये घर की हर चीज़ बेच दी थी। अगले दिन उनकी माँ ने उन सब बच्चों को एक एक रोटी दी और उनके पिता के साथ जंगल भेज दिया।

सब बच्चों ने तो अपनी रोटी खा ली पर चिक ने नहीं खायी। उसने उसके छोटे छोटे टुकड़े किये और अपनी जेब में रख लिये।

इस बार उनका पिता चिक के पीछे पीछे चल रहा था। वह यह देखता चल रहा था कि अबकी बार तो चिक कहीं सफेद पत्थर नहीं फेंक रहा।

अबकी बार चिक ने पत्थर तो नहीं फेंके पर अबकी बार उसने अपनी जेब में अपनी रोटी के जो टुकड़े कर के रख लिये थे जब वह जंगल में घुसे तो वह कदम कदम पर उनको फेंकता जा रहा था।

जब वे सब जंगल में पहुँचे तो फिर पिछली बार की तरह से इस बार भी उनका पिता उन सबको जंगल में अकेला छोड़ कर चला गया और फिर वापस नहीं आया।

अँधेरा होने पर भी जब पिता नहीं आया तो सारे बच्चे रोने और चिल्लाने लगे। पर चिक ने एक बार फिर उन सबको ढाँढस बँधाया और कहा कि वह उनको उस दिन की तरह से फिर घर वापस ले जायेगा।

कह कर उसने अपनी फेंकी हुई रोटी के टुकड़ों को ढूँढना शुरू किया तो वे तो उसको कहीं दिखायी ही नहीं दिये। लगता था कि उनको या तो चिड़ियाँ खा गयी थीं या फिर चींटियाँ ले गयी थीं।

और चिक घर का रास्ता न ढूँढ सका। उसके भाई फिर रो पड़े। अचानक वह बोला — "ज़रा ठहरो।" कह कर वह एक गिलहरी की तरह एक ऊँचे पेड़ की सबसे ऊँची वाली टहनी पर चढ़ गया और चारों तरफ देखने लगा।

कहीं दूर उसको एक छोटी सी रोशनी दिखायी दी। उसको देख कर वह बोला — "हमको इस दिशा में जाना चाहिये लगता है वहाँ कोई रहता है।"

सो वे सब उसी दिशा में चल दिये। काफी देर तक चलने के बाद वे एक घर के सामने आ गये। वहाँ आ कर उन्होंने उस घर का दरवाजा खटखटाया।

एक जादूगरनी ने दरवाजा खोला। उसके बाल बहुत लम्बे थे। दाँत बहुत टेढ़े थे और आँखें लालटेन की तरह जल रही थीं। इस सबसे वह अपने असली रूप से कुछ ज़रा ज़्यादा ही जादूगरनी लग रही थी।

उन बच्चों को देखते ही वह बोली — "अरे मेरे बच्चों इतनी रात में तुम कहाँ मारे मारे फिर रहे हो?"

चिक बोला — "मैम, हम लोग जंगल में रास्ता भूल गये हैं। हमने आपके घर में रोशनी जलती देखी तो इधर आ गये।"

वह जादूगरनी बोली — "यह तो तुमने बहुत ही अच्छा किया कि तुम यहाँ आ गये पर मेरे बच्चो, तुमको मुझे कहीं छिपाना पड़ेगा क्योंकि यहाँ एक पापा जादूगर रहता है जैसे ही वह पापा जादूगर यहाँ आयेगा वह तुमको एक ही कौर में खा जायेगा। पर तुम चिन्ता न करो मैंने उसके लिये एक भेड़ भून कर रखी है।

अगर तुम बिल्कुल आवाज न करो तो मैं तुमको अपने बच्चों के साथ उनके बिस्तर में लिटा दूँगी फिर तुम लोग सुरक्षित रहोगे। मेरे अपने भी सात बच्चे हैं।"

बच्चे राजी हो गये।

कुछ देर में ही पापा जादूगर घर आया तो वह चारों तरफ सूँघ कर बोला — "हूँ, मुझे तो आज आदमी के माँस की खुशबू आ रही है।"

उसकी पत्नी बोली — "तुम जब भी घर आते हो यही कहते हो। आओ बैठो, देखो मैंने तुम्हारे लिये कितना स्वादिष्ट भेड़ का माँस भून कर रखा है।

तुम अपना काम देखो और उन बेचारों को छोड़ दो। वे सात छोटे छोटे भाई बेचारे जंगल में रास्ता भूल कर यहाँ आ गये हैं।

हमारे भी तो सात बच्चे हैं। हम भी तो अपने बच्चों को किसी तरह दुखी नहीं देख सकते इसी लिये मैंने उनको भी अन्दर बुला लिया क्योंकि वे बहुत दुखी थे।"

पापा जादूगर ने कहा — "ठीक है तुम मुझे भेड़ का माँस ही दे दो। मैं बहुत थक गया हूँ और जल्दी सोने जाना चाहता हूँ।"

जब पापा जादूगर के बच्चे सोने के लिये जाते थे तो वे अपने सिरों पर फूलों के मुकुट पहन कर जाते थे। वे एक बड़े बिस्तर पर सोते थे। उन्हीं के पैरों की तरफ जादूगरनी ने चिक और उसके भाइयों को सुला दिया था।

जैसे ही जादूगरनी कमरे से बाहर गयी चिक ने सोचा कि जादूगरनी के बच्चों ने फूलों के मुकुट क्यों पहन रखे हैं। इसके पीछे कोई राज़ तो जरूर था।

उसने पापा जादूगर के सातों बच्चों के फूलों के मुकुट उतार कर अपने और अपने भाइयों के सिर पर रख दिये।

जैसे ही उसने यह काम खत्म किया कि उसने देखा कि पापा जादूगर दबे पॉव उस कमरे में चला आ रहा था। कमरे में क्योंकि ॲधेरा था इसलिये उसने आ कर बच्चों को हाथ से छू छू कर देखना शुरू किया।

पहले उसने अपने बच्चों को छुआ। कुछ महसूस किया और फिर उसने चिक और उसके भाइयों को सिर पर छुआ। तो वहॉ उसने उनके सिर पर फूलों का मुकुट पाया तो उसने उनको छोड़ दिया।

उसने फिर से अपने बच्चों को छुआ तो उनके सिर पर फूलों का मुकुट नहीं पाया सो वह उनको एक एक कर के खा गया।

यह सब देख कर चिक तो पत्ते की तरह कॉप गया। पापा जादूगर ने जब अपना आखिरी बेटा खा लिया तो उसको खा कर अपने होठ चाटे और बोला — "अब तो मैंने सब बच्चों को खा लिया है। अब मेरी पत्नी जो चाहे कह सकती है।" और यह कह कर वह वहॉ से चला गया।

चिक ने अपने भाइयों को तुरन्त उठाया और बोला —"हमको यहाँ से बाहर निकलना है तुरन्त।"

वे सब तुरन्त ही उठ गये। उठ कर उन्होंने खिड़की खोली और सब बच्चे उसमें से बाहर कूद गये। जंगल में भागते भागते वे एक गुफा के पास आ गये थे। वे सब भागते भागते थक गये थे सो वे वहीं उस गुफा में छिप गये।

अगली सुबह जब जादूगरनी उठी तो उसको न तो अपने बच्चे दिखायी दिये और न ही आये हुए सातों भाई दिखायी दिये। पर बिस्तर पर पड़े हुए निशानों से वह जान गयी कि क्या हुआ होगा।

वह अपने बाल खींचती हुई और रोती हुई जादूगर की तरफ भागी — "ओ कातिल, ओ राक्षस, ज़रा आ कर तो देखो तुमने क्या किया?"

जब जादूगर की पत्नी ने जादूगर को यह बताया कि उसने क्या किया तो यह सुन कर तो जादूगर चौंक कर दौड़ा — "क्या? क्या हमारे बच्चे फूलों के मुकुट नहीं पहने हुए थे? ऐसा कैसे हुआ? तुम जल्दी से मेरे वे जादू वाले जूते दो जो सौ मील घंटे की रफ्तार से भागते हैं। मैं उन बदमाशों को जा कर अभी पकड़ता हूँ। मैं उनको कच्चा ही चबा जाऊँगा।"

कह कर उसने अपने वे तेज़ भागने वाले जूते पहने और उन बच्चों को ढूँढने के लिये चल दिया।

उसने सारी धरती छान मारी पर उसको बच्चे नहीं मिले क्योंकि वे तो गुफा में छिपे हुए थे। ढूँढते ढूँढते आखिर वह थक कर जमीन पर बैठ गया। इत्तफाक से वह उसी गुफा के पास आ बैठा था जहाँ बच्चे छिपे हुए थे।

चिक ने जो हमेशा खाना ढूँढने में लगा रहता था उसको वहीं लेटे हुए देख लिया तो अपने भाइयों को बुलाया और उनसे कहा — "देखो यह राक्षस यहाँ लेटा हुआ है जल्दी से तुम सब लोग मिल कर इसको मार दो।"

सो सबने अपनी अपनी रोटी काटने वाले चाकू निकाले और उससे उसको मारना शुरू कर दिया और तब तक मारते रहे जब तक कि उसका सारा शरीर छलनी नहीं हो गया।

जब उनको यह यकीन हो गया कि वह मर गया है तो उन्होंने उसके जूते निकाल लिये और वे सब उन जूतों में चढ़ गये। जूते जादू के थे सो सब बच्चे उनके अन्दर आ गये। वे जूते उन सबको ले कर भाग चले।

तुरन्त ही वे सातों भाई जादूगरनी के पास पहुँचे और उससे कहा — "पापा जादूगर डाकुओं के चंगुल में फँस गये हैं। उन्होंने हमसे कहलवाया है कि अगर आपने उन डाकुओं को पापा जादूगर का सारा पैसा नहीं दिया तो वे पापा जादूगर को मार देंगे।

आपको इसका विश्वास आ जाये इसी लिये उन्होंने हमको अपने ये जूते दे दिये हैं।"

जादूगरनी ने अपने बच्चे तो पहले ही खो दिये थे अब वह अपना पति को खोना नहीं चाहती थी सो यह सुन कर उसने तुरन्त ही उस जादूगर का सारा पैसा, हीरे, सोना उन बच्चों को दे दिया और बोली — "यह लो बेटा उसका सारा पैसा और जा कर उसको छुड़ा लो।"

बच्चों ने वह सारा पैसा उठाया और वे जूते पहन कर एक कदम में ही अपने घर पहुँच गये। इस पैसे को पा कर वे अब बहुत अमीर हो गये थे।

चिक उन जादू वाले जूतों को पहन कर नैपिल्स[122] गया और सामान लाने ले जाने वाला बन गया क्योंकि उन दिनों रेलगाड़ियाँ और स्टीम बोट नहीं हुआ करती थीं।

इस तरह से उस छोटे से कुबड़े बेटे ने अपनी अक्लमन्दी और अपनी हिम्मत से अपने सारे परिवार को अमीर बना दिया।

[122] Naples is a seashore town and port of Italy on its South-West coast.

List of Stories of “Folktales of Italy-1”

1. Dauntless Little John
2. The Ship With Three Decks
3. The Man Who Came Out Only at Night
4. And Seven
5. Body Without Soul
6. Money Can Do Everything
7. The Little Shepherd
8. The Little Girl Sold With the Pears
9. The Snake
10. Three Castles
11. The Prince Who Married a Frog
12. The Parrot
13. Twelve Bulls
14. Crack and Crook
15. The Canary Prince
16. King Krin
17. Those Stubborn Souls
18. The Pot of Marjoram
19. The Billiard's Player
20. Animal Speech

List of Stories of “Folktales of Italy-2”

1. The Three Cottages
2. The Peasant Astrologer
3. The Wolf and the Three Girls
4. The Land Where One Never Dies
5. The Devotee of St Joseph
6. Three Crones
7. The Crab Prince
8. Silent For Seven Years
9. Pome and Peel
10. Cloven Youth
11. The Happy Man's Shirt
12. One Night in Paradise
13. Jesus and Saint Peterin Friuli
14. The Magic Ring
15. The King's Daughter Who Could Never Get Figs
16. The Three Dogs
17. Uncle Wolf

List of Stories of “Folktales of Italy-3”

List of Stories of “Folktales of Italy-4”

List of Stories of "Folktales of Italy-5"

1. The Princesses Wed to the First Passer By
2. The Thirteen Bandits
3. Three Orphans
4. Sleeping Beauty and Her Children
5. Three Chicory Gatherers
6. Beauty With the Seven Dresses
7. Serpent King
8. The Crab With the Golden Eggs
9. Nick Fish
10. Misfortune
11. Pippina Serpent
12. Catherine the Wise
13. Ismailian merchant
14. The Dove
15. Dealer in Peas and Beans
16. The Sultan With the Itch

List of Stories of "Folktales of Italy-6"

1. The Wife Who Lived on Wind
2. Wormwood
3. The King of Spain and the Engkish Milird
4. The Bejeweled Boot
5. Lame Devil
6. Three Tales by Three Sons of Three Merchants
7. The Dove Girl
8. Jesus and St Peter in Sicily
9. The Barber's Timepiece
10. The Marriage of a Queen and a Bandit
11. The Seven Lamb Heads
12. The Two Sea Merchants
13. A Boat Loded With…
14. The King's Son in Henhouse
15. The Mincing Princess
16. Animal Talk and the Nosy Wife
17. The Calf With the Golden Horns
18. The Captain and The General

List of Stories of “Folktales of Italy-7”

1. The Peacock Feather
2. The Garden Witch
3. The Mouse With the Long Tail
4. The Two Cousins
5. The Two Muleteers
6. Giovannuza Fox
7. The Child Who Fed the Crucifix
8. Steward Truth
9. The Foppish King
10. The Princess With Horns
11. Giufa
12. Fra Ignazio
13. Solomon's Advice
14. The Man Who Robbed the Robbers
15. The Lion's Grass
16. The Convent of Nuns and the Monastery of Monks
17. St Anthony's Gift
18. March and the Shepherd
19. John Balento
20. Jump into My Sack

Some Other Books of Italian Folktales in Hindi

1353 **Il Decamerone.** By Giovanni Boccaccio. 3 vols
1550 **Nights of Straparola** By Giovanni Francesco Straparola. 2 vols.
1634 **Il Pentamerone.** By Giambattista Basile. 50 tales. 3 vols
1885 **Italian Popular Tales.** By Thomas Frederick Crane. 109 tales. 4 vols

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस कड़ी में 100 से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तक सूची की पूरी जानकारी के लिये लिखें — hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् 1943 में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। 1976 में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में 10 वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में 3 साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में 1 साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से 1993 में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर 4 साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक 2500 से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022